@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/qaumipatrika

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
मंगलवार, 27 मई 2025

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 196 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

दिल्ली से एनआईए ने सीआरपीएफ के जवान को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली, 26 मई। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने के एक एएसआई को जासूसी के आरोप में दिल्ली से गिरफ्तार किया है। आरोपी को पटियाला हाउस कोर्ट में पेश किया गया, जहां उसे 6 जून तक हिरासत में भेज दिया गया। केंद्रीय अर्धसैनिक बल ने इस मामले में अपने एएसआई मोतीराम जाट को बर्खास्त कर दिया है। सीआरपीएफ नियमों के साथ भारत के संविधान के प्रासंगिक प्रावधानों के तहत आरोपी को 21 मई से बर्खास्त किया गया है। सीआरपीएफ के मुताबिक, प्रोटोकॉल के उल्लंघन के बाद सीआरपीएफ कर्मी को बर्खास्त किया गया है। यह मामला एनआईए को भेजा गया था। केंद्रीय एजेंसियों के साथ समन्वय में सीआरपीएफ कर्मियों की सोशल मीडिया गतिविधियों की निरंतर निगरानी के दौरान, एएसआई/जीडी रैंक के एक कर्मी से जुड़े स्थापित मानदंडों और प्रोटोकॉल के उल्लंघन का मामला सामने आया था। इस मामले की प्रारंभिक जांच पड़ताल की गई। सीआरपीएफ ने इस मामले को गंभीर माना और आगे की जांच के लिए इसे राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) को भेज दिया। साथ ही, आरोपी को सीआरपीएफ नियमों के तहत सेवा से बर्खास्त कर दिया है। बता दें कि सीआरपीएफ के सहायक उप-निरीक्षक मोतीराम जाट पर आरोप लगा है कि वह पाकिस्तान को खुफिया जानकारी मुहैया कराता था। राष्ट्रीय जांच एजेंसी द्वारा आरोपी से पूछताछ की जा रही है। पटियाला हाउस कोर्ट ने उसे 6 जून तक हिरासत में भेज दिया है। ऐसे आरोप हैं कि मोतीराम जाट दो तीन वर्षों से पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी से जुड़े लोगों के संपर्क में था। आरोप है कि उसने कई तरह की संवेदनशील जानकारी, पाकिस्तानी अधिकारियों तक पहुंचाई है। एनआईए द्वारा अब पता लगाया जा रहा है कि आरोपी एएसआई, पाकिस्तान में किन लोगों के संपर्क में था। उसने किस तरह की जानकारी वहां तक पहुंचाई है। इसके बदले में उसे क्या मिला है। साथ ही देश में और ऐसे कितने लोग हैं, जिनके साथ मिलकर सीआरपीएफ का एएसआई, पाकिस्तान को सूचना पहुंचा रहा था।

पीएम मोदी ने भुज को दी 53 हजार करोड़ की सौगात

कौमी पत्रिका
सिम्मी कौर बब्बर

दाहोद, 26 मई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भुज में आयोजित विभिन्न विकास परियोजनाओं के शिलान्यास और लोकार्पण कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस दौरान पीएम मोदी ने 53,400 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन किया। बिजली क्षेत्र की परियोजनाओं में खावड़ा अक्षय ऊर्जा पार्क में उत्पादित अक्षय ऊर्जा की निकासी के लिए ट्रांसमिशन परियोजनाएं, ट्रांसमिशन नेटवर्क विस्तार और तापी में एक अल्ट्रा-सुपरक्रिटिकल थर्मल पावर प्लांट इकाई शामिल हैं। इनमें कांडला बंदरगाह और गुजरात सरकार की कई सड़क, जल और सौर परियोजनाएं भी शामिल हैं। कच्छ की इस पावन धरा पर से मैं सभी को प्रणाम करता हूं। मेरा और कच्छ का पुराना नाता है। आप लोगों को प्यार इतना है कि मैं खुद को कच्छ आने से रोक नहीं पाता। मैं राजनीति से पहले भी कच्छ की धरती पर आता था और यहां के चप्पे-चप्पे से वाकिफ हूं। कच्छ के लोग और उनका आत्मविश्वास मेरे जीवन का दिशा देते हैं। नई पीढ़ी को पता नहीं होगा, पुराने समय में हालात कुछ और थे। मैं जब सीएम था लोग गिनते थे कि मैं कितनी बार यहां आया। लोग कहते थे कि मोदी जी ने सेंचुरी लगा दी है। आम लोगों से कार्यकर्ताओं के घर और कार्यालयों में जाना मेरे लिए आम बात थी। यहां पानी नहीं था, लेकिन यहां के किसान पानीदार थे। और कच्छ ने दिखा दिया है उम्मीद और अवसर से आपत्तियों को पलटा जा सकता है। जब भूकंप आया तो कच्छ मौत की चादर ओढ़कर सोया था। लेकिन मैंने विश्वास नहीं खोया। मुझे विश्वास था मेरा कच्छ इस संकट को परास्त करेगा और भूकंप को कंपा करके विकास की राह पर आएगा। मैं सभी कच्छवासियों को इन सभी विकास कार्यों के लिए ढेर सारी बधाई देता हूं। इस दौरान पीएम मोदी ने कहा- हम अपनी जरूरत और दुनिया की जरूरत के लिए भारत में ही जहाज बनाएंगे। बीते दो-ढाई दशक में टेक्सटाइल, फूड प्रोसिसिंग समेत कई उद्योगों का विस्तार हुआ है। इस बार के बजट में केंद्र ने चमड़ा और कपड़ा के उद्योग के लिए कई घोषणाएं की है। मैं आप लोगों के परिश्रम को नमन करता हूं, गुजरात में पानी कई फीट

नीचे पहुंच गया है। नर्मदा मां की कृपा और सरकार के प्रयासों से हालात बदल गए हैं। यहां की अनेक फसलें दुनिया भर के बाजारों में पहुंच रही है। एक समय था कच्छ पलायन के लिए मजबूर था। आज कच्छ के लोगों को यहीं रोजगार मिल रहा है। देश के नौजवानों को रोजगार मिले ये भाजपा सरकार की प्राथमिकता है। पहले राज्य के मंत्री कच्छ आते थे तो पाकिस्तान से शुरू कर पाकिस्तान पर ही अपनी बात खत्म करते थे। 2001 में मैंने तय किया कि मैं उसे भुला दूंगा, अब ऐसा कच्छ बना दिया है कि पाकिस्तान को भी ईर्ष्या हो जाए। हमारी नीति आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की है। ऑपरेशन सिंदूर ने इसे और स्पष्ट कर दिया है। जो भी भारतीयों का खून बहाने की कोशिश करेगा, उसको उसकी भाषा में ही जवाब दिया जाएगा। भारत पर आंख उठाने वाले किसी भी कीमत पर बख्शे नहीं जाएंगे। ऑपरेशन सिंदूर मानवता की रक्षा और आतंकवाद के अंत का मिशन है। 22 मई के बाद मैंने कभी छुपाया नहीं सीना तानकर बिहार की जनसभा में घोषणा की थी, कि मैं आतंकवाद के ठिकानों को मिट्टी में मिला दूंगा। हमने 15 दिन तक इंतजार किया, जब पाकिस्तान ने कुछ नहीं तो मैंने देश की सेना को खुली छूट दे दी।

चुनाव की वजह से किया जा रहा ड्रामा: ऐश्वर्या

कौमी पत्रिका
कौमी संवाददाता

पटना, 26 मई। तेज प्रताप यादव की सोशल मीडिया पोस्ट के बाद उठा सियासी तूफान थमने का नाम नहीं ले रहा है। लालू परिवार एक बार फिर से मुश्किलों में फंसता नजर आ रहा है। तेज प्रताप की पत्नी ऐश्वर्या ने लालू परिवार पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उनका कहना है कि ये सब चुनाव को लेकर ड्रामा किया जा रहा है। लालू परिवार पर गंभीर आरोप लगाते हुए तेज प्रताप यादव की पत्नी ऐश्वर्या राय ने कहा कि मेरी जिंदगी क्यों बर्बाद की गई? मुझे क्यों पीटा गया? अब अचानक उनमें सामाजिक जागृति आ गई है। वे सब एक हैं। वे अलग नहीं हुए हैं... चुनाव नजदीक हैं, इसलिए उन्होंने ऐसा कदम उठाया और यह ड्रामा किया जा रहा है। ऐश्वर्या राय ने कहा कि सबको पता है कि

क्या हुआ। अगर उन्हें (लालू प्रसाद यादव के परिवार को) सब पता था तो उन्होंने मुझसे उसकी शादी क्यों करवाई? मेरी जिंदगी क्यों बर्बाद की गई? मुझे अपने तलाक की जानकारी मीडिया से मिली। मुझे जो भी जानकारी मिली, वह सब मीडिया के जरिए मिली... मुझे नहीं पता था कि क्या हो रहा है... उनसे पूछिए, मेरी जिंदगी बर्बाद करने की क्या जरूरत थी? जब मुझे पीटा गया, तब उनका सामाजिक न्याय कहां था? ऐश्वर्या ने कहा कि वे हर चीज का दोष मुझ पर मढ़ते हैं। अब जब यह बात सामने आ गई है, तो उसका 12 साल से अफेयर चल रहा है और महिला को दोषी ठहराना सबसे आसान है। मुझे कब न्याय मिलेगा? मैं अपनी लड़ाई जारी रखूंगी। राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ने रविवार को अपने बड़े बेटे तेज प्रताप यादव को पार्टी से 6 वर्षों के लिए निष्कासित करने की घोषणा की थी। तेज प्रताप की अनुष्का यादव के साथ एक निजी तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद यह सख्त कदम उठाया था। लालू यादव ने इस फैसले की पुष्टि करते हुए कहा, निजी जीवन में नैतिक मूल्यों की अवहेलना हमारे सामाजिक न्याय के लिए सामूहिक संघर्ष को कमजोर करती है। ज्येष्ठ पुत्र की गतिविधि, लोक आचरण और गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार हमारे पारिवारिक मूल्यों के अनुरूप नहीं हैं। अत: मैं उसे पार्टी और परिवार से दूर करता हूं। अब से उसकी किसी भी प्रकार की भूमिका न पार्टी में होगी, न परिवार में। उन्होंने कहा कि तेज प्रताप अब अपने जीवन के निर्णय स्वयं लें और उनसे संबंध रखने वाले लोग भी स्वविवेक से सोच-समझकर कदम उठाएं। लालू ने यह स्पष्ट किया कि वह सदैव लोक लाज और नैतिक मूल्यों के पक्षधर रहे हैं और राजद की परंपरा भी यही रही है।पार्टी में इस निर्णय के बाद हलचल तेज हो गई है। राजद के भीतर तेज प्रताप की हालिया गतिविधियों को लेकर असंतोष पहले से ही था, जिसे अब सार्वजनिक रूप दे दिया गया है।

मोदी सरकार के 11 साल पूरे होने पर कांग्रेस का तंज

नई दिल्ली, 26 मई। मोदी सरकार के 11 साल पूरे होने के अवसर पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने केंद्र सरकार पर निशाना साधा। कांग्रेस अध्यक्ष ने मोदी सरकार पर देश को बर्बाद करने का आरोप लगाया और कहा कि अच्छे दिन का वादा एक डरावना सपना बनकर रह गया है। खरगे ने किसानों, महिलाओं, रोजगार और अर्थव्यवस्था के मुद्दे पर केंद्र सरकार पर निशाना साधा। मल्लिकार्जुन खरगे ने सोशल मीडिया पर साझा एक पोस्ट में लिखा कि 26 मई 2014, 11 वर्षों में मोदी सरकार के सभी बड़े-बड़े वादे खोखले साबित हुए हैं। मोदी सरकार ने देश को तबाह कर दिया है कि अच्छे दिन की बात अब डरावना सपना बन गई है। युवाओं से दो करोड़ नौकरियां सालाना का वादा किया गया था, लेकिन करोड़ों नौकरियां गायब हो गईं। खरगे ने लिखा कि किसानों की आय दोगना करने का वादा किया गया था, आय तो दोगुनी हुई नहीं ऊपर से उन्हें रबर की गोलियां खानी पड़ीं। महिलाओं के आरक्षण पर शर्तें लागू कर दी गई है और महिला सुरक्षा तार-तार है। पिछड़े वर्गों पर अत्याचार हो रहा है और उनकी हिस्सेदारी भी कहीं खो गई है। अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर सरकार को घेरते हुए खरगे ने कहा कि देश में महंगाई चरम पर है और बेरोजगारी भी लगातार बढ़ रही है। खरगे ने आरोप लगाया कि मोदी सरकार ने मेक इन इंडिया और देश को विश्वगुरू बनाने जैसे वादे किये थे, लेकिन देश के हर देश के साथ रिश्ते तबाह कर दिए गए। खरगे ने कहा कि संघ द्वारा लोकतंत्र के हर स्तंभ पर हमला किया जा रहा है। ईडी और सीबीआई का गलत इस्तेमाल किया जा रहा है।

गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार ने लागू की गौ-संवर्धन योजना: मुख्यमंत्री सैनी

कौमी पत्रिका
सौरभ शर्मा

चंडीगढ़, 26 मई। हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार ने गौ-संवर्धन योजना को लागू किया है। इस योजना के तहत प्रदेश का पहला संयंत्र यमुनानगर में लगाया जाएगा। इस बायोगैस संयंत्र पर 90 करोड़ रुपये की राशि खर्च होगी। मुख्यमंत्री सोमवार को लाडवा विधानसभा के गांव मथाना के गौवंश धाम एवं अनुसंधान केन्द्र में गौ-चिकित्सालय का शिलान्यास करने उपरांत आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने भूमि पूजन कर निर्माण कार्य का शुभारंभ किया और गौ-सेवा भी की। उन्होंने आधुनिक गौ-चिकित्सालय के निर्माण के लिए 21 लाख रुपये सहयोग के तौर पर देने की घोषणा की। श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि मथाना में गौशाला और आधुनिक पशु अस्पताल के निर्माण से बेसहारा गौवंश सड़कों पर नहीं घूमेगा। साथ ही बीमार गौवंश का इलाज भी होगा। इसके साथ ही क्षेत्र के पशुपालकों को भी अपने पशुओं का इलाज करवाने की यहां पर सुविधा प्राप्त होगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश की गौशालाओं में चारा के लिए 270 करोड़ रुपये की राशि जारी की जा चुकी है। पिछले वर्ष 608 गौशालाओं में 166 करोड़ रुपये की राशि जारी की गई थी। 310 गौशालाओं में शैड के लिए 30 करोड़ रुपये जारी किये जा चुके हैं। गायों की सुरक्षा के

लिए प्रदेश सरकार ने सख्त कानून भी बनाए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि गौ माता की सेवा हमारे धर्म और संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। सरकार द्वारा गौ संरक्षण पर लगातार बल दिया जा रहा है। प्रदेश सरकार आर्थिक और औद्योगिक विकास के साथ-साथ धार्मिक पहचान को भी बरकरार रखने की सोच को लेकर आगे बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि सरकार ने इस वित्त वर्ष में एक लाख एकड़ में प्राकृतिक खेती करने का लक्ष्य रखा है। प्राकृतिक खेती के लिए देसी गाय की जरुरत होती है। इसके लिए प्रति देसी गाय खरीदने पर 30 हजार रुपये की सब्सिडी दी जा रही है। उन्होंने कहा कि सरकार ने पंचायत की गौचरान भूमि को गौशालाओं के लिए दिए जाने का प्रावधान किया है, ताकि बेसहारा गौवंशों के लिए चारा का प्रबंध हो सके। प्रदेश में 331 गौशालाओं में सौर ऊर्जा प्लांट स्थापित किये जा चुके हैं। 344 गौशालाओं में शीघ्र ही सौर ऊर्जा प्लांट स्थापित किये जाएंगे। इस सौर ऊर्जा प्लांटों पर सरकार द्वारा 90 फीसदी सब्सिडी दी जा रही है। श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि सरकार ने प्रदेश में तीन गौ-अभयारण्य का निर्माण करने का फैसला लिया है, इनमें गांव नैन, ढंढूर और पंचकूला को चुना गया है। गौशालाओं में शैड, पानी और चारे की व्यवस्था के लिए सरकार ने 8 करोड़ रुपये की राशि जारी की है। गौशाला में शैड बनाने के लिए हर गौशाला को 10-10 लाख रुपये देने की घोषणा की थी और अब तक 50 गौशालाओं में शैड का निर्माण पूरा कर लिया गया है। शेष गौशालाओं में भी शैड का निर्माण जल्द ही पूरा किया जाएगा।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद ही दी गई पाकिस्तान को जानकारी: जयशंकर

कौमी पत्रिका
तेजिन्दर कौर बब्बर

नई दिल्ली, 26 मई। सीमापार आतंकवाद के मुद्दे पर आज संसदीय समिति की बैठक हुई। इस बैठक में सरकार ने सीमापार आतंकवाद को लेकर अपनी रणनीति साझा की, जिसमें कूटनीतिक पहल और अन्य कोशिशों की पूरी जानकारी दी। सरकार ने संसद की सलाहकार समिति के साथ बैठक में बताया कि पाकिस्तान में स्थित आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया गया, जो आतंकवाद का केंद्र थे। इससे पाकिस्तानी सेना के मनोबल पर चोट लगी है क्योंकि वह आतंकी शिविरों की रक्षा नहीं कर सकी। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने सोमवार को एक संसदीय समिति को बताया कि पाकिस्तान को भारतीय सेना द्वारा उनके क्षेत्र में स्थित आतंकी शिविरों पर किए गए हमलों की जानकारी केवल हमले के बाद डीजीएमओ (डायरेक्टर जनरल ऑफ मिलिट्री ऑपरेशंस) स्तर पर दी गई थी। सूत्रों के अनुसार, जयशंकर ने स्पष्ट किया कि पाकिस्तान को पहले से कोई सूचना नहीं दी गई थी और अमेरिकी हस्तक्षेप की जो बातें कही जा रही थीं, वे निराधार हैं। विदेश मंत्री ने स्पष्ट किया कि ऑपरेशन सिन्दूर को रोकने का निर्णय भारत ने पाकिस्तान की ओर से आए अनुरोध के बाद द्विपक्षीय स्तर पर लिया, इसमें अमेरिका की कोई भूमिका नहीं थी। दिल्ली में विदेश मामलों की परामर्शदात्री समिति की बैठक में जयशंकर ने कहा कि पाकिस्तान के

डीजीएमओ द्वारा संघर्ष विराम की मांग के बाद ही यह सैन्य कार्रवाई रोकी गई। उन्होंने कहा कि भारत के किसी भी अधिकारी ने पाकिस्तान से कोई सीधी बातचीत नहीं की, केवल दोनों देशों के डीजीएमओ के बीच संपर्क हुआ। जयशंकर ने समिति को यह भी बताया कि अमेरिका भारत पर पाकिस्तान से वार्ता करने का दबाव बना रहा था, लेकिन भारत ने स्पष्ट कर दिया कि आतंकवाद और वार्ता एक साथ नहीं चल सकते। संसदीय समिति की बैठक में कांग्रेस और राहुल गांधी द्वारा लगाए गए आरोपों को भी विदेश मंत्री ने सिरे से खारिज कर दिया। सूत्रों के अनुसार, जयशंकर ने यह भी बताया कि टारगेट स्ट्राइक ने न केवल आतंकी ढांचों को नुकसान पहुंचाया बल्कि पाकिस्तानी सेना के मनोबल को भी कमजोर किया। उन्होंने सभी सांसदों से आग्रह किया कि पाकिस्तान को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर बेनकाब करने के लिए सरकार का सहयोग करें। इसी कारण सरकार ने बहुदलीय सांसद प्रतिनिधिमंडलों को विभिन्न देशों में भेजा है ताकि भारत की आतंकवाद के विरुद्ध एकजुट नीति को दुनिया के सामने रखा जा सके। सरकार ने बताया कि आतंकवाद के खिलाफ इस लड़ाई में भारत को वैश्विक स्तर पर समर्थन मिला है। वहीं पाकिस्तान को तीन देशों को छोड़कर- तुर्किये, अजरबैजान और चीन को छोड़कर किसी का समर्थन नहीं मिला। बैठक में कांग्रेस ने विदेश मंत्री द्वारा पाकिस्तान को कथित तौर पर हमले की सूचना दिए जाने के विवाद को उठाया।

अदालत ने यूट्यूबर ज्योति को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा

हिसार, 26 मई। पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार ज्योति को हिसार पुलिस पेशी के लिए हिसार कोर्ट लेकर पहुंची थी। ज्योति मल्होत्रा को सिविल जज सुनील कुमार की अदालत में पेश किया गया, जहां से उसे 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। जानकारी के मुताबकि ज्योति को हिसार की सेंट्रल जेल नंबर 2 में रखा जाएगा। यह महिलाओं की जेल है। पेशी के दौरान कोर्ट के अंदर के गेट बंद कर दिए गए थे और भारी पुलिसबल को मौके पर तैनात किया गया था।ज्योति को इससे पहले पांच दिन और दूसरी बार चार दिन के रिमांड पर लिया गया था। रविवार शाम को चार दिन का रिमांड खत्म होने के बाद ज्योति को कोर्ट में पेश किया गया। ज्योति को सुबह ही कोर्ट में पेश किए जाने के कयास लगाए जा रहे थे लेकिन पुलिस ज्योति को करीब साढ़े तीन बजे कोर्ट में लेकर पहुंची। आज यह भी कयास लगाए जा रहे हैं कि हिसार एसपी शशांक कुमार ज्योति की कोर्ट में पेशी के बाद प्रेसवार्ता भी कर सकते हैं। वहीं, पुलिस को ज्योति के मोबाइल से डिलीट की गई कॉल डिटेल की रिपोर्ट मिल गई है। हालांकि अभी लैपटॉप से डिलीट डाटा की रिपोर्ट नहीं आई है।

बेसिक शिक्षा राष्ट्र निर्माण की नींव, हर विद्यालय में शिक्षक-छात्र अनुपात होगा सुनिश्चित: सीएम योगी

कौमी पत्रिका
विशेष संवाददाता

लखनऊ, 26 मई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बेसिक शिक्षा को समाज और राष्ट्र की आधारशिला बताते कहा कि यह बच्चों के भविष्य को संवारने का सबसे मजबूत हथियार है। सोमवार को लोकभवन सभागार में बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा आयोजित एक भव्य कार्यक्रम उन्होंने 3300 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का शुभारंभ किया। सीएम योगी ने शिक्षा के क्षेत्र में पिछले आठ वर्षों में हुए अभूतपूर्व बदलावों की सराहना की और भविष्य के लिए बेसिक शिक्षा परिषद के कार्यों के एक नए मॉडल की रूपरेखा प्रस्तुत की। सीएम योगी ने कहा कि ऑपरेशन कायाकल्प, मुख्यमंत्री कंपोजिट विद्यालय और निपुण आकलन जैसे कार्यक्रमों के साथ उत्तर प्रदेश शिक्षा के क्षेत्र में एक नया इतिहास रच रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बेसिक शिक्षा परिषद के अंतर्गत प्रदेश के 139 उच्चीकृत कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों के नवनिर्मित भवनों व अतिरिक्त डॉरमेट्री का लोकार्पण किया। साथ ही सीएम योगी ने 43 मुख्यमंत्री मॉडल कम्पोजिट विद्यालयों एवं 66 मुख्यमंत्री अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालयों का शिलान्यास भी किया। इस दौरान उन्होंने ड्रेस, स्वेटर, स्कूल बैग, जूता-मोजा एवं स्टेशनरी क्रय हेतु प्रति छात्र-छात्रा ?1,200 की धनराशि उनके

अभिभावक के बैंक खाते में डीबीटी के माध्यम से हस्तांतरित किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीएम योगी ने कहा कि 2017 से पहले बेसिक शिक्षा परिषद के स्कूलों में जर्जर भवन, गंदगी और अव्यवस्था का बोलबाला था। छात्रों की कमी और ड्रॉपआउट दर अधिक थी। लेकिन ऑपरेशन कायाकल्प ने इस तस्वीर को बदल दिया। उन्होंने कहा कि आज प्रदेश के लगभग सभी विद्यालय इस अभियान से जुड़ चुके हैं और शेष 2-3 प्रतिशत विद्यालय भी इस वर्ष कायाकल्प के दायरे में आ जाएंगे। इन स्कूलों में अब शौचालय, पेयजल, खेल मैदान, स्मार्ट क्लास, और डिजिटल लाइब्रेरी जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं, जिसके परिणामस्वरूप स्कूलों में छात्रों की संख्या 800-1200 तक पहुंच गई है। उन्होंने कहा कि यह शिक्षा का एक नया मॉडल है, जो बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और समग्र विकास के अवसर प्रदान कर रहा है। मुख्यमंत्री ने शिक्षकों की भूमिका पर विशेष जोर देते हुए कहा कि शिक्षक और छात्र का अनुपात हर हाल में बनाए रखा जाएगा। शिक्षकों की कमी नहीं होगी। हर विद्यालय में पर्याप्त शिक्षक होंगे, ताकि बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले। उन्होंने बीएड और एमएड के छात्रों को निपुण आकलन कार्यक्रम में शामिल करने का सुझाव दिया, ताकि उन्हें फील्ड अनुभव मिले और वे स्मार्ट क्लास और डिजिटल लाइब्रेरी जैसी आधुनिक सुविधाओं से परिचित हो सकें। सीएम योगी ने कहा कि यह उनके लिए एक नया अनुभव होगा और शिक्षा की गुणवत्ता को और बेहतर बनाएगा। सीएम योगी ने समर कैंप को बच्चों के समग्र विकास का माध्यम बताते हुए इसमें खेल, संगीत, नृत्य, नाटक और योग जैसी गतिविधियों को शामिल करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के लिए हर विद्यालय में अभी से प्रशिक्षण शुरू हो। आयुष मंत्रालय के योग प्रोटोकॉल को लागू करें और बच्चों को तनावमुक्त करने के लिए इनडोर गतिविधियों को बढ़ावा दें। उन्होंने नवंबर-दिसंबर में स्कूली खेल और सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं को ब्लॉक, जनपद, मंडल और राज्य स्तर पर आयोजित करने की योजना के बारे में बताया, ताकि बच्चों की प्रतिभा को निखारा जा सके। मुख्यमंत्री ने हर विधानसभा क्षेत्र में एक मुख्यमंत्री कंपोजिट विद्यालय स्थापित करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि 25-30 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले ये विद्यालय प्री-प्राइमरी से सीनियर सेकेंडरी तक एक ही कैंपस में सभी सुविधाएं प्रदान करेंगे।

प्रधानमंत्री ने जाति जनगणना के फैसले को सराहा तो कांग्रेस का तंज

नई दिल्ली, 26 मई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी सरकार के जाति जनगणना के फैसले की सराहना की थी। अब सोमवार को कांग्रेस ने इस पर तंज कसा और प्रधानमंत्री के दो पुराने वीडियो साझा कर दिए, जिनमें प्रधानमंत्री विपक्ष की जाति जनगणना की मांग की आलोचना करते नजर आ रहे हैं। रविवार को प्रधानमंत्री मोदी ने एनडीए शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों और उप-मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक की। इसी बैठक में पीएम मोदी ने जाति जनगणना के फैसले की तारीफ की। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जाति जनगणना उन वर्गों को मुख्यधारा में लाने की कवायद है, जो पीछे छूट गए हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि उनकी सरकार जातिगत राजनीति में विश्वास नहीं करती, लेकिन पिछड़ों को सशक्त बनाना उनका उद्देश्य है। एनडीए के मुख्यमंत्रियों और डिप्टी सीएम की इस बैठक में दो प्रस्ताव पारित किए गए, जिनमें से एक में ऑपरेशन सिंदूर में सशस्त्र सेनाओं की बहादुरी और पीएम मोदी के नेतृत्व में मजबूत फैसले लेने की सराहना की गई तो दूसरे प्रस्ताव में अगली जनगणना के साथ ही जाति जनगणना कराने के फैसले की तारीफ की गई। कांग्रेस महासचिव और मीडिया प्रभारी जयराम रमेश ने पीएम मोदी के दो पुराने वीडियो साझा किए, जिनमें पीएम मोदी जाति जनगणना की विपक्ष की मांग की आलोचना करते दिखाई दिए। जयराम रमेश ने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा कि 30 अप्रैल 2025 को पहलगाम आतंकी हमले और ऑपरेशन सिंदूर के बीच प्रधानमंत्री ने अचानक से जाति जनगणना का एलान कर दिया। कल, जैसा कि उम्मीद थी प्रधानमंत्री ने एनडीए के मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक में जाति जनगणना का पूरा श्रेय ले लिया। जयराम रमेश ने दो वीडियो को साझा करते हुए लिखा कि लेकिन जरा सुनिए पूर्व में प्रधानमंत्री ने क्या कहा- एक. 2 अक्तूबर 2023 को, जब बिहार में जाति सर्वे के नतीजे जारी किए गए थे

हमास के खिलाफ लड़ाई 'कोई अंतहीन युद्ध नहीं' :इजराइली सेना प्रमुख

तेल अवीव/गाजा। इजराइली सेना प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल एयाल जमीर ने कहा कि गाजा में चल रहा सैन्य अभियान एक अनंत युद्ध नहीं है और इसे निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के अनुसार यथाशीघ्र समाप्त करने की कोशिश की जाएगी।गाजा के एक दौरे के दौरान जमीर ने कहा, हम अपने सुनियोजित अभियान के अनुसार गतिविधियों को तेज कर रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि हमास अब भारी दबाव में है और अपने अधिकांश संसाधन, कमांड और नियंत्रण खो चुका है। जनरल जमीर ने आगे कहा, हम अपने कब्जे में उपलब्ध हर संसाधन का उपयोग कर बंधकों को वापस लाने, हमास को नष्ट करने और उसके शासन को समाप्त करने का कार्य कर रहे हैं। सेना प्रमुख का यह बयान ऐसे समय में आया है जब अंतरराष्ट्रीय समुदाय युद्ध समाप्त करने और मानवीय राहत सुनिश्चित करने के लिए इजराइल पर दबाव बना रहा है। हालांकि इजराइल सरकार और सैन्य नेतृत्व अब भी हमास के पूर्ण विघटन को अपनी प्राथमिकता बता रहा है।उल्लेखनीय है कि इजराइल द्वारा गाजा में चलाया जा रहा यह सैन्य अभियान 07 अक्टूबर 2023 को हमास द्वारा किए गए हमले के बाद शुरू हुआ था, जिसमें लगभग 1,200 इजराइली नागरिक मारे गए थे और 250 से अधिक लोगों को बंधक बना लिया गया था।

सेंट जॉन लेटरन में पोप लियो चौदहवें ने संभाली रोम के धर्माध्यक्ष की जिम्मेदारी

रोम। कैथोलिक चर्च के इतिहास में पहले अमेरिकी पोप लियो चौदहवें ने रोम के धर्माध्यक्ष (बिशप ऑफ रोम) के रूप में अपनी औपचारिक पदग्रहण प्रक्रिया को पूर्ण करते हुए ऐतिहासिक सेंट जॉन लेटरन बेसिलिका में जनसमूह को संबोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने भावनात्मक रूप से घोषणा की कि आज से मैं आपके साथ और आपके लिए एक रोमन हूं।

ऐतिहासिक मंच पर नई शुरुआत

सेंट जॉन लेटरन रोम का कैथेड्रल है और आधिकारिक रूप से पोप के बिशप होने का प्रतीक स्थल है। यहां सायंकालीन मिस्सा के दौरान पोप लियो ने रोम के पादरियों और विश्वासियों के समक्ष अपने नए उत्तरदायित्व को समर्पित भावना से निभाने की बात कही। उन्होंने कहा, ÷मैं आप सबकी सुनना चाहता हूं ताकि सीख सकूं, समझ सकूं और निर्णय ले सकूं... वह भी आपके साथ मिलकर।' मूल रूप से अमेरिकी और ऑगस्टीन समुदाय के सदस्य पोप लियो ने संत ऑगस्टीन के शब्दों को उद्धृत करते हुए कहा, आपके साथ मैं एक ईसाई हूं, और आपके लिए एक धर्माध्यक्ष। उन्होंने आगे जोड़ते हुए कहा कि आज विशेष रूप से मैं यह कह सकता हूं कि आपके साथ और आपके लिए मैं एक रोमन हूं।

मिसाइल हमलों के बीच रूस और यूक्रेन ने किया कैदियों का बड़ा आदान-प्रदान, 303-303 सैनिक लौटे घर

कीव/मॉस्को। रूस और यूक्रेन ने तीसरे और अंतिम चरण में सैकड़ों कैदियों का आदान-प्रदान किया। इस अदला-बदली के कुछ ही घंटे पहले रूस ने यूक्रेन पर अब तक का सबसे बड़ा मिसाइल और ड्रोन हमला किया, जिसमें कम से कम 12 लोगों की मौत हो गई और 25 से अधिक घायल हुए। रूसी रक्षा मंत्रालय ने पुष्टि की है कि दोनों देशों ने 303-303 सैनिकों को रिहा किया, जो हुई 307 और 390 कैदियों की अदला-बदली के बाद इस आदान-प्रदान श्रृंखला का अंतिम भाग था। यह युद्ध शुरू होने के बाद का अब तक का सबसे बड़ा कैदी विनिमय है। यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने सोशल नेटवर्किंग साइट 'एक्स' पर जानकारी देते हुए कहा कि, '303 यूक्रेनी रक्षक अपने घर लौट आए हैं।' उन्होंने बताया कि इन सैनिकों में सशस्त्र बल, राष्ट्रीय गार्ड, सीमा सुरक्षा सेवा और विशेष परिवहन सेवा के सदस्य शामिल हैं। इसी महीने इस्तांबुल में हुई शांति वार्ता में दोनों पक्षों ने 1,000-1,000 युद्धबंदियों और नागरिकों के आदान-प्रदान पर सहमति दी थी। यह कैदी-विनिमय उस वार्ता की एकमात्र ठोस उपलब्धि के रूप में सामने आया है।

गाजा पर इजराइल के हवाई हमले में 38 लोगों की मौत

दीर अल-बलाह। गाजा में बीते 24 घंटों में इजराइल के हवाई हमलों में कम से कम 38 लोगों की जान गई है, जिनमें एक महिला और उसके दो बच्चे भी शामिल हैं जो एक अस्थायी शिविर में शरण लिए हुए थे। स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों ने यह जानकारी दी है। उत्तरी गाजा के अस्पतालों तक पहुंच अवरुद्ध होने के कारण दो दिनों से वहां के हताहतों का आंकड़ा उपलब्ध नहीं हो सका है। देर अल-बलाह और उत्तर में जबालिया क्षेत्रों में हुए ताजा हमलों में भी लोगों की जान गई। इन हमलों में एक ही परिवार के कई सदस्य मारे गए हैं। इजराइल का कहना है कि वह नागरिकों को नुकसान पहुंचाने से बचने का प्रयास करता है और हमास को नागरिक इलाकों में छिपकर हमले करने का दोषी ठहराता है। गंभीर चिंता की बात यह है कि इज़राइल गाजा पर पूर्ण नियंत्रण और वहां की आबादी के स्वैच्छिक प्रवासन की योजना बना रहा है, जिसे अंतरराष्ट्रीय समुदाय और फिलिस्तीनी प्रतिनिधियों ने खारिज कर दिया है। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, मार्च से अब तक इजराइली हमलों में 3,785 लोग मारे जा चुके हैं।

ट्रंप ने पुतिन को बताया 'पागल', जेलेंस्की पर भी उठाए सवाल

एजेंसी

वाशिंगटन । अमेरिकी राष्टपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोमवार को रूसी राष्टपति व्लादिमीर पुतिन और यूक्रेनी राष्टपति वोलोडिमिर जेलेंस्की की आलोचना की। उन्होंने दावा किया कि अगर वह उस समय पद पर होते तो दोनों देशों के बीच चल रहा युद्ध कभी नहीं छिड़ता। ट्रंप की यह टिप्पणी रूस के बड़े हवाई हमले के बाद आई है। इस हमले में यूक्रेन के कई नागरिकों की मौत हो गई, जिनमें बच्चे भी शामिल थे। अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर ट्रंप ने पुतिन को 'पागल' करार दिया। हालांकि, उन्होंने कहा कि उनके एक समय पुतिन के साथ अच्छे संबंध थे। ट्रंप ने लिखा, 'मेरे और व्लादिमीर पुतिन के बीच हमेशा बहुत अच्छे रिश्ते रहे हैं, लेकिन उनको कुछ हो गया है। वह पूरी तरह पागल हो गए हैं। वह बेवजह कई लोगों को मार रहे हैं और मैं सिर्फ सैनिकों की बात नहीं कर रहा। मिसाइलें और ड्रोन यूक्रेन

के शहरों में बिना किसी कारण के दागे जा रहे हैं।' उन्होंने आगे कहा, 'मैंने हमेशा कहा है कि वे यूक्रेन का पूरा हिस्सा चाहते हैं। सिर्फ उसका एक टुकड़ा नहीं और शायद यह सही साबित हो रहा है, लेकिन अगर वे ऐसा करते हैं, तो इससे रूस का पतन हो जाएगा।' ट्रंप ने यूक्रेनी राष्टपति जेलेंस्की पर भी सवाल उठाए। जेलेंस्की ने हाल ही में कहा था कि 'अमेरिका की चुप्पी' ने पुतिन को और प्रोत्साहित किया है। ट्रंप ने जेलेंस्की की बयानबाजी की आलोचना करते हुए कहा,'जेलेंस्की अपने देश का भला नहीं कर रहे। उनके मुंह से निकलने वाली हर बात समस्याएं पैदा करती हैं। मुझे यह पसंद नहीं और इसे बंद करना होगा। अगर मैं राष्टपति होता तो यह युद्ध कभी शुरू ही नहीं होता।'अमेरिकी राष्टपति तक रूस के हवाई हमले पर चुप रहे, जब उन्होंने पत्रकारों से बात करते हुए इस मामले पर टिप्पणी की। पुतिन के बारे में ट्रंप ने कहा, 'वह बहुत सारे लोगों को मार रहे हैं। मुझे नहीं पता उनके साथ क्या गलत है। उनके साथ आखिर हुआ क्या है? वह बहुत सारे लोगों को मार रहे हैं। मैं इससे खुश नहीं हूं।' ट्रंप ने संघर्ष से खुद को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने दोहराया कि इसके लिए जेलेंस्की, पुतिन और उनके पूर्ववर्ती राष्टपति जो बाइडन जिम्मेदार हैं। ट्रंप ने कहा, 'यह जेलेंस्की, पुतिन और बाइडन का युद्ध है, न कि 'ट्रंप का।' मैं केवल उन बड़ी और भयानक आग को बुझाने में मदद कर रहा हूं, जो घोर अक्षमता और नफरत के कारण शुरू हुई हैं।' रूस के घातक हमले तब हुए, जब दोनों युद्धरत देशों ने फरवरी 2022 में शुरू हुए पूर्ण पैमाने के आक्रमण के बाद कैदियों की बड़ी तादाद में अदला-बदली की।

हाफिज अब्दुल करीम मरकजी जमीयत अहले हदीस पाकिस्तान के अमीर निर्वाचित

एजेंसी

लाहौर। हाफिज अब्दुल करीम को मरकजी जमीयत अहले हदीस पाकिस्तान का अमीर चुन लिया गया। हाफिज करीम के खिलाफ किसी उम्मीदवार ने चुनाव नहीं लड़ा। चुनाव बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. अब्दुल गफूर राशिद ने उन्हें निर्विरोध अमीर निर्वाचित घोषित किया। दुनिया न्यूज की खबर के अनुसार, चुनाव बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. अब्दुल गफूर राशिद ने कहा कि हाफिज अब्दुल करीम को मरकजी जमीयत अहले हदीस पाकिस्तान का निर्विरोध अमीर चुन लिया गया। जमीयत अहल-ए-हदीस पाकिस्तान के पूर्व प्रमुख सीनेटर प्रोफेसर साजिद मीर का लंबी बीमारी के बाद तीन मई को 87 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। इस बीच, जमात-ए-इस्लामी पाकिस्तान के उप अमीर लियाकत बलूच ने सीनेटर हाफिज अब्दुल करीम को मरकजी जमीयत अहले हदीस का अध्यक्ष चुने जाने पर फोन पर बधाई दी। उल्लेखनीय है कि मरकजी जमीयत

अहले हदीस पाकिस्तान एक धार्मिक संगठन और राजनीतिक दल है। मौलाना दाऊद गजनवी और मोहम्मद इब्राहिम मीर सियालकोटी ने इसकी स्थापना 1947 में की थी। एहसान इलाही जहीर ने 1986 में इसे राजनीतिक पार्टी के रूप में स्थापित किया। यह अहल-ए हदीस के अनुयायियों का समूह है। यह समूह हदीस के कथनों और कार्यों को महत्व देता है।

तेल अवीव में अमेरिकी दूतावास पर बम विस्फोट करने की कोशिश में युवक गिरफ्तार

एजेंसी

न्यूयॉर्क। संयुक्त राज्य अमेरिका के डिपार्टमेंट ऑफ जस्टिस की एजेंसी फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (एफबीआई) के विशेष एजेंटों ने न्यूयॉर्क शहर के जॉन एफ कैनेडी हवाई अड्डे पर एक युवक को गिरफ्तार किया है। उस पर 19 मई को इजराइल के तेल अवीव में अमेरिकी दूतावास की शाखा में कथित तौर पर बम विस्फोट करने की कोशिश करने और राष्ट्रपति ट्रंप को धमकी देने का आरोप है। सीबीएस न्यूज के अनुसार, संघीय अभियोजकों ने बताया कि आरोपित युवक जोसेफ न्यूमेयर को जॉन एफ कैनेडी हवाई अड्डे पर हिरासत में लिया गया। 28 वर्षीय न्यूमेयर के पास अमेरिकी और जर्मन नागरिकता है। उसे इजराइल से निर्वासित किए जाने के बाद एफबीआई के विशेष एजेंटों ने दबोचा। अभियोजकों के अनुसार, न्यूमेयर अप्रैल में इजराइल पहुंचा। 19 मई को वह एक बैग लेकर तेल अवीव में अमेरिकी दूतावास पहुंचा। बिना किसी उकसावे के न्यूमेयर ने कथित तौर पर दूतावास के एक गार्ड पर थूक दिया और जब गार्ड ने उसे हिरासत में लेने का प्रयास किया तो वह भागने में सफल रहा।

झगड़े के बाद उसने अपना बैग दूतावास के बाहर छोड़ दिया। बैग की तलाशी लेने पर उसके अंदर तीन मोलोटोव कॉकटेल (आग लगाने और विस्फोट करने वाले उपकरण) मिले। इजराइल के कानून प्रवर्तन ने उसे उसके होटल में ट्रैक किया और वहां उसे गिरफ्तार कर लिया गया। इजराइल के जांच अधिकारियों ने उससे पूछताछ की तो उसने सबकुछ उगल दिया। जांच अधिकारियों के अनुसार, दूतावास जाने से पहले न्यूमेयर ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया था कि तेल अवीव में दूतावास को जलाने में मेरे साथ शामिल हो जाओ। अधिकारियों ने कहा कि न्यूमेयर ने राष्ट्रपति ट्रंप को निशाना बनाते हुए सोशल मीडिया पर धमकी भरे संदेश भी पोस्ट किए।

इजराइल ने न्यूमेयर को अपने यहां से निर्वासित कर दिया। उसे न्यूयॉर्क पहुंचते ही एफबीआई ने दबोच लिया। संघीय अभियोजकों के अनुसार, अगर वह दोषी पाया जाता है, तो उसे 20 साल तक की जेल हो सकती है। अटॉर्नी जनरल पामेला बॉन्डी ने कहा कि इस अभियुक्त पर कानून की पूरी सीमा तक मुकदमा चलाया जाएगा। एफबीआई के निदेशक काश पटेल ने कहा कि न्यूमेयर की कथित हरकतें घृणित और हिंसक हैं। अमेरिकी न्याय विभाग के अनुसार, न्यूमेयर मूल रूप से कोलोराडो का रहने वाला है।

ट्रंप ने यूरोपीय संघ पर 50 फीसद टैरिफ को 9 जुलाई तक टाला

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने यूरोपीय संघ पर अपने हालिया प्रस्तावित टैरिफ को फिलहाल टाल दिया है। ट्रंप ने कहा कि वे यूरोपीय संघ पर 50 फीसद टैरिफ की समय सीमा को 9 जुलाई तक बढ़ाने पर सहमत हैं। न्यूज चैनल की खबर के अनुसार, ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर लिखा, मुझे आज यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन का फोन आया। उन्होंने व्यापार और यूरोपीय संघ के संबंध में 50 फीसद टैरिफ की 1 जून की समयसीमा को बढ़ाने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा, मैं इसे बढ़ाने पर सहमत हूं। 9 जुलाई को ऐसा करना मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी। ट्रंप की यह पोस्ट वॉन डेर लेयेन के यह कहने के बाद आई कि उनकी अच्छी बातचीत हुई, लेकिन इसके लिए उन्हें 9 जुलाई तक का समय चाहिए। लेयेन ने एक्स पर लिखा, यूरोपीय संघ और अमेरिका दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण और घनिष्ठ व्यापार संबंध साझा करते हैं। वॉन डेर लेयेन ने कहा कि यूरोप बातचीत को तेजी से और निर्णायक

रूप से आगे बढ़ाने के लिए तैयार है। ट्रंप ने अपने व्यापक पारस्परिक टैरिफ के हिस्से के रूप में यूरोपीय संघ पर 20 फीसद टैरिफ लगाया। इससे पहले 9 अप्रैल को 90 दिनों के लिए इसे घटाकर 10 प्रतिशत कर दिया। ट्रंप ने पिछले सप्ताह 1 जून से यूरोपीय संघ पर सीधे 50 फीसद टैरिफ लगाने का सुझाव दिया। ट्रंप ने कहा कि 27 देशों के इस समूह से निपटना बहुत मुश्किल रहा है। इसलिए 50 फीसद किया जाएगा। व्हाइट हाउस में एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर करने के कार्यक्रम के दौरान उन्होंने कहा, मैंने बस इतना कहा, अब समय आ गया है कि हम खेल को उसी तरह खेलें जिस तरह से खेल में मजा आए।

बांग्लादेश में संसदीय चुनाव दिसंबर से जून के मध्य में, पार्टियां सहमत

एजेंसी

ढाका। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के देश में दिसंबर से अगले साल जून के मध्य तक संसदीय चुनाव कराने की तैयारियों पर राजनीतिक दलों ने सहमति प्रदान कर दी है। अंतरिम सरकार के प्रमुख और मुख्य सलाहकार प्रो. मोहम्मद यूनुस के प्रेस सचिव शफीकुल आलम ने रविवार रात यह जानकारी पत्रकारों को दी। बांग्ला अखबार प्रोथोम अलो की खबर के अनुसार, प्रेस सचिव शफीकुल आलम ने स्टेट गेस्ट हाउस जमुना में रात को बुलाए गए संवाददाता सम्मेलन में कहा कि राजनीतिक दलों ने सुधारों समेत अंतरिम सरकार के उठाए गए कदमों के प्रति अपना समर्थन जताया है। मुख्य सलाहकार प्रो. मोहम्मद यूनुस ने लगातार दूसरे दिन 20 राजनीतिक दलों के

नेताओं के साथ बैठक की। उन्होंने बताया कि मुख्य सलाहकार ने राजनीतिक दलों के साथ चुनाव और सुधारों की प्रगति समेत विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। आलम ने बताया कि मुख्य सलाहकार ने राजनीतिक दलों को सूचित किया है कि चुनाव इस साल दिसंबर से अगले साल जून के बीच होंगे। प्रो. यूनुस ने आश्वासन दिया कि अगले साल 30 जून तक चुनाव करा लिए जाएंगे और राजनीतिक नेताओं ने इस पर अपनी संतुष्टि जताई है। प्रेस सचिव ने कहा कि मुख्य सलाहकार ने राजनीतिक दलों के साथ बैठक में कहा,हम एक बड़े युद्ध जैसी स्थिति में हैं।

अवामी लीग की गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाए जाने के बाद, हमें विभिन्न तरीकों से अस्थिर करने की कोशिश की जा रही है। हमें इस स्थिति से बाहर निकलना होगा। उन्होंने कहा कि चुनाव के बारे में प्रोफेसर यूनुस ने राजनीतिक नेताओं से कहा,अगर मैं निष्पक्ष चुनाव नहीं करा पाया तो मुझे अपराधबोध होगा मुख्य सलाहकार के उप प्रेस सचिव अबुल कलाम आजाद मजूमदार और अपूर्वा जहांगीर भी संवाददाता सम्मेलन में मौजूद रहे।

अमेरिका के साउथ कैरोलिना में गोलीबारी, 11 लोग घायल

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिका के साउथ कैरोलिना राज्य के एक तटीय शहर में हुई गोलीबारी में कम से कम 11 लोग घायल हो गए। उन्हें तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया। यह गोलीबारी लिटिल रिवर शहर में रात करीब 10 बजे से पहले पुलिस मेमोरियल डे वीकेंड के मौके पर हुई। साउथ कैरोलीना राज्य के उत्तर में नॉर्थ कैरोलीना, दक्षिण और पश्चिम में जॉर्जिया और पूर्व में अटलांटिक महासागर है। एनबीसी न्यूज के अनुसार होरी काउंटी पुलिस विभाग ने बयान में कहा कि लिटिल रिवर के समुदाय में गोलीबारी के बाद और पीड़ितों को निजी वाहनों से अस्पतालों में ले जाया गया। घायलों की स्थिति कैसी है, यह फिलहाल पता नहीं चल पाया है। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। पुलिस अधिकारियों ने समुदाय के सदस्यों को गोलीबारी स्थल के आसपास से दूर रहने की सलाह दी है। मर्टल बीच पुलिस ने एक अलग बयान में कहा कि गोलीबारी की आवाज सुनकर पहुंचे नॉर्थ मर्टल बीच के एक पुलिस अधिकारी की बंदूक गलती से चल गई। अधिकारी के पैर में गोली लगी है। उन्हें अस्पताल में दाखिल कराया गया है। लिटिल रिवर साउथ कैरोलिना तट के ग्रैंड स्ट्रैंड और उत्तरी कैरोलिना की सीमा के पास 11,000 से ज्यादा लोग रहते हैं। यह शहर गहरे समुद्र में मछली पकड़ने के चार्टर, बोट क्रूज और कैसीनो बोट के लिए जाना जाता है। यह मर्टल बीच से लगभग 25 मील उत्तर-पूर्व में है एबीसी न्यूज के अनुसार साउथ कैरोलिना के लिटिल रिवर में पुलिस मेमोरियल डे वीकेंड पर हुई गोलीबारी की घटना में घायलों को पुलिस के पहुंचने से पहले क्षेत्र के अस्पतालों में पहुंचा दिया गया। यह घटना लिटिल रिवर के वॉटसन एवेन्यू पर हुई।

गुयाना आतंकवाद की लड़ाई में भारत के साथ, संसदीय प्रतिनिधिमंडल को उपराष्ट्रपति भरत जगदेव ने किया आश्वस्त

एजेंसी

जॉर्जटाउन (गुयाना)/पेरिस (फ्रांस)। कांग्रेस सांसद शशि थरूर के नेतृत्व में भारतीय संसदीय सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने पाकिस्तान से आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत के ऑपरेशन सिंदूर को समग्रता के साथ गुयाना के उपराष्ट्रपति भरत जगदेव को अवगत कराया। इस अवसर पर गुयाना के उपराष्ट्रपति भरत जगदेव ने कहा कि उनका देश आतंकवाद की लड़ाई में पूरी तरह भारत के साथ है। इस बीच सूचना है कि भाजपा सांसद रविशंकर प्रसाद के नेतृत्व में एक सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल फ्रांस की राजधानी पेरिस पहुंच चुका है।गुयाना के उपराष्ट्रपति जगदेव ने कहा, यह भारतीय प्रतिनिधिमंडल की शानदार यात्रा है। गुयाना पूरी तरह से भारत के साथ है। गुयाना आतंकवाद के खिलाफ है। भारत के पहलगाम में आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम

देने वाले सभी लोगों को न्याय के कटघरे में लाया जाना चाहिए। गुयाना के उपराष्ट्रपति से मुलाकात के बाद कांग्रेस सांसद थरूर ने कहा कि यह एक अभूतपूर्व मुलाकात रही। भरत हमारे देश के मित्र हैं और उन्होंने हमारे पड़ोसी (पाकिस्तान) के साथ मौजूदा घटनाओं पर हमारी स्थिति के प्रति बहुत अधिक समझ दिखाई। शशि थरूर ने कहा कि भारत का संदेश बहुत स्पष्ट है। दुनिया को आतंकवाद के खिलाफ खड़ा होना है। हमें न केवल दुष्ट हत्यारों को न्याय के कटघरे में लाना है बल्कि हमें उन लोगों को भी गंभीरता से चुनौती देनी है जो उन्हें वित्तपोषित, प्रशिक्षित और निर्देशित कर रहे हैं। थरूर ने कहा कि यह कुछ ऐसा है जिसे भारत दशकों से झेल रहा है। अब हमें उन्हें (पड़ोसी) यह संदेश देना है कि इसकी कीमत तो चुकानी होगी। भारतीय प्रतिनिधिमंडल की भरत जगदेव से मुलाकात राष्ट्रपति भवन में हुई। थरूर ने कहा कि बातचीत में गुयाना की रिकॉर्ड तोड़ 30 प्रतिशत वार्षिक आर्थिक वृद्धि, तेल और गैस की खोज के बाद विकास योजनाओं से संबंधित कई विषयों पर भी चर्चा हुई। कृषि से लेकर दूरसंचार, बैंकिंग और राजमार्ग विकास तक के क्षेत्रों में भारतीय कंपनियों के लिए बड़ी संख्या में अवसरों का उल्लेख किया गया।

आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक समर्थन जुटाने स्लोवेनिया पहुंचा भारतीय सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल

एजेंसी

लुब्ल्याना। भारत की सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ सख्त नीति को वैश्विक मंच पर मजबूती से रखने के उद्देश्य से डीएमके सांसद कनिमोई करुणानिधि के नेतृत्व में एक सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल स्लोवेनिया पहुंचा। यह प्रतिनिधिमंडल भारत की कूटनीतिक पहल का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय समुदाय को पाकिस्तान के आतंकवाद से जुड़े संबंधों की जानकारी देना है।स्लोवेनिया पहुंचने पर भारतीय राजदूत अमित नरंग और दूतावास के अधिकारियों ने प्रतिनिधिमंडल का गर्मजोशी से स्वागत किया। भारतीय दूतावास ने एक्स (पूर्व ट्विटर) पर पोस्ट करते हुए लिखा, 'भारत का संदेश दुनिया तक' - सांसद कनिमोई के नेतृत्व में सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल स्लोवेनिया पहुँचा। राजदूत अमित नरंग और दूतावास के अधिकारियों द्वारा भव्य स्वागत किया गया।' इससे पहले प्रतिनिधिमंडल ने रूस का दौरा किया था, जहां उसने भारत के पारंपरिक मित्र रूस के नीति-निर्माताओं के साथ 'ऑपरेशन सिंदूर' और आतंकवाद से जुड़ी घटनाओं पर विस्तृत बातचीत की। इस प्रतिनिधिमंडल में समाजवादी पार्टी के राजीव राय, नेशनल कांफ्रेंस के मियां अल्ताफ अहमद, भाजपा के कैप्टन बृजेश चौटा, राजद के प्रेमचंद गुप्ता और राजदूत जावेद अशरफ शामिल हैं। यह दल स्लोवेनिया के बाद ग्रीस, लातविया और स्पेन का दौरा भी करेगा। भारत सरकार ने सात ऐसे बहुदलीय प्रतिनिधिमंडल गठित किए हैं, जो कुल 33 वैश्विक राजधानियों में जाकर यह संदेश देंगे कि हालिया भारत-पाक संघर्ष की जड़ें पाक-प्रायोजित आतंकवाद में हैं, न कि इस्लामाबाद द्वारा प्रचारित 'ऑपरेशन सिंदूर' में। उल्लेखनीय है कि 22 अप्रैल को हुए पहलगाम आतंकी हमले में 26 लोग मारे गए थे, जिसके बाद भारत ने 07 मई को पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में मौजूद आतंकी ठिकानों पर 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत सटीक हमले किए। इसके जवाब में पाकिस्तान ने 8, 9 और 10 मई को भारतीय सैन्य ठिकानों पर हमला करने की कोशिश की, जिसका भारत ने कड़ा प्रत्युत्तर दिया। 10 मई को दोनों देशों के सैन्य संचालन महानिदेशकों के बीच बातचीत के बाद जमीनी संघर्ष पर विराम लगाने पर सहमति बनी।

पाकिस्तानः खैबर पख्तूनख्वा में सुरक्षा बलों की कार्रवाई, टीटीपी के चार आतंकी ढेर

एजेंसी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में सुरक्षा बलों ने खुफिया जानकारी के आधार पर कार्रवाई करते हुए प्रतिबंधित आतंकी संगठन तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) से जुड़े चार आतंकवादियों को मार गिराया। सुरक्षा सूत्रों के अनुसार, यह अभियान डेरा इस्माइल खान जिले के कोई बारा क्षेत्र में टीटीपी आतंकियों की मौजूदगी की सूचना पर चलाया

यूक्रेन की राजधानी कीव पर रूस का हवाई हमला, 12 की मौत, 79 घायल

एजेंसी

कीव। रूस और यूक्रेन में शांति और सुलह की उम्मीदों के बीच दोनों के आसमान पर गरजते रॉकेट और मिसाइलों के हमलों में रक्त बहने के सिवा कुछ भी हासिल नहीं हो रहा। शांति और संघर्ष विराम के वैश्विक प्रयास बेअसर हो रहे हैं। इसका असर एकमात्र यह हुआ है कि दोनों ने एक-दूसरे के युद्धबंदियों का आदान-प्रदान शुरू कर दिया है। लेकिन हमले जारी हैं। रूस ने रात को यूक्रेन की राजधानी कीव को निशाना बनाया गया। हमले में 12 लोग मारे गए और कम से कम 79 घायल हो गए। द कीव इंडिपेंडेंट अखबार के अनुसार, रूस ने 25 मई की रात कीव और अन्य यूक्रेनी क्षेत्रों पर ड्रोन और मिसाइलों से हमला किया। इसमें तीन बच्चों सहित 12 लोग मारे गए और कम से कम 79 घायल हो गए। रूस के आंतरिक मंत्री इहोर क्लिमेंको ने टेलीग्राम पर इसकी पुष्टि की। यूक्रेन की वायुसेना के अनुसार, रूस ने रात भर में 69 मिसाइलें और 298 ड्रोन दागे। वायु सेना ने बताया कि 45 क्रूज मिसाइलों को मार गिराया गया और 266 ड्रोन को बेअसर कर दिया गया। हमले में 22 स्थानों पर भारी नुकसान हुआ।यह हमला पूरे युद्ध के दौरान कीव पर सबसे भारी रूसी हमलों में से एक के एक रात बाद हुआ। यह हमला कीव दिवस से पहले किया गया। कीव दिवस पर आज यूक्रेन में अवकाश है। इस हमले में कीव, जाइटॉमिर, खमेलनित्सकी, टेरनोपिल, निप्रॉपेट्रोस, मायकोलाइव, ओडेसा, खारकिव, चेर्निहाइव, चर्कासी, सुमी, पोल्टावा क्षेत्रों में 80 से अधिक आवासीय इमारतें क्षतिग्रस्त हो गई हैं। विदेशमंत्री एंड्री सिबिहा ने हमले की निंदा की और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से रूस पर युद्ध विराम के लिए और दबाव बनाने का आह्वान किया। स्टेट इमरजेंसी सर्विस के अनुसार, जाइटॉमिर ओब्लास्ट में 8, 12 और 17 साल की उम्र के तीन बच्चों की मौत हो गई। कीव सिटी मिलिट्री एडमिनिस्ट्रेशन के प्रमुख तैमूर तकाचेंको ने लोगों को सुरक्षित जगहों पर आश्रय लेने की सलाह दी। इसके बाद सैकड़ों लोगों मेट्रो स्टेशनों पर सारी रात गुजारी। कीव के मेयर विटाली क्लिट्स्को ने कहा कि एक ड्रोन का मलबा राजधानी के होलोसिव्स्की जिले में एक छात्र छात्रावास परा गिरा। इसक बाद छात्रावास में आग लग गई। प्रशासन के अनुसार, हमले में शेवचेनकिव्स्की जिले में एक व्यापार केंद्र क्षतिग्रस्त हो गया। सुमी ओब्लास्ट में कोनोटोप के मेयर आर्टेम सेमेनीखिन ने कहा कि रूस का रात भर का हमला संभवतः द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से हमारे शहर पर सबसे बड़ा और संयुक्त हमला था। स्टेट इमरजेंसी सर्विस ने बताया कि ड्रोन और मिसाइलों ने चेर्निहिव शहर और उसके आस-पास के कई इलाकों को भी निशाना बनाया। भंडारण सुविधाओं और गैर-आवासीय इमारतों में आग लग गई। आग 1,000 वर्ग मीटर से अधिक क्षेत्र में फैल गई। यूक्रेन की स्टेट इमरजेंसी सर्विस ने बताया कि दक्षिणी शहर मायकोलाइव में एक ड्रोन पांच मंजिला आवासीय इमारत से टकरा गया। गवर्नर वियाचेस्लाव नेहोडा के अनुसार, पश्चिमी शहर टेरनोपिल में एक कलिब्र क्रूज मिसाइल ने एक औद्योगिक सुविधा को तहस-नहस कर दिया। द न्यूयॉर्क टाइम्स की खबर के अनुसार, रूस ने सप्ताहांत में यूक्रेन पर युद्ध के अपने सबसे बड़े ड्रोन और मिसाइल हमले को अंजाम दिया है।

यूक्रेनी अधिकारियों ने कहा कि हमले से पता चलता है कि मॉस्को को युद्धविराम में कोई दिलचस्पी नहीं है। यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की ने हमलों को इस बात का और सबूत बताया कि रूस इस युद्ध को खींच रहा है और हर दिन हत्याएं कर रहा है। उन्होंने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन पर दबाव बढ़ाने का आह्वान किया है।

कौमी पत्रिका

संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।

Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002

फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300

E - mail address : qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in

R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472

Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

सिम तस्करी गिरोह का भंडाफोड़, पांच गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने साइबर और टेलीकॉम अपराध नेटवर्क का खुलासा किया है। मामले में मध्यप्रदेश के रहने वाले पांच युवकों को गिरफ्तार किया गया है। आरोपित दुबई के एक एजेंट के संपर्क में थे जो सिमकार्ड को गेमिंग ऐप्स में प्वाइंट एकत्र करने के लिए इस्तेमाल करता था। पुलिस ने आरोपितों को 398 सक्रिय भारतीय सिम कार्ड की अवैध खरीद और विदेश में सिम कार्ड की तस्करी में शामिल होने के आरोप में गिरफ्तार किया है। आरोपितों की पहचान उज्जैन के रहने वाले अंकित कुमावत (30) और देवास के रहने वाले अश्विन कुमार (37), मनीष कुमार (35), लोकेन्द्र सेंधव (32) और द्वारका प्रसाद (42) के रूप में की गई है। पुलिस अन्य आरोपियों की तलाश कर रही है। 15 फरवरी 2025 को आईजीआई हवाई अड्डे के टर्मिनल 3 पर केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के अधिकारियों ने दुबई जाने वाली इंडिगो उड़ान में यात्रा करने वाले सुनील रावत को संदिग्ध व्यवहार और रैंडम एक्स-रे जांच के आधार पर रोका। जांच में उनके पास 398 सक्रिय भारतीय सिम कार्ड (212 एयरटेल और 186 वोडाफोन आइडिया) मिले, जो विभिन्न व्यक्तियों के नाम पर पंजीकृत थे। जांच के दौरान सुनील रावत ने बताया कि उसके स्कूल के दोस्त फैसल ने उसे सिम कार्डों का पार्सल लाने और नौकरी का अवसर देने के लिए 35,000 रुपये की पेशकश की थी।

कैदी पैरोल लेकर 15 साल तक रहा गायब, अब हुआ गिरफ्तार

नई दिल्ली। उम्र कैद की सजा पाया कैदी पैरोल लेकर 15 साल तक गायब रहा। अब दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने उसे बरेली से गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपित की पहचान शाहजहांपुर, यूपी निवासी धीरेंद्र सिंह तोमर (46) के रूप में हुई है। वह राजन सिंह बनकर अपने रिश्तेदार की गाड़ी चला रहा था। टीम उसे लेकर दिल्ली आ गई। बाद में जेल प्रशासन को उसकी गिरफ्तारी की सूचना दे दी गई। धीरेंद्र और उसके गैंग ने दिल्ली के न्यू अशोक नगर, उत्तराखंड के हल्द्वानी, अलमोड़ा और लोहाघाट, चंपावत में चार टैक्सी चालकों को अगवा कर लूटपाट के बाद उनकी हत्या कर दी थी। मामले में दो आरोपित अब भी फरार चल रहे हैं। क्राइम ब्रांच के डीसीपी हर्ष इंदौरा ने बताया कि 17 मार्च 2001 को न्यू अशोक नगर इलाके में दो लोग अचेत हालत में मिले थे। दोनों को अस्पताल ले जाया गया, जहां एक को मृत घोषित कर दिया गया। दूसरे को समय पर इलाज मिलने की वजह से जान बच गई। पुलिस ने मामले में धीरेंद्र और उसके एक साथी दिलीप नेगी को गिरफ्तार कर लिया। इन लोगों ने जयपुर से टैक्सी किराए पर ली। इसके बाद दिल्ली लाकर चालक और सहयोगी की हत्या कर दी। बाद में टैक्सी लूटकर फरार हो गए। समय पर इलाज मिलने से सहयोगी तो बच गया। मामले में एक अक्टूबर 2007 को दिलीप और धीरेंद्र को उम्र कैद की सजा हो गई। दो अन्य साथी अजय और धीरज को भगोड़ा करार दे दिया गया। तीन नवंबर 2010 को धीरेंद्र एक माह की पैरोल पर रिहा हुआ। उसे दिसंबर में सरेंडर करना था, लेकिन वह गायब हो गया।

कपड़े की फैक्टरी में लगी आग

नई दिल्ली। यहां उद्योग नगर क्षेत्र में सुबह एक कपड़े की फैक्टरी में आग लगने से हड़कंप मच गया। यह घटना एफ-11, उद्योग नगर, गेट नंबर-2 के पास स्थित एक फैक्टरी में सुबह करीब 5:25 बजे सामने आई। मामले की सूचना मिलते ही दमकल विभाग की 10 गाड़ियां मौके पर पहुंची। दमकल कर्मियों की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। फिलहाल कूलिंग का कार्य अभी जारी है। दमकल अधिकारियों के अनुसार घटना में किसी के हताहत होने की कोई सूचना नहीं है। आग लगने के कारणों का पता लगाया जा रहा है और फैक्टरी में मौजूद सामग्री की जांच की जा रही है। स्थानीय पुलिस और फॉरेंसिक टीम भी मौके पर पहुंचकर मामले की जांच में जुट गई हैं। शुरुआती जांच में सामने आया है कि आग शॉर्ट सर्किट के कारण लगी है।

कांग्रेस ने नीति आयोग को बताया अयोग्य निकाय

नई दिल्ली, 24 मई। कांग्रेस ने नीति आयोग की बैठक पर तीखा हमला बोलते हुए इसे अयोग्य निकाय बताया और कहा कि यह और कुछ नहीं बल्कि पाखंड और भेदभाव बढ़ाने वाली कवायद है। कांग्रेस के संचार प्रभारी और पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने सोशल मीडिया पर कई पोस्ट कर शनिवार को हो रही नीति आयोग की बैठक पर सवाल खड़े किए। नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की यह बैठक प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में हो रही है, जिसका उद्देश्य विकसित भारत के लक्ष्य की दिशा में हुई प्रगति की समीक्षा करना है। जयराम रमेश ने सोशल मीडिया पर लिखा कि ये कैसा विकसित भारत होगा अगर जो लोग सत्ता में बैठे हैं, वो ही देश के सामाजिक सद्भाव को अपने शब्दों और कर्मों से तबाह करने लगें? ये कैसा विकसित भारत होगा, अगर सत्ता में बैठे लोग ही अपने नापाक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संसद, न्यायपालिका, विश्वविद्यालयों, मीडिया और संवैधानिक संस्थाओं को कमजोर करेंगे? कांग्रेस नेता ने सवाल किया कि ये किस तरह का विकसित भारत होगा

सज्जनता के साथ शक्ति भी जरूरी:मोहन भागवत

एजेंसी
नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा कि भारत को इतना सामर्थ्यवान बनना चाहिए कि कोई भी शक्ति उसे पराजित न कर सके। उन्होंने संघ प्रार्थना की एक पंक्ति का उल्लेख करते हुए बताया कि यह केवल भावना नहीं बल्कि हमारा संकल्प है। उन्होंने कहा कि अपना स्वयं का बल ही वास्तविक बल होता है और सुरक्षा के मामले में हमें किसी अन्य पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। भागवत ने संघ की विचार पत्रिकाओं के संपादकों को दिए साक्षात्कार में देश, समाज और हिंदुत्व से जुड़े कई अहम विषयों पर विस्तार से विचार रखे। उन्होंने आत्मनिर्भर सुरक्षा, सामाजिक समरसता, संघ में महिलाओं की भूमिका और धर्म आधारित जीवन मूल्यों पर स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।उन्होंने कहा कि विश्व में कुछ लोग आक्रामक प्रवृत्ति के होते हैं और केवल सज्जनता से उनकी रोकथाम संभव नहीं है। सज्जनता के साथ

शक्ति भी जरूरी है। उन्होंने यह भी कहा कि जब सज्जनता में शक्ति नहीं होती तो वह असहाय बन जाती है और शक्ति यदि सज्जनता से रहित हो तो हिंसा में बदल सकती है। इसलिए दोनों का संतुलन आवश्यक है।उल्लेखनीय है कि मोहन भागवत का यह साक्षात्कार भारत के ऑपरेशन सिंदूर के पहले लिया गया था। उन्होंने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हुए अत्याचारों से जुड़े एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि अब वहां का हिंदू समाज पहले से अधिक जागरूक और आत्मविश्वासी हो गया है। पहले ऐसे हालात में पलायन होता था लेकिन अब वहां के हिंदू कहते हैं कि वे भागेंगे नहीं बल्कि अपने अधिकारों के लिए वहीं संघर्ष करेंगे। भागवत ने इसे हिंदू समाज के बढ़ते आत्मबल और संगठन का संकेत बताया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विश्वभर में फैले हिंदू समाज के साथ खड़ा है। संघ मर्यादाओं के भीतर रहकर जहां भी संभव हो सहायता करता है। संघ का उद्देश्य केवल भारत में नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर हिंदू समाज को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाना है।हिंदुत्व को लेकर चल रही बहस पर उन्होंने कहा कि हिंदुत्व कोई संप्रदाय नहीं है और न ही यह कोई बंद विचारधारा है। यह सत्य, करुणा, शुचिता और तपस्या जैसे मूल्यों पर आधारित जीवन दृष्टि है जिसमें विविधताओं का सम्मान और स्वीकार है। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्थान एक धर्मप्राण राष्ट्र है और धर्म ही सृष्टि को संचालित करता है। यह मानना या न मानना व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है लेकिन सत्य को मानने से लाभ होता है और नहीं मानने पर हानि होती है। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदुत्व को कट्टर या राजनीतिक विचार कहना गलत है और यह केवल भ्रम फैलाने का प्रयास है। भागवत ने कहा कि राष्ट्र की एकता का विचार संविधान में भी निहित है। हम सभी एक समाज और एक राष्ट्र हैं। यह अपनाने का विचार है ना कि ध्रुवीकरण का। उन्होंने यह भी कहा कि कोई स्वयं को हिंदू कहे या भारतीय या इंडिक- यदि उसकी भावना एकता की है तो शब्दों से फर्क नहीं पड़ता। समरसता के विषय पर उन्होंने कहा कि केवल कानून से सामाजिक विषमता समाप्त नहीं होती क्योंकि इसका निवास मन में होता है।

एनआईए अधिकारियों ने सऊदी हैंडलर्स से मिलने वाले फंड पर भी लगाई रोक

एजेंसी
नई दिल्ली। विजयनगरम विस्फोट साजिश मामले में आरोपियों की सुनवाई लगातार आज तीसरे दिन खत्म हो गई है। दिल्ली एनआईए अधिकारियों ने सिराज और समीर के बयान दर्ज किए। सुनवाई के तीसरे दिन कई अहम बातें सामने आईं। पता चला कि सिराज और समीर ने विस्फोटों के लिए हैदराबाद, विजयनगरम, दिल्ली, बेंगलुरु और मुंबई में रेकी की थी। अधिकारियों ने विशाखापत्तनम के एक सेवानिवृत्त राजस्व अधिकारी की भूमिका के बारे में पूछताछ की। पता चला कि समूह में तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र के 12 लोग शामिल थे।बताया जा रहा है कि एनआईए अधिकारियों ने सऊदी हैंडलर्स से मिलने वाले फंड पर भी रोक लगा दी है। अधिकारियों ने आतंकवाद से विदेशी संबंधों, धमाकों की साजिश और वित्तीय लेन-देन पर ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने सोशल मीडिया अकाउंट्स, संगठन के खातों और विदेशी संबंधी टेलीफोन कॉल्स की जांच की है।

भारतीय जीवन बीमा निगम ने 24 घंटे में सर्वाधिक जीवन बीमा पॉलिसियाँ बेचने का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स का खिताब हासित किया

नई दिल्ली। जीडब्ल्यूआर द्वारा सत्यापित यह ऐतिहासिक उपलब्धि 20.01.2025 को निगम के समर्पित एजेंसी नेटवर्क के असाधारण

प्रदर्शन को दर्शाती है। 20.01.2025 को भारतीय जीवन बीमा निगम के कुल 4,52,839 अभिकर्ताओं ने पूरे भारत में 5.88,107 जीवन बीमा पॉलिसियां सफलतापूर्वक पूर्ण करके जारी करायी। इस महत्वपूर्ण प्रयास ने 24 घंटे की अवधि में जीवन बीमा उद्योग में अभिकर्ता उत्पादकता के लिए एक नया वैश्विक मानक स्थापित किया है। टीम एलआईसी इस प्रतिहित गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्डस (GUINNESS WORLD RECORDSM) खिताब को प्राप्त करके बेहद रोमांचित है। यह हमारे अभिकर्ताओं के अविश्वसनीय समर्पण, कौशल और अथक कार्य व नैतिकता का एक शक्तिशाली प्रमाणा है। यह उपलब्धि हमारे ग्राहकों और उनके परिवारों को महत्वपूर्ण वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने के हमारे मिशन के प्रति हमारी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह रिकॉर्ड एलआईसी के सीईओ और एमडी श्री. सिद्धार्थ महान्ति द्वारा की गई एक विचारशील पहल के प्रयास का परिणाम था, जिसमें उन्होंने प्रत्येक अभिकर्ता से मैड मिलियन डे यानी 20 जनवरी, 2025 को कम से कम एक पॉलिसी पूरी करने की अपील की थी। इस अवसर पर बोलते हुए, श्री. महान्ति ने हमारे सभी सम्मानित ग्राहकों, अभिकर्ताओं और कर्मचारियों को मैड मिलियन डे को ऐतिहासिक बनाने के लिए धन्यवाद दिया, क्योंकि एक ही दिन में रिकॉर्ड संख्या में पॉलिसियों प्राप्त करने के उनके अविश्वसनीय प्रदर्शन को अब मान्यता मिल गई है और यह गिनीज वार्ड रिकॉर्डस (त्वद्धह्-ह्श्वस्र् WORLD RECORDS में दर्ज हो गया है।

NAME CHANGE
I, hitherto known as USHA DEVI alias ISRAWATI DEVI W/O VIJAY KUMAR R/O B-390, BHAGYA VIHAR JAIN COLONY, RANI KHERA, NORTH WEST DELHI, DELHI-110081 have changed my name and shall hereafter be known as ISRAWATI DEVI.

NAME CHANGE
I hithertoknownas Nisar Ali S/O Hakam Ali,R/O Kh No- 8 Ground Floor, Street No- 5 and 6 Near Ayesha Masjid, Sangam Vihar Wazirabad, Burari, North Delhi, Delhi - 110084, have changed my name and shall hereafter be known as MASTER JEE.

NAME CHANGE
It is for general information that I, TABBASUM D/O MD ASAN R/O 728, BLOCK-Y, MANGOLPURI N-BLOCK, DIST NORTH WEST DELHI, DELHI-110083 declare that name of my father and my mother has been wrongly written as MOHAMMAD AASAN and GULSHAN KHATOON in my 10 and 12th class educational documents. The actual name of my father and my mother are MD ASAN and GULSHAN, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, hitherto known as SARVARI Alias MUMTAJ W/O SALEEM R/O Y-696, MANGOL PURI, NORTH WEST DELHI-110083 have changed my name and shall hereafter be known as MUMTAJ.

NAME CHANGE
I, JYOTI YADAV, daughter of Shri Vijay Yadav, resident of H.No. 64/C, Near Raghubir School, L2 Block, Mohan Garden, Uttam Nagar, New Delhi-110059, do hereby declare that my name has been mistakenly recorded as ALISHA YADAV in my savings bank account with Canara Bank. My correct name is JYOTI YADAV. I further declare that JYOTI YADAV and ALISHA YADAV refer to one and the same person. My correct date of birth is 25.03.2007, which shall be used for all official purposes.

NAME CHANGE
I hitherto known as SHUBAM MISHRA alias AADITYA KASHYAP S/o SHAILESH KUMAR MISHRA, R/o A2/176, Gali No. 9, Phase-5, Aya Nagar, South West Delhi, Delhi-110047, have changed my name and shall hereafter be known as AADITYA KASHYAP.

NAME CHANGE
I, KARAN SINGH BAWA S/O SARVJEET SINGH BAWA resident of 116 BLOCK-F,B,K DUTT COLONY LODHI ROAD DELHI-110003 have changed my name to KARAN SINGH for all future purpose.

NAME CHANGE
I, SAURABH OJHA S/O SHANKAR BHOSHAN OJHA R/O H No. 14 Jain Marg Gali No. 19, Bhagwati Garden, Mohan Garden West Delhi, Delhi 110059, declare that the name of my father and my mother has been wrongly written as SHANKAR BHUSHAN OJHA and POONAM OJHA in my 10th and 12th class mark sheet and certificate.The actual name of my father and my mother are SHANKAR BHOSHAN OJHA and PUNAM OJHA, which may be amended accordingly.

DATE OF BIRTH CHANGE
I, PANDRANKI APPALAKONDA Mother of No. 16127626Y Rank-NK Name-PANDRANKI RAVI Presently residing at VILL-MUTCHERLA, PO-GIDIJALA, DISTT-VISAKHAPATNAM, ANDHRAPRADESH-531173, in my son's service records my date of birth wrongly mentioned as 01/07/1981 instead of my correct date of birth as 01/01/1979 vide Affidavit dated 26/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, P APPAASWAU Father of No. 16127626Y Rank-NK Name-PANDRANKI RAVI Presently residing at VILL-MUTCHERLA, PO-GIDIJALA, DISTT-VISAKHAPATNAM, ANDHRA PRADESH-531173, have changed my name from P APPAASWAU to PANDRANKI APPALASWAMY for all future purposes and in my son's service record my date of birth wrongly mentioned as 15/03/1976 instead of my correct date of birth as 01/01/1976 vide Affidavit dated 26/05/2025 before Notary Public, Delhi.

PUBLIC NOTICE
BE IT KNOWN TO GENERAL PUBLIC THAT MY CLIENTS SATISH KUMAR S/O. DHARMPAL AND HIS WIFE MAMTA W/0. SATISH KUMAR PRESENTLY R/O. H.NO. D-1/152, P-III, JJ COLONY WELCOME SEELAMPUR-3, WELCOME, NORTH EAST, DELHI 110053 CURRENT ADDRESS R/0. B1/38, DLF DILSHAD EXTENSION-2, SAHIBABAD, GHAZIABAD, U.P. HAS SEVERED ALL THEIR RELATIONS WITH THEIR SON NAMELY KUNAL KUMAR AND HIS WIFE MUSKAN AND DISOWNED THEM FROM ALL THEIR MOVEABLE AND IMMOVABLE PROPERTIES 1.E. DELHI AND THEIR NATIVE VILLAGE PROPERTIES AND ALSO FROM OTHER CONSIDERATION OF ANY KIND WHATSOEVER MAY BE RELATED TO HIM DUE TO THEIR INDIFFERENT AND DISOBEDIENT BEHAVIOUR AND CONDUCT. MY CLIENT SHALL NOT BE RESPONSIBLE FOR ANY ACTS, DEEDS AND THINGS DONE BY THEM IN FUTURE.
Momin Fazal Advocate
Chamber No.315
Lawyers' Chambers Block Saket, New Delhi-110017

NAME CHANGE
I, hitherto known as PAYAL SINGH alias PAYAL D/O LOKENDER KUMAR W/O GAURAV SINGH JAT R/O TOWER D, FLAT NO-536, GAURS SIDDHARTHAM, SIDDARTH VIHAR, VIJAY NAGAR, GHAZIABAD, UTTAR PRADESH-201009 have changed my name and shall hereafter be known as PAYAL.

NAME CHANGE
I, No-15155020P Rank-HAV Name-AKHILESH YADAVA Father of PRIYA R/o VILL-BHAROATA, PO-BAIKANT PUR, TEH-DEORIA, DISTT-DEORIA, UTTAR PRADESH-274001, have changed my daughter's name from PRIYA to PRIYA YADAV for all future purposes vide Affidavit dated 26/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
It is for general information that I, Rajbeer Singh S/O Ram Bilas R/O M 90, Mohan Garden, Uttam Nagar, Dist West Delhi -110059, declare that name of mine has been wrongly written as Rajveer Singh in my minor daughter namely Khushi aged 17 years in her 10th class educational documents. The actual name of mine is Rajbeer Singh

NAME CHANGE
I, BHARATHI Wife of No-2610812L Rank-HAV Name-CHANDRAYYA PALINA R/o VPO-KAVITIAGRAHARAM, TEH-NANDIGAM, DISTT-SRIKAKULAM, ANDHRA PRADESH-532220, have changed my name from BHARATHI to PALINA BHARATHI for all future purposes vide Affidavit dated 26/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
It is for general information that I, TABBASUM D/O MD ASAN R/O 728, BLOCK-Y, MANGOLPURI N-BLOCK, DIST NORTH WEST DELHI, DELHI-110083 declare that name of my father and my mother has been wrongly written as MOHAMMAD AASAN and GULSHAN KHATOON in my 10 and 12th class educational documents. The actual name of my father and my mother are MD ASAN and GULSHAN, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I MOHAMMAD SHAHAB UDDIN S/O GULAM MUSTAFA R/O R-178 GALI N0-8 RAMESH PARK, LAXMI NAGAR, EAST DELHI, DELHI -110092 HAVE CHANGE MY NAME TO SHAHABUDDIN FOR ALL PURPOSE.

NAME CHANGE
I MOHAMMAD SHAHAB UDDIN S/O GULAM MUSTAFA R/O R-178 GALI N0-8 RAMESH PARK, LAXMI NAGAR, EAST DELHI, DELHI -110092 HAVE CHANGE MY NAME TO SAHABUDIN FOR ALL PURPOSE.

NAME CHANGE
I, MANGAL is legally mother of No. 2814279H Rank-NK, Name- MAIND TUSHAR TUKARAM, R/ VILL- CHUNABATTI, POST-CHUNABATTI, TEH-MUMBAI, DIST-MUMBAI, STATE-MAHARASHTRA, PIN-400022,have changed my name from MANGAL To MANGAL TUKARAM MAIND for all future purposes. Vide affidavit dated 26.05.2025 before Public Notary Delhi.

Lost & found
I Balwant Singh Kalsi S/o Late Charan Singh Kalsi R/o Flat No.V-201 Anupam Apartments 4-CBD Shadara Delhi - 110032, Membership No: 316-B hereby Notify that I have lost all my share certificates issue to me by the Anupam Apartments East Arjun Nagar East Delhi 9953228441.

NAME CHANGE
I hitherto known as DAVVU S/O SAHENDRA R/O H.NO-163, SUJRA, BAGHPAT, UTTAR PRADESH-250601 have changed my name and shall hereafter be known as DABBU.

NAME CHANGE
I, SANGEETA LALI W/O PRAMOD LALI residing at H NO-6072/4, POCKET-6B, SECTOR-D, VASANT KUNJ, DELHI-110070 have changed my name to SANGEETA for all future purpose.

NAME CHANGE
I, SUNEETA is legally mother of No 2808909F Rank-SEP Name- GADHE BALASAHEB JAYWANTA, R/O VILL-BHOYARE PATHAR, POST- BHOYARE PATHAR, TEH- NAGAR, DIST-AHMEDNAGAR, STATE- MAHARASHTRA, PIN-414005, have changed my name from SUNEETA to GADHE SUNITA JAYWANTA and date of birth from 20/04/1966 to 01/01/1973 for all future purposes. Vide affidavit dated 26.05.2025 before Public Notary Delhi.

PUBLIC NOTICE
I, Nilofar Khan Advocate hereby give Public Notice on behalf of my client Smt. Munawwar Sultana, aged about 80 years, W/o Late Jaleel Ahmed R/o F 44 West Jawahar Park, Laxmi Nagar, Delhi, that my client disowns her daughter namely Naziya Ali W/o late Shakir Ali and her off springs/children R/o House No.3226_27 Kucha Tara Chand Darya Ganj, Central Delhi , Delhi 110002 from all immovable and movable properties and also has severed all relation with her and her family from today onward. My client further refuses to provide any financial or emotional support to her daughter Naziya Ali W/o late Shakir Ali and her off springs/children. This decision has been taken due to her inappropriate behavior and conduct towards my client, who is a senior citizen of about 80 years old age. All concerned parties are hereby informed that Naziya Ali will no longer be the responsibility of my client namely Smt Munawwar Sultana, and my client will not be liable for any claims or obligations towards them.
Any claims or demands made by Naziya Ali against my client shall be considered null and void.
Nilofar Khan (Advocate)
Enrolment No. D/2512/99

सार्वजनिक सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता हैं कि मेरे मुवक्किल श्रीमती सैम्युल बेगम पत्नी मोहम्मद कासिम एंव मोहम्मद कासिम पुत्र मोहम्मद इसराईल दोनो निवासिगण-के-1/50, ए-ब्लॉक, गली न0 36, राजापुरी, उत्तम नगर, पश्चिम दिल्ली, दिल्ली-110059 ने अपने बेटे गुलशेर का व्यवहार उनके नियन्त्रण में ना होने, और उनके साथ अभद्र व्यवहार करने के कारण और लड़ाई-झगडा करने, नशा करने करने के कारण उसे अपनी चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल कर रहे हैं और उनसे अपने सारे सम्बन्ध विच्छेद कर रहे हैं। भविष्य में कोई भी व्यक्ति गुलशेर से किसी प्रकार का लेन-देन व नैतिक-अनैतिक कार्यों के लिए वह स्वंय जिम्मेदार होगें, मेरे मुवक्किलो व उसके परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।
SHABANA BANO ADVOCATE
CH. NO. 534,DWARKA COURT COMPLEX LAWYERS CHAMBERS BLOCK SECTOR-10, DWARKA NEW DELHI-110075.
MOB.NO.9999670181

NAME CHANGE
I, Laxman Singh S/O Chandra Singh Permanent resident of Banesisyum ,Athul Talla PO: Pauri ,Dist: Pauri Garhwal , Uttrakhand -246001, Presently residing at Kh No- 3075 H.No.10, Mansarover Park -02 Lal Kaun Ghaziabad Uttar Pradesh -201001, have changed the name of my minor daughter namely Lovly Singh alias Jasmin aged 13 years and she shall hereafter be known as Jasmin

PUBLIC NOTICE
My client SHINANI RAIZADA AGRAWAL, R/O HOUSE NO-4 TOLSTOY MARG, NEW DELHI G.P.O, NEW DELHI, 110001, intend to construct their house no -4, TOLSTOY MARG. Any person or persons having any right, title or interest by way of inheritance or claim against the said property and shares, should send their claim in writing to the undersigned along with the documentary evidence in support of the said claim thereof within 15 days of publication of the said notice, failing which claims if any shall be deemed to have been waived.
Gaurav bainsla (advocate)
saket court complex.

NAME CHANGE
I, Rekha D/O Sunder Yadav R/O 324/5 T. A. Tuglakabad Extn. Kalkaji New Delhi, South Delhi, Delhi -110019, have changed my Religion Hindu to Muslim from dated 12/03/2025 and changed my name to Shyna Parveen

NAME CHANGE
I, hitherto known as SARVARI Alias MUMTAJ W/O SALEEM R/O Y-696, MANGOL PURI, NORTH WEST DELHI-110083 have changed my name and shall hereafter be known as MUMTAJ.

NAME CHANGE
I, MOHAMMAD SHAH ALAM S/O MOHAMMAD UMAR resident of H NO-3203, 4TH FLOOR, KUCHA TARA CHAND DARYA GANJ, DELHI-110002 have changed my name to MOHD SHAH ALAM for all future purpose.

NAME CHANGE
I, Rekha D/O Sunder Yadav R/O 324/5 T. A. Tuglakabad Extn. Kalkaji New Delhi, South Delhi, Delhi -110019, have changed my Religion Hindu to Muslim from dated 12/03/2025 and changed my name to Shyna Parveen

सार्वजनिक सूचना
यह सूचित किया जाता है कि भारतेज इनोवेशन्स प्राइवेट लिमिटेड अपने निवेश सलाहकार के रूप में भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) द्वारा जारी पंजीकरण प्रमाणपत्र को सरेंडर (समर्पण) करने का इरादा रखता है। इसका पंजीकरण संख्या- INA000018568 और बीएसई निवेश सलाहकार नामांकन संख्या- 2093 है।यदि किसी व्यक्ति या संस्था को इस सरेंडर के संबंध में कोई आपत्ति या शिकायत हो, तो वे अपनी शिकायत या आपत्ति स्श्वक्क्क्ष की शिकायत निवारण प्रणाली (SCORES) पोर्टल https://scores.gov.in/ पर इस सूचना की तिथि से 30 दिनों के भीतर दर्ज कर सकते हैं। यह सूचना निवेश सलाहकारों से संबंधित SEBI विनियमों के अनुपालन में जारी की जा रही है।

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा
धारा 82 सीआरपीसी देखिए
मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **सोनू सिंह पुत्र गोरे सिंह निवासी संजू का मकान, शनि मंदिर के पास, सुभाष पार्क, खोड़ा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश** ने case **FIR No. 33725/2018 U/s 379 IPC, थाना गाजीपुर, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किये गये गिरफ्तारी के वारंट को यह लिखकर लौटा दिया है कि उक्त **सोनू सिंह** मिल नहीं रहा है और मुझे समाधानप्रद रूप से दर्शित कर दिया गया है कि उक्त **सोनू सिंह** फरार हो गया है (या उक्त वारंट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा है।)
इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि case **FIR No. 33725/2018 U/s 379 IPC, थाना गाजीपुर, दिल्ली** के उक्त अभियुक्त **सोनू सिंह** से अपेक्षा की जाती है कि वह इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए **04.07.2025** को या उससे पूर्व हाज़िर हो।
आदेशानुसार
श्री सचिन
न्यायिक दण्डाधिकारी प्रथम श्रेणी–03
कमरा नं. 16, पूर्वी जिला
कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली
DP/6601/ED/2025(Court Matter)

अभियुक्त की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा
धारा 82 CrPC देखिए
मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **सद्दाम, पुत्र सकील, निवासी मोहल्ला शेखपुर, ग्राम खिचरा, थाना धौलाना, जिला हापुड, उत्तर प्रदेश** ने **FIR No. 2711/2018 U/S 379 IPC, अन्तर्गत थाना गाजीपुर, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किये गए गिरफ्तारी के वारंट को यह लिखकर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **सद्दाम** मिल नहीं रहा है और मुझे समाधानप्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **सद्दाम** फरार हो गया है (या उक्त वारंट के तामील से बचने के लिये अपने आपको छिपा रहा है)।
अतः इसके द्वारा उदघोषणा की जाती है कि **FIR No. 2711/2018 U/S 379 IPC, अन्तर्गत थाना गाजीपुर, दिल्ली** के उक्त अभियुक्त **सद्दाम** से अपेक्षा की जाती है कि वह इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **03.07.2025** को या इससे पहले हाजिर हो।
आदेशानुसार,
श्री सचिन
न्यायिक दण्डाधिकारी, प्रथम श्रेणी–03
पूर्वी जिला, कोर्ट संख्या 16
कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली
DP/6488/ED/2025(Court Matter)

PUBLIC NOTICE
I, MANGO DEVI , WIFE OF RAJENDER KUMAR, RESIDING AT R/O:H.NO.-A 25/26, GALI NO.1 , SAINIK ENCLAVE , VIKAS NAGAR, D.K, MOHAN GARDEN, SWD-110059, HEREBY INFORM THE GENERAL PUBLIC THAT I HAVE DISOWNED MY SON, MR. YOGESH KUMAR, AGED 40 AND HIS DAUGHTER-IN- LAW NAMELY RAJNI DEVI DUE TO CONTINOUS MISCONDUCT, MISBEHAVIOR , AND UNACCEPTABLE ACTION OF MY DAUGHTER-IN-LAW, WHICH HAVE CAUSED IMMENSE MENTAL HARASSMENT , DISTURBANCE , AND DISRESPECT TO FAMILY. THEIR BEHAVIOR HAS MADE IT IMPOSSIBLE TO MAINTAIN A PEACEFUL AND RESPECTFUL RELATIONSHIP, AND THEREFORE, I HAVE DECIDED TO DISOWN BOTH OF THEM FROM ALL MY MOVABLE AND IMMOVABLE ASSETS AND PROPERTIES. THEY SHALL HAVE NO RIGHTS, CLAIMS, OR CONNECTION WITH MY PROPERTY IN FUTURE.ANYONE EALING WITH THEM IN MY NAME SHALL DO SO AT THEIR OWN RISK, AND I SHALL NOT BE HELD RESPONSIBLE FOR ANY OF THEIR ACTION OR OBLIGATIONS.THE GENERAL PUBLIC IS HEREBY WARNED NOT TO DEAL WITH THEM IN RESPECT OF ANY PROPERTY OR FINANCIAL MATTER IN MY NAME. ANY PERSON DOING SO SHALL DO IT AT THEIR OWN RISK AND COST.
MANGO DEVI
NEW DELHI

अभियुक्त की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा
धारा **82(2)(ii) Cr.P.C.** देखिए
मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि **फैजान पुत्रः बाबू, पताः** डी–359, शहीद नगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, **FIR No. 55/2019, U/s 379/411/34 IPC,** दिनांकः 01.05.2019, थानाः पीआईए, दिल्ली के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किए गए गिरफ्तारी के वारण्ट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **फैजान** मिल नहीं रहा है और मुझे समाधानप्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **फैजान** फरार हो गया है (या उक्त वारण्ट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा है)। इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि **FIR No. 55/2019, U/s 379/411/34 IPC,** थानाः पीआईए, दिल्ली के उक्त अभियुक्त **फैजान** से अपेक्षा की जाती है कि वह इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **04.10.2025** को या इससे पहले हाजिर हो।
आदेशानुसार
श्री पी. भार्गव राव
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी–05
कोर्ट नं. 03, कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली
DP/6643/ED/2025 (Court Matter)

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा
(धारा 82 सीआरपीसी/84 भा.न.स.स.देखिए)
मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि **कमल,** पुत्र इंद्रपाल, निवासी- ए-31, गली नंबर 9, गुर्जर चौक, कंचन पार्क, थाना लोनी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश ने **प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 033408/2021 धारा 411/482/34 भा.द.स थाना सिविल लाइंस, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है की किया है) और उस पर जारी किये गए गिरफ्तारी के वारंट को यह कह कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **कमल** मिल नहीं रहा और मुझे समाधानप्रद रूप से दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **कमल** फ़रार हो गया है (या उक्त वारंट की तामील से बचने के लिए अपने आपको छिपा रहा है)। इस लिए इस के द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि उक्त अभियुक्त **कमल, प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 033408/2021 धारा 411/482/34 भा.द.स थाना सिविल लाइंस, दिल्ली** न्यायालय के समक्ष या मेरे समक्ष उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक 27.06.2025 को या उससे पहले हाजिर हो।
आदेश से
श्री गौरव गोयल
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी-06
मध्य जिला, कमरा नं. 247
तीस हजारी न्यायालय, दिल्ली
DP/5002/N/2025

NAME CHANGE
It is for general information that I, VIJAY KUMAR TECKCHANDANI S/o Late R.D TECKCHANDANI, Residing at D-280, Sarvodaya Enclave, South Delhi, Delhi - 110017, declare that name of mine and my Father has been wrongly written as VIJAY KUMAR and RAM CHAND in my Higher Secondary Educational Documents. The actual name of mine and my Father are VIJAY KUMAR TECKCHANDANI and Late R.D TECKCHANDANI respectively which may be amended accordingly.

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा
धारा 82 Cr. P.C. देखिए
मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **आरोपी सचिन, पुत्रः** सुन्दर **पताः** मकान नं. 80, ग्राम महाराज पुर साहिबाबाद गाजियाबाद **उत्तर प्रदेश FIR No: 410/2023 U/s: 498A/406/34 IPC पुलिस थानाः वेलकम, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है), और उस पर जारी किए गए गिरफ्तारी के वारण्ट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **सचिन,** मिल नही रहा है और मुझे समाधानप्रद रूप से दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **सचिन,** फरार हो गया है (या उक्त वारण्ट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा है)।
इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि उक्त अभियुक्त **सचिन, FIR No: 410/2023 U/s: 498A/406/34 IPC पुलिस थानाः वेलकम, दिल्ली** से अपेक्षा की जाती है कि वे इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **28.06.2025** को या उससे पहले हाजिर हो।
आदेशानुसार
श्रुति शर्मा
न्यायिक दण्डाधिकारी प्रथम श्रेणी महिला कोर्ट–01
कमरा नं.–55 कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली
DP/6559/NE/2025 (Court Matter)

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा
धारा 82 सीआरपीसी देखिए
मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **असलम** पुत्र **हाफिज** निवासी **इन्द्रपुरी रोड नं. 10, लक्ष्मी गार्डन, लोनी, गाजीयाबाद, यू.पी.** ने case **FIR No. 178/20 U/s 379/411 IPC, थाना राजौरी गार्डन, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किये गये गिरफ्तारी के वारंट को यह लिखकर लौटा दिया है कि उक्त **असलम** मिल नहीं रहा है और मुझे समाधानप्रद रूप से दर्शित कर दिया गया है कि उक्त **असलम** फरार हो गया है (या उक्त वारंट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा है।)
इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि case **FIR No. 178/20 U/s 379/411 IPC, थाना राजौरी गार्डन, दिल्ली** के उक्त अभियुक्त **असलम** से अपेक्षा की जाती है कि वह इस न्यायालय के समक्ष उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए **16.07.2025** को या उससे पूर्व हाज़िर हो।
आदेशानुसार
श्री शशांक नन्दन भट्ट
न्यायिक दण्डाधिकारी प्रथम श्रेणी
पश्चिम जिला, कमरा नं. 356, तृतीय तल
तीस हजारी कोर्ट, दिल्ली
DP/6241/WD/2025(Court Matter)

PUBLIC NOTICE
My client Gurdayal Singh S/o Sh. Darshan Singh and Davinder Kaur W/o Sh. Gurdayal Singh both R/o 9A, First Floor, Gugga Modi Road, Astha Homes, Sector-127, Kharar, SAS Nagar, Punjab-140301, has disowned and debarred their son Manjeet Singh and his wife Amanpreet Kaur from their all movable, immovable properties and have no relation with them in future. My client and other family members shall not responsible for their any Civil and Criminal Act and Deeds.
NAKUL KUMAR ADVOCATE
CH.NO.181,
SAKET COURTS NEW DELHI-17

NAME CHANGE
I, Rajesh Kumar Maurya S/O Ramaadhar R/O Flat NO A-804 Tower A AVS Orchard Sector 77 Noida Gautam Budha Nagar, Uttar Pradesh 201301 have changed my name to Rajesh Kumar for all future purposes

पूर्व पार्षद को शिकस्त देकर लगातार तीसरी बार कॉलेजियम हैड बने देशबंधु कौशिक

हिसार। जिला ब्राह्मण सभा के कॉलेजियम चुनाव में 72 नंबर कॉलेजियम में बड़ा उलटफेर करते हुए देशबंधु कौशिक ने पूर्व पार्षद कै. नरेंद्र शर्मा को शिकस्त देकर तीसरी बार कॉलेजियम चुनाव जीता है।जिला ब्राह्मण सभा के सदस्य एवं भाजपा के पूर्व मंडल अध्यक्ष नरेश कौशिक ने रविवार को बताया कि जिला ब्राह्मण सभा कॉलेजियम नंबर 72 से पूर्व पार्षद रहे कै. नरेंद्र शर्मा को हराकर कर देशबंधु कौशिक ने तीसरी बार अपनी जीत को बरकरार रखा है। चुनाव अधिकारी दयानंद वत्स व उनकी टीम ने जीत का प्रमाण पत्र देशबंधु कौशिक को सौंपा। उन्होंने बताया कि जिला ब्राह्मण सभा के बीते कार्यकाल में देशबंधु कौशिक कार्यकारिणी सदस्य व निगरानी कमेटी प्रमुख भी रहे हैं।देशबंधु कौशिक ने अपनी इस जीत को समाज की जीत बताते हुए इसका श्रेय समाज के सदस्यों व अपनी टोली के सदस्यों को दिया, जिनके आशीर्वाद, सहयोग व मार्गदर्शन के चलते उन्होंने लगातार तीसरी बार जीत दर्ज की है। इस अवसर पर नरेश कौशिक, कुलभूषण शर्मा, राहुल, अंकित, जितेंद्र कौशिक, मोहित, भानु शर्मा व सुभाष शर्मा आदि भी उपस्थित रहे।

समाज की उन्नति में महिलाओं का अमूल्य योगदान : रितु सुनेजा

हिसार। निरंकारी मिशन द्वारा सुभाष नगर स्थित निरंकारी भवन में जिला स्तरीय महिला समागम का आयोजन किया गया। समागम में हिसार, बरवाला, उकलाना, आदमपुर, हांसी व बास आदि क्षेत्रों से बड़ी संख्या में मिशन की श्रद्धालु महिलाओं ने भाग लिया। इस समागम की अध्यक्षता रितु सुनेजा ने की जबकि मंच संचालन मीनू ने किया।महिला समागम में रितु सुनेजा ने कहा कि निरंकारी मिशन का एक ही उद्देश्य है कि ब्रह्म की प्राप्ति, भ्रम की समाप्ति। मिशन की प्रमुख माता सुदीक्षा के आशीर्वाद से मिशन इस उद्देश्य की पूर्ति में लगा है। उन्होंने कहा कि ईश्वर को जानकर ही भक्ति संभव है। इसलिए निरंकारी मिशन उपनिषद वाक्य एको ब्रह्म के अनुरूप कहता है कि एक को जानो, एक को मानो और एक हो जाओ। उन्होंने कहा कि महिला समाज की रीढ़ है और यदि वह आध्यात्मिक मार्ग पर चलते हुए अपना पारिवारिक व सामाजिक धर्म निभाती है तो उससे न केवल उनकी आध्यात्मिक उन्नति होती है, बल्कि परिवार में भी सुख शांति रहती है। रितु सुनेजा ने कहा कि निरंकारी प्रमुख माता सुदीक्षा जी ने महिलाओं के अलग समागम की शुरुआत की है ताकि नारी शक्ति वास्तव में अध्यात्म मार्ग को आत्मसात करती हुई आगे बढ़ें। उन्होंने कहा कि जो कार्य नारी शक्ति कर सकती है वो कोई और नहीं कर सकता है। इसलिए महिलाओं को उनकी शक्ति पहचानने की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य के साथ यह समागम आयोजित किया जा रहा है। इस दौरान मिशन के हिसार ब्रांच संयोजक संजय खुराना, प्रवक्ता रमेश चुघ आदि भी मौजूद रहे।

प्री-मानसून बारिश से जलभराव, मेयर ने संभाली कमान

सोनीपत। सोनीपत में शनिवार रात हुई तेज प्री-मानसून वर्षा ने नगर निगम की तैयारियों की पोल खोल दी। जलनिकासी व्यवस्था चरमरा गई और शहर के कई हिस्सों में जलभराव हो गया। नगर निगम के अधिकारी निष्क्रिय बने रहे तो रविवार की सुबह मेयर राजीव जैन स्वयं मैदान में उतरकर हालात का जायजा लेते दिखाई दिए। भारी बारिश के बाद सोनीपत शहर के शनि मंदिर अंडरपास, सेक्टर-14 मार्किट, डीएवी स्कूल रोड (सेक्टर-15), गीता भवन चौक, मिशन रोड, ककरोई रोड, परशुराम चौक, दहिया चौक, और रोहतक रोड फ्लाईओवर के पास जलभराव की स्थिति बन गई। मेयर राजीव जैन ने रविवार सुबह शहर का दौरा किया। उन्होंने जाम जालियों को साफ करवाया, डिस्पोज़ल पंप चालू कराया और जलनिकासी शुरू करवाई। ककरोई रोड पर रवि धर्म कांटे वाली गली में रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाने के निर्देश भी दिए। मेयर राजीव जैन ने कहा कि प्री-मानसून बारिश से प्रभावित इलाकों की पहचान कर ली गई है। जल्द ही अधिकारियों की बैठक बुलाकर स्थाई समाधान के लिए योजना बनाई जाएगी ताकि भविष्य में आपातकालीन स्थिति में टीमें तैयार रहें। नगर निगम अधिकारी ने बताया कि हमारी टीमों को सक्रिय कर दिया गया है। सभी चिन्हित स्थलों की नियमित सफाईएवं जलनिकासी सुनिश्चित की जाएगी।

भगवान परशुराम जन्मोत्सव को लेकर 36 बिरादरी में उत्साह : डॉ. अरविंद शर्मा

झज्जर। राज्य सरकार में कैबिनेट मंत्री डॉ. अरविंद कुमार शर्मा ने कहा कि रोहतक के पास पहरावर गांव में 30 में को होने जा रहे भगवान परशुराम जन्मोत्सव को लेकर 30 बिरादरी में भारी उत्साह नजर आ रहा है। इससे साफ है कि कार्यक्रम में भारी भीड़ जुटेगी और लोग भगवान परशुराम के आदर्शों से प्रेरणा लेंगे। मंत्री शर्मा ने ये बात पहरावर में होने वाले कार्यक्रम के निमित्त शनिवार रात को बहादुरगढ़ में स्थानीय निवासियों के साथ बैठक में कही।मंत्री शर्मा ने सूर्य कवि पंडित लख्मीचंद धर्मशाला और गौरी शंकर मंदिर में आमजन की समस्याएं सुनी और राज्य स्तरीय परशुराम जन्मोत्सव का आमंत्रण दिया। उन्होंने बताया कि प्रदेश में वर्ष 2014 के बाद संत महापुरूष सम्मान एवं विचार प्रसार योजना के तहत संत महापुरुषों की जयंती को सरकार के स्तर पर मनाने का निर्णय लिया गया। तत्कालीन मुख्यमंत्री एवं वर्तमान केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल की सोच को आगे बढ़ाया जा रहा है।

प्रधानमंत्री का जातिगत जनगणना का निर्णय उनकी दूरदर्शिता का परिचय : नायब सिंह सैनी

एनडीए शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों की बैठक में शामिल हुए हरियाणा के मुख्यमंत्री

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रव्यापी जातिगत जनगणना का ऐतिहासिक निर्णय लेकर दूरदर्शी नेतृत्व का परिचय दिया है। यह निर्णय सामाजिक न्याय की दिशा में एक अभूतपूर्व कदम है जो समाज के सबसे वंचित और उपेक्षित वर्गों को उनके अधिकार और अवसर देने का मार्ग प्रशस्त करेगा। मुख्यमंत्री सैनी रविवार को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के मुख्यमंत्रियों और उप मुख्यमंत्रियों की बैठक को संबोधित कर रहे थे। इस बैठक में ऑपरेशन सिंदूर में सशस्त्र बलों के पराक्रम और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साहसी नेतृत्व की प्रशंसा कर एक प्रस्ताव भी पारित किया गया। इस एक दिवसीय सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह,

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा भी शामिल हुए। इस मौके पर मुख्यमंत्री सैनी ने कहा कि सरकार का सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास का मंत्र इस निर्णय में जीवंत रूप से प्रकट हुआ है। यह कदम वंचित समुदायों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को समझने में मदद करेगा, जिससे उनकी शिक्षा, रोजगार और समग्र प्रगति के लिए लक्षित नीतियां बन सकेंगी। आपका यह प्रयास समाज के हर कोने तक विकास की रोशनी पहुंचाने की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने लंबे समय से चली आ रही मांग को स्वीकार कर अपनी उदारता और दूरदर्शिता का परिचय दिया। यह कदम सिद्ध करता है कि सरकार सभी के विचारों का सम्मान करती है और देशहित में बड़े निर्णय लेने में सक्षम है और यह नेतृत्व भारत को वैश्विक मंच पर और गौरव दिलाएगा। सैनी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने लंबे समय तक जातिगत जनगणना के मुद्दे पर केवल राजनीति की, जिसके कारण समाज के वंचित वर्गों को उनके अधिकारों से वंचित रखा गया। उन्होंने कहा कि सरकार ने उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत, पीएम आवास योजना और जन धन योजना जैसी क्रांतिकारी योजनाओं से गरीबों और वंचितों के प्रति अपनी संवेदनशीलता को बार-बार सिद्ध किया है। अब जातिगत जनगणना का यह निर्णय इन प्रयासों को और मजबूती देगा, जिससे समाज का हर तबका सरकार के कल्याणकारी शासन का लाभ उठा सकेगा।

पानीपत में रिक्त पड़े पंचों के उप चुनाव 15 जून को: जिला उपायुक्त

एजेंसी

पानीपत। पानीपत में खाली पड़े 28 पंचों के लिए उपचुनाव 15 जून को होगें। इस चुनाव के लिए नामांकन प्रक्रिया 30 मई को शाम 3 बजे तक जारी रहेगी। पंचायती राज संस्थाओं के उप चुनाव का नामांकन 30 मई तक (29 मई राजपत्रित अवकाश को छोड़कर) भर सकते हैं। इच्छुक प्रत्याशी उक्त अवधि में सुबह 10 बजे से दोपहर 3 बजे तक अपना नामांकन भर सकते है।

जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी वीरेंद्र कुमार दहिया ने बताया कि शनिवार 31 मई को सुबह 10 बजे से नामांकन पत्रों की जांच की जाएगी। सोमवार 2 जून को दोपहर 3 बजे तक उम्मीदवार द्वारा नामांकन वापस लिया जा सकता है और इसी दिन दोपहर बाद 3 बजे उम्मीदवारों को चुनाव चिन्ह आवंटित किए जाएंगे। इसके बाद रविवार, 15 जून को सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक मतदान होगा। इसी दिन मतगणना होगी और परिणाम की घोषणा की जाएगी। कही भी पुनः मतदान की स्थिति बनती है तो मंगलवार 17 जून को पुनः मतदान करवाया जाएगा। समालखा उपमंडल के गांव चुलकाना के वार्ड 20 के पंच पद के लिए होगा। यह महिला श्रेणी के लिए है। जौरासी खास के वार्ड 11 का चुनाव महिला के लिए है।

हर गांव व क्षेत्र के समुचित विकास को लेकर सरकार संकल्पित: गौरव गौतम

एजेंसी

पलवल। हरियाणा सरकार में खेल मंत्री गौरव गौतम ने कहा कि पलवल के हर गांव, हर मोहल्ले, हर गली तक मूलभूत सुविधाएं पहुंचाना और सबका साथ-सबका विकास के मूल मंत्र को साकार करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। पलवल शहर के साथ-साथ हर गांव व क्षेत्र के समुचित विकास को लेकर सरकार संकल्पित है।प्रदेश सरकार में खेल, युवा अधिकारिता एवं उद्यमिता तथा कानून एवं विधायी राज्य मंत्री गौरव गौतम ने गांव लाडियाका में 10 लाख रुपए की लागत से बने अंबेडकर भवन का उद्घाटन व करीब 65 लाख रुपए की लागत से बनाए जाने वाले कम्युनिटी सेंटर का शिलान्यास, करीब 20 लाख रुपए की लागत से बनीवाला रास्ता और 30 लाख रुपए की लागत से मार्किट कमेटी रोड सहित अन्य विकास कार्यों के शिलान्यास व उद्घाटन किए। इसके अलावा उन्होंने करीब 35 लाख रुपए की लागत से गांव राजूपुर से भोलड़ा रोड की रिपेरिंग तथा करीब 66 लाख रुपए की लागत से माला सिंह फार्म हाउस से मोहन सिंह ढाणी रोड तक सड़क मार्ग का

चौडीकरण व सुदृढ़ीकरण, गांव घोडी से रामपुर रोड और रामपुर खोर से थंथरी रोड व बारात घर शेड के उद्घाटन एवं शिलान्यास किए। इस अवसर पर खेल मंत्री गौरव गौतम ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी देश और प्रदेश का विकास करवाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। चाहे सड़क़ों को बनाने की बात हो या स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन के क्षेत्र की बात हो।गांवों में फिरनी व खेत खलिहानों के रास्तों को पक्का किया जा रहा है। इसके अलावा ई-लाइब्रेरी, व्यायामशालाएं और स्वास्थ्य केंद्र का भी निर्माण करवाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आज विभिन्न गांवों में करोड़ों रुपए की लागत के विकास कार्यों के उद्घाटन व शिलान्यास किए गए हैं, जिनका ग्रामीणों को आने वाले समय में भरपूर लाभ मिलेगा।

वीर सैनिकों व शहीदों को समर्पित होगा परशुराम जन्मोत्सव: डॉ अरविंद शर्मा

एजेंसी

पानीपत। हरियाणा के सहकारिता, कारागार, निर्वाचन, विरासत व पर्यटन मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा है कि 30 मई को गौड़ ब्राहमण विद्या प्रचारिणी संस्था के तीसरे कैंपस पहरावर (रोहतक) में भगवान परशुराम जन्मोत्सव पर राज्य स्तरीय समारोह देश के वीर सैनिकों एवं शहीदों को समर्पित होगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश के कोने-कोने में लोगों में जोश, उत्साह है और इस समारोह में बढ़चढ़ कर 36 बिरादरी अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेगी। सहकारिता मंत्री डॉ.अरविंद शर्मा संजय कालोनी में भगवान परशुराम धर्मशाला में पहुंचे, उन्होंने कहा कि पहरावर में भगवान परशुराम जन्मोत्सव सैनिकों और शहीदों के सम्मान में, भगवान परशुराम की शान में, 36 बिरादरी के कल्याण में, ब्राहमण है । उन्होने कहा कि गौड ब्राहमण विद्या प्रचारिणी संस्था बहुत पुरानी संस्था है। शर्मा ने इस मौके पर कहा कि यह कार्यक्रम सामाजिक कार्यक्रम है और 15 एकड़ में इस कार्यक्रम का आयोजन होगा जहां पर सभी सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। इस

कार्यक्रम में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करेंगे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली करेगे। कार्यक्रम में हरियाणा के मंत्रीगण, विधायकगण के साथ-साथ आस पास के राज्यों के मंत्रीगण भी वशिष्ठ अतिथि के तौर पर शिरकत करेंगे। उन्होंने सभी को एक बार फिर राज्य स्तरीय कार्यक्रम का आमंत्रण देते हुए अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने के लिए आहवान किया। इस अवसर पर भगवान परशुराम धर्मशाला प्रधान रामफल शर्मा, सतीश गौतम, रघुबीर सरपंच मांडी, राजू डिडवाडी, सुरेन्द्र शर्मा सनौली, हवा सिंह, बलवान शर्मा, पार्षद अजय शर्मा, आदि उपस्थित रहे।

पीएम के मन की बात कार्यक्रम से सकारात्मक ऊर्जा का होता है संचार : श्याम सिंह राणा

एजेंसी

रेवाड़ी। हरियाणा के कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्याम सिंह राणा ने कुंड में बावल विधायक डॉ. कृष्ण कुमार और भाजपा जिला अध्यक्ष वंदना पोपली के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मासिक कार्यक्रम मन की बात को सुना। इस कार्यक्रम के बाद कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा और विधायक डॉ कृष्ण कुमार खोल मंडल द्वारा आयोजित परिचय बैठक में भी शामिल हुए। कृषि मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की

बात कार्यक्रम में स्वदेशी उत्पादों को अपनाने का आग्रह, विधार्थियों के लिए परीक्षा की नई सोच और पर्यावरण संरक्षण में जनभागीता की बात बड़ी प्रेरणादायक रूप से की है। जल संरक्षण पर उन्होंने कहा कि बारिश की बूंदों को संरक्षित करके भी हम बहुत सारा पानी बर्बाद होने से बचा सकते हैं। विधायक डॉ.कृष्ण कुमार ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मन की बात कार्यक्रम समाज को बहुत बड़ी प्रेरणा देता है और समाज को इस कार्यक्रम से बहुत बड़ी सीख मिलती है। कुंड पहुंचने पर भाजपा नेता डॉ.अरविंद यादव, मंडल अध्यक्ष सुभाष यादव, जीतू चेयरमैन और यशु प्रधान ने मंत्री व विधायक को पगड़ी पहनाकर सम्मानित कर गुलदस्ता भेंट किया।

प्रदेश में समान रूप से तेजी से हो रहे विकास कार्य : श्याम सिंह राणा

एजेंसी

रेवाड़ी। प्रदेश के कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्याम सिंह राणा ने कहा है कि केंद्र व प्रदेश सरकार विजन 2047 के लक्ष्य को सामने रखते हुए विकास कार्यों को गति प्रदान कर रही है। प्रदेश विकास कार्यों में तेजी से अग्रणी बन रहा है । कृषि मंत्री बावल विधानसभा क्षेत्र के विधायक डॉ.कृष्ण कुमार के साथ गांव टीट में ग्रामीणों की जनसमस्याओं को सुन रहे थे। गांव टीट में पहुंचने पर समाजसेवी दिनेश यादव टीट, जीतू चेयरमैन व प्रदीप ठेकेदार सहित ग्रामीणों ने कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा व विधायक डॉ कृष्ण कुमार को पगड़ी पहनाकर स्वागत किया। कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा ने कहा कि सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों से प्रदेश के सभी वर्ग खुश है । सरकार द्वारा चलाई जा रही नीतियों का फायदा आम आदमी तक सीधा पहुंच रहा है ।

सरकार की कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं है ओर जो वायदे करती है उसको पूरा करती है। विधायक डॉ. कृष्ण कुमार ने क्षेत्र की कुछ समस्याओं को कृषि मंत्री के समक्ष रखा जिस पर मंत्री ने उन्हें शीघ्र पूरा करने का आश्वासन दिया।

शिक्षा केवल रटने और अकादमिक उत्कृष्टता तक सीमित नहीं रहनी चाहिए : बंडारू दत्तात्रेय

एजेंसी

पानीपत। हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने पानीपत के समालखा में आयोजित विद्या भारती के प्रांतीय आचार्य सम्मेलन को वर्चुअल माध्यम से संबोधित किया। बतौर मुख्य अतिथि उन्होंने मूल्य आधारित और समावेशी शिक्षा के महत्व पर जोर दिया, जो उद्योग की उभरती जरूरतों और भविष्य की चुनौतियों के अनुरूप हो। उन्होंने शिक्षकों, अकादमिक नेताओं और विद्वानों को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा केवल रटने और अकादमिक उत्कृष्टता तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। यह छात्रों में नैतिक मूल्य, आलोचनात्मक सोच और नवाचार की भावना विकसित करे। उन्होंने समावेशी, सुलभ और सामाजिक-आर्थिक विविधता के अनुकूल शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि छात्रों को अकादमिक ज्ञान के साथ-साथ नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और वैश्विक कार्यबल की मांगों के अनुरूप कौशल से लैस करना होगा। उन्होंने शिक्षकों से छात्रों का करुणा और ज्ञान के साथ मार्गदर्शन करने का आह्वान किया। दत्तात्रेय ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व वाली हरियाणा सरकार की

सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में हरियाणा सरकार अनेक पहल कर रही है। संस्थान द्वारा संचालित लगभग 25000 शिक्षण संस्थानों में एक लाख 50 हजार आचार्यों द्वारा लगभग 32 लाख से अधिक विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जा रही है। उन्होंने विद्या भारती के शैक्षिक सुधारों और शिक्षक उत्कृष्टता को प्रोत्साहन देने के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रांतीय आचार्य सम्मेलन जैसे मंच राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो शैक्षणिक नवाचार और सर्वोत्तम प्रथाओं पर विचार-विमर्श को बढ़ावा देते हैं। विद्या भारती के उपाध्यक्ष अवनीश भटनागर, एंटी करप्शन ब्यूरो के निदेशक व संस्थान के पूर्व छात्र शक्ति पाठक एवं विद्या भारती के महामंत्री देशराज शर्मा ने भी सम्मेलन में अपने विचार रखें।

संविधान हमें अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों का भी बोध कराता है : राव नरबीर सिंह

एजेंसी

गुरुग्राम। उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह ने कहा कि हमारा संविधान केवल एक दस्तावेज नहीं, बल्कि देश की आत्मा है। संविधान हमें समानता, स्वतंत्रता, न्याय और भाईचारे के आदर्शों की ओर अग्रसर करता है। यह बात उन्होंने अर्टिमिस अस्पताल में राजनीति की पाठशाला संस्था द्वारा आयोजित हमारा संविधान हमारा अभिमान कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि संविधान की प्रस्तावना न केवल नागरिकों को उनके अधिकारों की जानकारी देती है, बल्कि उन्हें सशक्त नागरिक के रूप में समाज के प्रति अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रेरित भी करती है। राव न रबीर सिंह ने कहा कि भारतीय संविधान 26 नवम्बर 1949 को अपनाया गया और 26 जनवरी 1950 को इसे लागू किया गया। भारत का संविधान भारत के लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और समतावादी ढांचे को परिभाषित करने वाला आधारभूत दस्तावेज है। पिछले सात दशकों में, इसने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के माध्यम से राष्ट्र का मार्गदर्शन किया है, न्याय, स्वतंत्रता, समानता और

बंधुत्व सुनिश्चित किया है-जो भारत के शासन के मूल सिद्धांत हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान में जीवन यापन के सभी आवश्यक तत्व समाहित हैं। यह हमें बताता है कि समाज में किस प्रकार संयम, समरसता और सहयोग के साथ जीवन जीया जाए। इसके माध्यम से नागरिक न केवल अपने अधिकारों से परिचित होते हैं, बल्कि अपने कर्तव्यों के प्रति भी जागरूक बनते हैं। राव ने कहा युवाओं को संविधान के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी देना आवश्यक है। क्योंकि वे ही राष्ट्र निर्माण के भावी शिल्पकार हैं। उन्होंने सभी उपस्थितों से आह्वान किया कि वे संविधान का गहन अध्ययन करें, उसमें निहित अधिकारों और कर्तव्यों को आत्मसात करें, और भारत को एक सशक्त, समरस और प्रगतिशील राष्ट्र बनाने में अपना योगदान दें। कैबिनेट मंत्री ने इस दौरान प्रखर कवि एवं पूर्व सांसद स्वर्गीय श्रीकांत वर्मा को श्रद्धांजलि भी अर्पित की।

गुरुग्राम को पॉलीथिन मुक्त बनाने का आह्वान: पर्यावरण मंत्री ने कहा कि गुरुग्राम एक तेजी से विकसित होता शहर है, और ऐसे में विकास के साथ उत्पन्न हो रही समस्याओं का समय पर समाधान भी अत्यंत आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि बढ़ते शहरीकरण के चलते पर्यावरण संरक्षण एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है, और इसके समाधान हेतु जनसहभागिता अनिवार्य है। उन्होंने नागरिकों से आग्रह किया कि वे पॉलीथिन मुक्त गुरुग्राम अभियान में सक्रिय रूप से भाग लें। अपने शहर को स्वच्छ, सुरक्षित और पर्यावरण के अनुकूल बनाने में योगदान करें। उन्होंने कहा कि गुरुग्राम को हम सब मिलकर ही स्वच्छ, सुंदर और स्वास्थ्यवर्धक बना सकते हैं।

फरीदाबाद में आकाशीय बिजली गिरने से तीन भैसों की मौत

फरीदाबाद। फरीदाबाद में तडक़े तेज बारिश व आंधी तूफानी के दौरान आकाशीय बिजली गिरने से तीन भैंसों की दर्दनाक मौत हो गई। इस घटना के बाद पीड़ित के यहां गांव के लोगों का जमावड़ा लग गया और सभी इस घटना को लेकर अचंभित है।

NAME CHANGE

It is for general information that I, SURENDER SINGH S/o SATYNARAYAN, R/o 70, Bhudpur(116), Rewari, Haryana-123401, declare that name of my minor son has been wrongly written as MONIKA SECOND CHILD in my minor son HONEY YADAV aged 09 years in his Aadhaar Card No. 6755 6465 2537. The actual name of my minor son is HONEY YADAV.

NAME CHANGE

It is for general information that I, PAWAN AGGARWAL S/o NARESH AGGARWAL, R/o 6710, Ward No.-15, Krishanpura, Near Almast Mandir, Rewari, Haryana-123401, declare that name of my minor son has been wrongly written as HEENA SECOND CHILD in my minor son namely SAMEER aged 09 years in his Aadhaar Card No. 3147 8469 4924. The actual name of my minor son is SAMEER.

गुरुग्राम में हुई 74 एमएम बरसात से शहर में कई जगह पर हुआ जलभराव

एजेंसी

गुरुग्राम। आधी रात के बाद हुई मूलसलाधार बरसात से शहर पानी-पानी हो गया। अनेक क्षेत्रों में बरसात का पानी भर गया, जो कि रविवार शाम तक भी भरा रहा। नगर निगम ने शहर में जल्द जलभराव के दावे किए, लेकिन पुराना सिविल अस्पताल, पुराना दिल्ली रोड समेत कई स्थानों पर सडक़े तालाब जैसी नजर आई। बीती रात को गुरुग्राम में तेज आंधी के बीच मूसलाधार बरसात हुई। बरसात व आंधी से काफी स्थानों पर पेड़ भी टूट गए। टूटे पेड़ों को हटाने के लिए नगर निगम कर्मचारियों के अलावा यातायात पुलिस ने भी काम किया। गुरुग्राम में 74 एमएम बारिश हुई। जिस कारण से कई इलाकों में जलजमाव हो गया। गुरुग्राम-जयपुर एक्सप्रेस-वे की सर्विस लेन के नाले से पानी बाहर निकलकर मुख्य सडक़ तक आ गया। पानी के साथ गंदगी भी बाहर आ गई और

सडक़ पर फैल गई। इस कारण दुपहिया वाहन चालकों को अधिक परेशानी हुई। सर्विस लेन में काफी गहरा पानी भर गया, जिससे दुपहिया वाहन चालक एक्सप्रेस-वे पर ही चलने को मजबूर हुए। बरसात से गर्मी से तो राहत मिली, लेकिन आमजन की समस्या जलभराव से बढ़ गई। जलभराव में लोगों के वाहन पानी में फंसे रहे। गुरुग्राम की कई निचली कालोनियों में जलभराव हुआ। इसी तरह से कई मुख्य सडक़ें भी बरसाती पानी से लबालब रही। नगर निगम भले ही जल निकासी के दावे कर रहा हो, लेकिन पुराना सिविल अस्पताल और राजकीय ब्वॉयज स्कूल के आगे घुटनों से भी ज्यादा पानी शाम तक भरा रहा। इसी तरह पुराना दिल्ली रोड पर केंद्रीय विद्यालय के सामने आने-जाने वाली सडक़ पर काफी गहरा पानी भरा रहा। दुपहिया, तिपहिया वाहन इस पानी में फंसकर बंद भी हो गए।

मूंगफली तेल महंगा, सोयाबीन रिफाइंड, पाम तेल नरमी

इंदौर। सप्ताहांत खाद्य तेलों में भाव ऊपर नीचे हुए। प्रोडक्शन सेंटरों की तेजी के समर्थन से मूंगफली तेल महंगा बिका। सोयाबीन रिफाइंड तथा पाम तेल सस्ता बिका। तिलहनों में रिफाइनरी प्लांटों की लिवाली रही, इससे भाव ऊंचे रहे। मूंगफली तेल 1360 से 1380 रुपये प्रति 10 किलोग्राम खुला जो 1410 से 1430 रुपये पर रुका। हालांकि कारोबार के दौरान भाव ऊपर नीचे हुए। सोयाबीन रिफाइंड 1230 से 1235 रुपये पर खुलकर 1225 से 1230 रुपये बिका। पाम तेल 1275 से 1280 रुपये खुलकर 1265 से 1270 रुपये होकर थमा। तिलहन जिन्सों में मांग से मिश्रित रंगत दर्ज की गई। पशु आहार कपास्या खली में लिवाली से मजबूती रही।

चना कांटा, मसूर, तुअर में नरमी, दालों में घट-बढ़

इंदौर, 25 मई (वार्ता) संयोगितागंज अनाज मंडी में सप्ताहांत दलहन जिन्सों में नरमी दर्ज की गई। दालों के दामों में मिश्रित रंगत रही। चावल में खरीदी से तेजी रही। सोमवार को चना कांटा 6050 से 6100 रुपये खुलने के बाद 6000 से 6075 रुपये होकर थमा। मूंग 8000 से 8500 रुपये पर खुलने के बाद नीचे में 7200 रुपये बिकी। भाव 7600 से 7700 रुपये बोले गए। कारोबार में तुअर 6400 से 7500 रुपये खुलकर 6400 से 7200 रुपये बिकी। उड़द 7500 से 8000 पर खुलकर 7200 से 7800 रुपये रही। मसूर 6350 से 6400 पर खुलने के बाद 6190 से 6150 रुपये प्रति क्विंटल बिकी। दालों में भाव मांग सुस्ती से ऊपर नीचे हुए। सप्ताहांत चना दाल, तुअर दाल, मूंग दाल में भाव कम हुए। गेहूं आटा में लिवाली सुस्ती से मंदा रहा। वहीं दलिया भी सस्ती बिकी। इस बीच चना बेसन में भाव कम हुए। चावल में मजबूती रही।

बंपर लाभांश से राजकोषीय हालात बेहतर करने में मिलेगी मदद; 70000 करोड़ अतिरिक्त खर्च कर सकेगी सरकार

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के 2.69 लाख करोड़ रुपये के बंपर लाभांश से सरकार की राजकोषीय स्थिति बेहतर हो सकेगी। साथ ही, दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में वृद्धि को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। एसबीआई ने इकोरैप रिपोर्ट में कहा, हमारा अनुमान है कि बंपर लाभांश से राजकोषीय घाटा बजट स्तर से 0.2 फीसदी कम होकर जीडीपी का 4.2 फीसदी रहेगा। यह वैकल्पिक रूप से करीब 70,000 करोड़ के अतिरिक्त खर्च का रास्ता भी खोलेगा, जबकि अन्य चीजों में कोई बदलाव नहीं होगा। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 2025-26 के बजट में 2.56 लाख करोड़ का लाभांश मिलने का अनुमान लगाया था। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह अधिशेष भुगतान मजबूत सकल डॉलर की बिक्री, उच्च विदेशी मुद्रा लाभ और ब्याज आय में लगातार वृद्धि की वजह से है। आरबीआई जनवरी में एशिया के अन्य केंद्रीय बैंकों की तुलना में विदेशी मुद्रा भंडार का शीर्ष विक्रेता था। सितंबर, 2024 में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 704 अरब डॉलर के शिखर पर पहुंच गया था। आरबीआईसे बंपर लाभांश मिलने से सरकार बुनियादी ढांचे पर अपना खर्च बढ़ा सकती है।

भारत अब दुनिया की चौथी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति है, यह एक मामूली उपलब्धि नहीं हैः आनंद महिन्द्रा

नई दिल्ली। भारत के लिए अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर एक बड़ी और गौरवपूर्ण उपलब्धि सामने आई है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, भारत ने जापान को पीछे छोड़ते हुए दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का दर्जा हासिल कर लिया है। इस उपलब्धि पर उद्योगपति आनंद महिन्द्रा ने सोशल मीडिया पर एक भावुक और प्रेरक प्रतिक्रिया दी है, जिसे लोग खूब पसंद कर रहे हैं। आनंद महिन्द्रा ने एक्स पर दुनिया की टॉप 10 अर्थव्यवस्थाओं की सूची साझा करते हुए अपने बिजनेस स्कूल के दिनों को याद किया। उन्होंने लिखा, जब मैं बिजनेस स्कूल में था, तब भारत का जीडीपी में जापान से आगे निकलना महज़ एक कल्पना जैसा लगता था। आज यह मील का पत्थर हकीकत बन चुका है- भारत अब दुनिया की चौथी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति है। यह एक मामूली उपलब्धि नहीं है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि इस उपलब्धि पर जश्न के साथ-साथ आगे की चुनौतियों पर भी ध्यान देना जरूरी है। खासकर प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाना अगला बड़ा लक्ष्य होना चाहिए। इसके लिए उन्होंने इन्फ्रास्ट्रक्चर, शिक्षा और मैन्युफैक्चरिंग जैसे क्षेत्रों में सुधार की निरंतर आवश्यकता बताई। इस रिपोर्ट को लेकर नीति आयोग के बीवीआर सुब्रमण्यम ने भी कहा कि भारत की इकोनॉमी अब 4 ट्रिलियन डॉलर से अधिक हो चुकी है।

सर्राफा बाजार में सस्ता हुआ सोना, चांदी की बढ़ी चमक

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज सोने के भाव में कमजोरी का रुख नजर आ रहा है। सोना आज 400 रुपये से लेकर 440 रुपये प्रति 10 ग्राम तक सस्ता हो गया है। भाव में गिरावट आने के कारण आज देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना 97,640 रुपये से लेकर 97,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 89,500 रुपये से लेकर 89,650 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में आज मामूली तेजी आने के कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में आज एक लाख रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रही है। दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 97,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 89,650 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 97,640 रुपये प्रति 10 ग्राम और

22 कैरेट सोना 89,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 97,690 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 89,550 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 97,640 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 89,500 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 97,640 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 89,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 97,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 89,650 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 97,690 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 89,550 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

जयपुर में 24 कैरेट सोना 97,790 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 89,650 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी आज सोना सस्ता हुआ है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 97,640 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजारों में 22 कैरेट सोना 89,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

विदेशी मुद्रा भंडार 4.9 अरब डॉलर गिरकर 685.7 अरब डॉलर पर

एजेंसी

मुंबई। स्वर्ण भंडार, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आारक्षित निधि में भारी कमी होने से 16 मई को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 4.9 अरब डॉलर लुढ़ककर 685.7 अरब डॉलर पर आ गया। वहीं, इसके पिछले सप्ताह देश का विदेशी मुद्रा भंडार 4.6 अरब डॉलर के इजाफे के साथ 690.6 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 16 मई को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 27.9 करोड़ डॉलर की मजबूती के साथ 581.7 अरब डॉलर पर पहुंच गई। वहीं, इस अवधि में स्वर्ण भंडार 5.1 अरब डॉलर की भारी गिरावट आई और यह घटकर 81.2 अरब डॉलर पर आ गया। इसी तरह आलोच्य सप्ताह एसडीआर 4.3 करोड़ डॉलर कम होकर 18.5 अरब डॉलर रह गया। इस अवधि में आईएमएफ के पास आरक्षित निधि में 30 लाख डॉलर की कमी आई और यह पिछले सप्ताह के मुकाबले घटकर 4.4 अरब डॉलर पर आ गई।

एक हफ्ते में 2,950 रुपये तक महंगा हुआ सोना, चांदी भी पूरे सप्ताह में 2,900 रुपये उछला

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज सोने में तेजी का रुख नजर आ रहा है। सोना आज 510 रुपये से 560 रुपये प्रति 10 ग्राम तक महंगा हो गया है। भाव में तेजी आने के कारण आज देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना 98,080 रुपये से लेकर 98,230 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 89,900 रुपये से लेकर 90,050 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में आज कोई बदलाव नहीं होने के कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में आज भी 99,900 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रही है। साप्ताहिक आधार पर देखा जाए तो सोमवार से शनिवार तक के कारोबार के बाद देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोने के भाव में 2,950 रुपये प्रति 10 ग्राम तक की मजबूती दर्ज की गई है। इसी तरह 22 कैरेट सोना भी पिछले एक सप्ताह के दौरान 2,700 रुपये प्रति 10 ग्राम तक महंगा हो चुका है। सोने की तरह

चांदी की कीमत में भी सोमवार से शनिवार तक के कारोबार के बाद 2,900 रुपये प्रति किलोग्राम तक की तेजी दर्ज की गई है। दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 98,230 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 90,050 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं, देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 98,080 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 89,900 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 98,130 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 89,950 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है।

इंडोनेशिया के राष्ट्रपति और चीन के पीएम ने की टैरिफ पर चर्चा, मलयेशिया ने कहा- हम एकजुट हों

एजेंसी

बीजिंग। चीन के प्रधानमंत्री ली कियांग ने इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो से मुलाकात की और अमेरिका के वैश्विक व्यापार युद्ध तथा आर्थिक वैश्वीकरण के समक्ष चुनौतियों के दौरान व्यापार और निवेश बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। ली दक्षिण-पूर्व एशिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था इंडोनेशिया की तीन दिवसीय यात्रा पर शनिवार दोपहर को इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता पहुंचे। यह इस साल उनकी पहली विदेश यात्रा का पहला पड़ाव था। इंडोनेशिया और चीन 20 प्रमुख विकासशील देशों और उभरती अर्थव्यवस्थाओं व ब्रिक्स के सदस्य देश हैं। ली रविवार शाम को इंडोनेशिया-चीन व्यापार स्वागत समारोह में अपने संबोधन के लिए 60 प्रमुख चीनी व्यवसायियों को अपने साथ लाए। उन्होंने अपने भाषण में इस बात पर जोर दिया कि बढ़ती बाहरी चुनौतियों के बावजूद चीन की अर्थव्यवस्था ने इस साल तेजी से विकास हासिल किया है। ली ने इस कार्यक्रम में कहा, वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय स्थिति गतिरोध की स्थिति

में है, एकतरफावाद और संरक्षणवाद बढ़ रहा है, धमकाने वाला व्यवहार बढ़ रहा है। इस कार्यक्रम में सुबियांटो भी मौजूद थे।

ली ने कहा कि इस वर्ष गुटनिरपेक्ष आंदोलन की 70वीं वर्षगांठ है, जिसे एशियाई और अफ्रीकी देशों द्वारा इंडोनेशिया के बांडुंग शहर में आयोजित किया गया था, जब सात दशक से अधिक समय पहले विश्व एक ऐतिहासिक चौराहे पर था। ली ने कहा कि एकजुटता, मैत्री और सहयोग की बांडुंग भावना ने वैश्विक दक्षिण देशों की एकता और सहयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।ली ने कहा, सात दशक से भी अधिक समय बाद, दुनिया एक बार फिर महत्वपूर्ण चौराहे पर है।उन्होंने सभी देशों से बातचीत और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के माध्यम से मतभेदों को सुलझाते हुए साझा आधार तलाशने का आह्वान किया। मलेशिया ने कहा- अमेरिकी टैरिफ से निपटने के लिए एकजुट रहना चाहिए मलेशिया के विदेश मंत्री मोहम्मद हसन ने कहा कि दक्षिण पूर्व एशियाई देशों को क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण में तेजी लानी चाहिए।

राइजिंग नॉर्थ ईस्ट शिखर सम्मेलन में 4.30 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव आए : सिंधिया

एजेंसी

नई दिल्ली। पूर्वोत्तर भारत भी अब आर्थिक मजबूती की दिशा में देश के साथ मिलकर आगे बढ़ाने के लिए तैयार है। उत्तर पूर्व क्षेत्र विकास मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित राइजिंग नॉर्थ ईस्ट शिखर सम्मेलन में 4.30 लाख करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव आए हैं।

दिल्ली में दो दिन तक चले राइजिंग नॉर्थ ईस्ट शिखर सम्मेलन के समापन के मौके पर केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा की उत्तर पूर्व वैश्विक साझेदारी और आपसी हित के केंद्र के रूप में उभर कर सामने आया है। उत्तर पूर्व क्षेत्र विकास मंत्रालय में मुख्य रूप से कृषि खेल निवेश प्रोत्साहन पर्यटन बुनियादी ढांचा वस्त्र और हस्तशिल्प आर्थिक गलियारा इकोनामिक कॉरिडोर और पशुपालन के क्षेत्र में आठ उच्च स्तरीय कार्य बल का गठन किया है जिससे उत्तर पूर्व के

RISING NORTHEAST INVESTORS SUMMIT 2025

प्रत्येक राज्य को अपने विकास का रोड मैप तैयार करने में सहायता मिलेगी। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि उत्तर पूर्व क्षेत्र विकास मंत्रालय निवेशकों, विदेशी राजनयिकों, राजदूतों सहित विभिन्न हितधारकों के साथ चर्चा कर रहा है और उन्हें उत्तर पूर्व के राज्यों में निवेश के अवसरों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। पिछले एक साल में मंत्रालय ने इस दिशा में व्यापक राष्ट्रव्यापी और अंतरराष्ट्रीय जुड़ाव के प्रयास का नेतृत्व किया है। इन प्रमुख पहलों में भारत के मुख्य शहरों में नौ घरेलू रोड शो, 95 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों के साथ राजदूतों की बैठकें, छह राज्य स?तरीय गोलमेज सम्मेलन और सार्वजनिक उपक्रमों, उद्योग मंडलों और कॉर्पोरेट्स के साथ कई परामर्श बैठकें शामिल हैं। उन्होंने कहा कि इन चर्चाओं से वास्तविक परिणाम सामने आए हैं और 4.30 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं।राइजिंग नॉर्थ ईस्ट शिखर सम्मेलन 2025 पर टिप्पणी करते हुए मंत्री ने कहा कि उत्तर पूर्व क्षेत्र विकास मंत्रालय की स्थापना के बाद से यह पहली बार है कि इस पैमाने पर निवेश शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह के दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी, अडाणी समूह के चेयरमैन गौतम अडाणी और वेदांता के चेयरमैन अनिल अग्रवाल समेत उद्योग जगत के प्रमुखों ने उत्तर पूर्व क्षेत्र में अवसरों का पता लगाने के लिए सामूहिक रूप से 1,55,000 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश की घोषणा की थी।

पेट्रोल और डीजल की कीमतें स्थिर

एजेंसी

नई दिल्ली।अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी जारी रहने के बावजूद घरेलू बाजार में पेट्रोल और डीजल के दाम आज स्थिर रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे।तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा। वैश्विक स्तर पर साप्ताहांत पर अमेरिकी क्रूड 0.92 प्रतिशत उबलकर 61.76 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। इसी तरह लंदन ब्रेंट क्रूड 0.39 प्रतिशत की तेजी लेकर 65.03 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

अगले सप्ताह 9 नए आईपीओ की लॉन्चिंग, तीन कंपनियां करेंगी शेयरों की लिस्टिंग

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में तेजी का माहौल बनते ही प्राइमरी मार्केट में भी हलचल नजर आने लगी है। सोमवार से शुरू हो रहे कारोबारी सप्ताह के दौरान प्राइमरी मार्केट काफी गुलजार रहने वाला है। इस सप्ताह 9 नए आईपीओ की लॉन्चिंग होने वाली है। इनमें से 4 मेनबोर्ड सेगमेंट के हैं। इसके साथ ही पिछले सप्ताह 22 मई को सब्सक्रिप्शन के लिए खुले एक आईपीओ में भी कल (26 मई) तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ लॉन्चिंग के अलावा इस सप्ताह तीन कंपनियां अपने शेयरों की लिस्टिंग के जरिए स्टॉक मार्केट में कारोबार की शुरुआत करेंगी। सप्ताह के पहले कारोबारी दिन 26 मई को एजीस वोपैक टर्मिनल्स का 2,800 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में 28 मई तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 223 रुपये से 235 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 63 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का एलॉटमेंट 29 मई को किया जाएगा। इनकी लिस्टिंग 2 जून को बीएसई और एनएसई पर होगी। इसी तरह लीला ब्रांड के तहत लग्जरी होटल और रिसॉर्ट चल चलने वाली कंपनी श्लॉस बैंगलोर लिमिटेड का 3,500 करोड़ रुपये का आईपीओ भी 26 मई को ही सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में 28 मई तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 413 रुपये से 435 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 34 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का एलॉटमेंट 29 मई को किया जाएगा। वहीं इनकी लिस्टिंग 2 जून को बीएसई और एनएसई पर होगी। इसके अगले दिन 27 मई को प्रोस्ट्रैम इन्फो सिस्टम का 168 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में 29 मई तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 95 रुपये से 105 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 142 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का एलॉटमेंट 30 मई को किया जाएगा। वहीं इनकी लिस्टिंग 3 जून को बीएसई और एनएसई पर होगी। इसी दिन एस्टोनिया लैब्स का 37.67 करोड़ रुपये का आईपीओ भी सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में 29 मई तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 128 रुपये से 135 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 1,000 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का एलॉटमेंट 30 मई को किया जाएगा। वहीं इनकी लिस्टिंग 3 जून को बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर होगी। इसी तरह ब्लू वाटर लॉजिस्टिक्स का 40.50 करोड़ रुपये का आईपीओ भी 27 मई को ही सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में भी 29 मई तक बोली लगाई जा सकेगी।

जेआईएल और अन्य के खिलाफ कार्रवाई, छापेमारी में 1.70 करोड़ रुपये नकद और अचल संपत्ति से जुड़े दस्तावेज जब्त

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कहा कि जेपी इंफ्राटेक लिमिटेड (जेआईएल), जयप्रकाश एसोसिएट्स लिमिटेड (जेएएल) और अन्य कंपनियों के परिसरों पर कई गई छापेमारी में 1.70 करोड़ रुपये नकद और अचल संपत्तियों से जुड़े दस्तावेज जब्त किए हैं। घर खरीदने वालों से कथित धोखाधड़ी के मामले में धनशोधन (मनी लॉन्ड्रिंग) की जांच के तहत यह कार्रवाई की गई। ईडी ने 23 मई को दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद और मुंबई में कुल 15 ठिकानों पर छापेमारी की थी। यह कार्रवाई धनशोधन रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) के तहत की गई। जांच एजेंसी ने एक बयान में कहा, जांच में जेएएल, उसकी सहयोगी कंपनियों, प्रमोटर्स और निदेशकों के कार्यालयों और परिसरों को शामिल किया गया। इसके अलावा, जेएएल के गौरसंस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुलशन होम्ज

प्राइवेट लिमिटेड और महागुण रियल एस्टेट प्राइवेट लिमिटेड जैसे मुख्य कारोबारी साझेदारों के ठिकानों पर भी छापे मारे गए। दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) और उत्तर प्रदेश पुलिस ने जेएएल, जेआईएल और उनके प्रमोटर्स, निवेशकों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की थी, जिससे बाद धनशोधन की जांच शुरू हुई। प्राथमिकी में बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी और आपराधिक साजिश के आरोप लगाए गए हैं। इसमें कहा गया है कि जेपी विशटाउन (जेआईएल) और जेपी ग्रीन्स (जेएएल) ने परियोजना में फ्लैट और प्लॉट देने के नाम पर घर खरीददारों और निवेशकों को गुमराह किया और उनसे पैसे निवेश करवाए गए।

रुपए ने लगाई लंबी छलांग, डॉलर के मुकाबले हो गया मजबूत

नई दिल्ली। भारतीय रुपए की मजबूती का दौर लगातार जारी है। रुपए ने अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 40 पैसे की जबरदस्त तेजी दिखाते हुए 85.05 प्रति डॉलर के स्तर को छू लिया। डॉलर की कमजोरी और घरेलू शेयर बाजारों की मजबूती ने इस उछाल में अहम भूमिका निभाई। साथ ही विदेशी निवेश में वृद्धि और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा वित्त वर्ष 2024-25 के लिए सरकार को रिकॉर्ड डिविडेंड देने की घोषणा ने भी रुपए को मजबूती प्रदान की है। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा बाजार में रुपया 85.02 प्रति डॉलर पर खुला और मजबूत होकर 84.98 के स्तर तक पहुंचा। बाद में यह 85.05 प्रति डॉलर पर स्थिर हुआ, जो पिछले सत्र के मुकाबले 40 पैसे की मजबूती को दर्शाता है। रुपया 85.45 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। इस दौरान, छह प्रमुख वैश्विक मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर इंडेक्स 0.34फीसदी गिरकर 98.67 पर आ गया। घरेलू शेयर बाजारों में भी तेजी देखने को मिली, जहां बीएसई सेंसेक्स 630.68 अंक चढ़कर 82,351.76 पर और निफ्टी 187 अंक की बढ़त के साथ 25,040.15 के स्तर पर पहुंच गया।

टॉप 10 की 6 कंपनियों का मार्केट कैप 78 हजार करोड़ गिरा, रिलायंस इंडस्ट्रीज को सबसे ज्यादा नुकसान

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में पिछले कारोबारी सप्ताह के दौरान हुई खरीद-बिक्री के कारण देश की टॉप 10 मोस्ट वैल्यूड कंपनियों में से 6 कंपनियों के मार्केट कैप में 78 हजार करोड़ रुपये से अधिक की गिरावट आ गई। इनमें सबसे अधिक नुकसान रिलायंस इंडस्ट्रीज को हुआ। दूसरी ओर, टॉप 10 में शामिल 4 कंपनियों के मार्केट कैप में 15 हजार करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी हो गई। इनमें सबसे अधिक मुनाफा भारती एयरटेल को हुआ। इस सप्ताह के कारोबार के दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज, टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस), आईसीआईसीआई बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई), इंफोसिस और हिन्दुस्तान यूनिलीवर के मार्केट कैप में 78,166.08 करोड़ रुपये की गिरावट आ गई। दूसरी ओर, भारती एयरटेल, बजाज फाइनेंस, आईटीसी और एचडीएफसी बैंक के मार्केट कैप में 15,946.03 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हो गई। कारोबार के दौरान 19 मई से 23 मई के बीच रिलायंस इंडस्ट्रीज का मार्केट कैप 40,800.40 करोड़ रुपये घट कर 19,30,339.56 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। इसी तरह टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का मार्केट कैप 17,710.54 करोड़ रुपये की गिरावट के साथ 12,71,395.95 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इसके अलावा इंफोसिस का मार्केट कैप 10,488.58 करोड़ रुपये गिर कर 6,49,876.91 करोड़ रुपये के स्तर पर, हिंदुस्तान यूनिलीवर का मार्केट कैप 5,462.80 करोड़ रुपये कम होकर 5,53,974.88 करोड़ रुपये के स्तर पर, आईसीआईसीआई बैंक का मार्केट कैप 2,454.31 करोड़ रुपये घट कर 10,33,868.01 करोड़ रुपये के स्तर पर और स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) का मार्केट कैप 1,249.45 करोड़ रुपये की गिरावट के साथ 7,05,446.59 करोड़ रुपये

के स्तर पर और पहुंच गया। दूसरी ओर, भारती एयरटेल का मार्केट कैप सोमवार से शुक्रवार के कारोबार के बाद 10,121.24 करोड़ रुपये बढ़ कर 10,44,682.72 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इसी तरह बजाज फाइनेंस का मार्केट कैप 4,548.87 करोड़ रुपये बढ़ कर 5,74,207.54 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। इसके अलावा आईटीसी का मार्केट कैप 875.99 करोड़ रुपये की मजबूती के साथ 5,45,991.05 करोड़ रुपये के स्तर पर और एचडीएफसी बैंक का मार्केट कैप 399.93 करोड़ रुपये की तेजी के साथ 14,80,723.47 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। मार्केट कैप के लिहाज से रिलायंस इंडस्ट्रीज 19,30,339.56 करोड़ रुपये के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) के साथ देश की सबसे अधिक मार्केट कैप वाली कंपनी रही। इसके बाद एचडीएफसी बैंक (कुल मार्केट कैप 14,80,723.47 करोड़ रुपये), टीसीएस (कुल मार्केट कैप 12,71,395.95 करोड़ रुपये), भारती एयरटेल (कुल मार्केट कैप 10,44,682.72 करोड़ रुपये), आईसीआईसीआई बैंक (कुल मार्केट कैप 10,33,868.01 करोड़ रुपये), स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (कुल मार्केट कैप 7,05,446.59 करोड़ रुपये), इंफोसिस (कुल मार्केट कैप 6,49,876.91 करोड़ रुपये), बजाज फाइनेंस (कुल मार्केट कैप 5,74,207.54 करोड़ रुपये), हिंदुस्तान यूनिलीवर (कुल मार्केट कैप 5,53,974.88 करोड़ रुपये) और आईटीसी (कुल मार्केट कैप 5,45,991.05 करोड़ रुपये) के नाम सबसे मूल्यवान टॉप 10 कंपनियों के लिस्ट में दूसरे से दसवें स्थान पर बने रहे।

चेहरा धोते समय आप भी तो नहीं कर रहे ये गलतियां, एक्सपर्ट से जानें

फेशवॉस करना डेली रूटीन का एक नॉर्मल प्रोसेस है, लेकिन गर्मी के मौसम में पसीने, धूप और धूल-मिट्टी के कारण चेहरे का निखार कम हो जाता है. चेहरे पर मुंहासे, सनबर्न, खुजली और जलन जैसी समस्याएं भी होने लगती है. ऐसे में दिन में दो से तीन बार फेसवॉश करने से चेहरे की गंदगी साफ होती है लेकिन कई बार लोग सही तरीके से नहीं फेसवॉश नहीं करते हैं जो उनकी समस्याओं को और बढ़ा देता है. स्किन ड्राई और डल होने लगती है. इसलिए बार-बार फेसवॉश करने से बेहतर है कि आप सही तरीके से चेहरे को साफ करें.

चेहरे को सही तरह से धोने से गंदगी और बैक्टीरिया हट जाते हैं, जिसस स्किन प्रॉब्लम्स से बचाव होता है. आप कई बार फेस वॉश सही तरह से नहीं करते हैं या फिर गंदगी को साफ करने या त्वचा में निखार लाने के लिए बार-बार चेहरे को धोते हैं जिससे आपकी स्किन ड्राई हो जाती है. तो चलिए जानते हैं फेस वॉश करने का सही तरीका क्या है.

एक्सपर्ट की राय

डार्मेटोलॉजिस्ट एक्सपर्ट डॉ गरेकर ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर करते हुए बताया है कि फेस वॉश करने का सही तरीका क्या है. उन्होंने बताया कि अगर आप मेकअप करती है तभी आपको डबल क्लीनजिंग की जरूरत है. घर के अंदर रहती हैं तो आपको डबल क्लीनजिंग मेथड से फेस वॉश करने की कोई जरूरत नहीं है.

फेस वॉश करते समय न करें ये गलतियां

डबल क्लीनजिंग मेथेड

डबल क्लीनजिंग मेथड यानि की चेहरे को दो बार धोना. इसमे पहले आप ऑयल बेस्ड क्लीनजंर का इस्तेमाल करते हैं फिर वॉटर बेस्ड क्लीनजंर से फेस को वॉश करते है. पर ये तरीका केवल उनके लिए सही है जो मेकअप करते हैं और धूप में काफी देर बाहर रहते हैं. अगर आप घर पर हैं और मेकअप का ज्यादा इस्तेमाल नहीं करती हैं तो आपको इस तरीके को नहीं अपनाना चाहिए.

देर तक फेस वॉश करना

डार्मेटोलॉजिस्ट एक्सपर्ट डॉ गरेकर अपने वीडियो में बताती है कि चेहरे पर 60 सेकेंड या इससे ज्यादा समय तक फेस वॉश लगाकर रखने का तरीका बिलकुल गलत है. आप केवल 15 से 20 सेकंड के लिए अपने फेस को वॉश करें. इससे ज्यादा फेस वॉश करने से आपकी स्किन ड्राई हो सकती है.साबुन या फेस वॅश का इस्तेमाल सही से करेंडार्मेटोलॉजिस्ट एक्सपर्ट डॉ गरेकर ने बताया कि आप किसी भी फेस वॉश या साबुन का बिना सोचे-समझें इस्तेमाल न करें. आपको अपने स्किन टाइप के हिसाब से ही साबुन या फेस वॉश का यूज करना चाहिए. वरना आपको स्किन प्रॉब्लम्स जैसे एक्ने हो सकते हैं.

बार-बार सनस्क्रीन लगाने के पहले चेहरे को धोना

कई लोग सनस्क्रीन को रिप्लाई करने से पहले फेस वॉश करते हैं. पर हर बार सनस्क्रीन लगाने के पहले फेस वॉश करना जरूरी नहीं है. अगर आप घर के अंदर हैं और ज्यादा गर्मी नहीं तो बार-बार चेहरे को धोकर सनस्क्रीन लगाना जरूरी नहीं है.

सीमित युद्ध से भारत को सीखने होंगे कई सबक

आज समझदारी इसी में है कि युद्ध के कोहरे के बीच क्या सही या गलत हुआ, इस बाबत सभी बाहरी दावों और प्रतिदावों को त्याग दिया जाए। समाचार मीडिया एंकरों और स्व-घोषित अति-राष्ट्रवादियों ने कई (ज्यादातर झूठे) दावे कर गड़बड़ कर दी है। सरकार समर्थक मीडिया ने अपने आकाओं की सेवा में काल्पनिक दावों की ऐसी झड़ी लगा दी जिससे सरकार शर्मिंदा हो सकती है और मीडिया ने खुद को बेकार साबित कर दिया है।पहलगाम में आतंकवादी हत्याओं की निंदा करने और रक्षा बलों को सलाम करने में सारा देश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ खड़ा है। इस घटना के कारण पाकिस्तान पर भारत ने पांच दशकों में इतना सघन हमला किया। भारत की इस कार्रवाई के लिए व्यापक समर्थन आतंकवादियों को खोजने और उन्हें न्याय के कटघरे में लाने के राष्ट्रीय संकल्प को दर्शाता है। फिर भी, यह संकल्प आत्म-प्रशंसा के शोर के एक प्रतिध्वनि कक्ष में उतरने का जोखिम उठाता है जो राष्ट्र को उस गहन विश्लेषण से रोक सकता है।इस संघर्ष में हालांकि कुछ भारतीय उद्देश्यों को हासिल कर लिया गया लेकिन इस स्तर पर यह तर्क देना मुश्किल है कि ऑपरेशन सिंदूर एक बड़ी सफलता थी। भले ही ऑपरेशन में सीमित सफलता मिली है लेकिन इससे मिले सबक असीमित हैं। हमारे पास डेटा की एक खदान है जिसमें राजनीतिक ग्राउंड वर्क, राजनयिक जुड़ाव और योजना, रणनीति या परिचालन मुद्दों के विचारों से लेकर उच्च तकनीक वाले सैन्य हार्डवेयर व अत्याधुनिक प्लेटफार्मों के प्रदर्शन पर समृद्ध युद्ध क्षेत्र डेटा तक शामिल हैं।अगली लड़ाई उन लोगों द्वारा जीती जाएगी जो सैन्य मोर्चे पर इन सीखों पर अच्छी तरह से अमल कर सकते हैं लेकिन सबसे बड़ा सबक विशेष रूप से राजनीतिक मोर्चे पर होगा जहां युद्ध पर बड़े निर्णय लिए जाते हैं। सीखना हमेशा आसान नहीं होता है। उच्चतम राजनीतिक स्तर पर, यह उस रणनीति को चुनौती देता है जिसने हमें मर्दानगी की बातें और युद्ध के नारे दिए, जिसमें चुनावी रैली भी शामिल है, लेकिन युद्ध के समय अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाने के लिए आवश्यक कड़ी मेहनत के कम सबूत मिले. साथ ही, विनम्रता, ईमानदारी और जिज्ञासा की भावना के साथ कठिन सवालों को प्रोत्साहित करने की इच्छा भी होनी चाहिए, जिनमें से कोई भी आत्म-प्रशंसा से मदद नहीं करता है जो गहन जांच को बंद कर देता है।साथ ही अगर हमें इस मुद्दे पर राष्ट्रीय एकता का पूरा लाभ उठाना है तो विपक्ष पर चुनावी शैली के हमलों के बजाय राजनीतिक दलों को अधिक विश्वास-निर्माण करने वाले कदमों के साथ एक साथ लाना होगा।पहलगाम आतंकी हत्याओं के ठीक दो दिन बाद 24 अप्रैल को बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में जब लोकसभा और राज्यसभा में विपक्ष के नेताओं सहित सभी राजनीतिक नेता मौजूद थे, उसमें प्रधानमंत्री के शामिल न होने के फैसले से विश्वास बहाली में कोई मदद नहीं मिली। वह गलत निर्णय पुरानी ढर्रे की नीतियों के आधार पर लिया गया था। विभिन्न देशों की राजधानियों में सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल भेजने का सरकार का निर्णय अलग है। यह दृष्टिकोण में बदलाव का संकेत देता है लेकिन कांग्रेस द्वारा नामित नहीं किए गए शशि थरूर के सूची में शामिल होने पर पैदा हुआ विवाद- एक अनावश्यक चुभन- हमें बताता है कि पुरानी आदतें मुश्किल से छूटती हैं। हम उन पाठों पर वापस आ गए जो सीखे नहीं गए हैं। कांग्रेस पहले ही कह चुकी है कि भाजपा गेम खेल रही है। यह एक ऐसे मुद्दे पर कमजोर भरोसे और खराब राजनीतिक संबंधों में उतरता है जो गहरी राजनीतिक एकता की मांग करता है।जानकारियां जिस तरह से अर्थहीन हो गई है उससे कुछ सबक मिलते हैं। आज समझदारी इसी में है कि युद्ध के कोहरे के बीच क्या सही या गलत हुआ, इस बाबत सभी बाहरी दावों और प्रतिदावों को त्याग दिया जाए। समाचार मीडिया एंकरों और स्व-घोषित अति-राष्ट्रवादियों ने कई (ज्यादातर झूठे) दावे कर गड़बड़ कर दी है। सरकार समर्थक मीडिया ने अपने आकाओं की सेवा में काल्पनिक दावों की ऐसी झड़ी लगा दी जिससे सरकार शर्मिंदा हो सकती है और मीडिया ने खुद को बेकार साबित कर दिया है। यह ऐसे दोस्तों का मामला है जो दुश्मनों से भी बदतर काम कर रहे हैं। मीडिया तब सही तरीके से काम करता है जब सभी प्रकार के विचारों को फलने-फूलने की अनुमति दी जाती है। इसका उदाहरण ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म अमेज़ॅन हैं जहां पर ग्राहक समीक्षाओं का समग्र मूल्यांकन कर नकारात्मक और सकारात्मक प्रतिक्रिया प्रकाशित की जाती है। एकतरफा विचारों से चिह्नित एक पारिस्थितिकी तंत्र सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से उस पक्ष के लिए बुरा है जिसे आगे बढ़ाया जा रहा है। ये प्राथमिक सबक हैं जिन्हें फिर से सीखने की आवश्यकता हो सकती है।युद्ध अंतिम उपाय है। यह भारत कह चुका है और इसे वास्तव में प्रधानमंत्री ने अतीत में व्यक्त किया है। 2022 में कारगिल में प्रधानमंत्री को यह कहते हुए उद्धृत किया गया था- %भारत ने हमेशा युद्ध को अंतिम उपाय के रूप में देखा है, लेकिन राष्ट्र पर बुरी नजर डालने वाले किसी भी व्यक्ति को करारा जवाब देने की ताकत और रणनीति सशस्त्र बलों के पास है%। तो भी जब इस अंतिम उपाय का प्रयोग किया जाता है तो ब्रह्मास्त्र अपनी शक्ति खो सकता है। इसका उसी तरह से फिर से उपयोग या संचालन नहीं किया जा सकता। कम कार्रवाई को हल्के में लिया जाएगा, मजबूत कार्रवाई से अस्वीकार्य स्तर के जोखिम के साथ तेजी से वृद्धि का जोखिम होगा। डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा पहले जल्दबाजी में घोषित किए गए संघर्ष विराम के मद्देनजर यह भारत के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत या पाकिस्तान ने संघर्ष विराम की घोषणा नहीं की थी। भविष्य में इसका क्या मतलब है इसका पूरी तरह से विश्लेषण करने में समय लगेगा। इस बीच, व्हाट्सएप समूहों पर भेजी जा रही कुछ राजनीतिक प्रतिक्रियाओं से बचना चाहिए- एक ने कहा कि %पूर्ण युद्ध% केवल तभी संभव है जब भाजपा 400 सीटें जीते। आतंकी हमले और युद्ध ऐसे मुद्दे नहीं हैं जिन पर किसी को वोट और संसद में सीट मांगनी चाहिए। यह खतरनाक और अपमानजनक है- यह प्रतिक्रिया अति उत्साही, सहानुभूति रखने वालों और पार्टी के समर्थकों से आती है। ये लोग उस पार्टी को अधिक नुकसान पहुंचाते हैं जिसका वे समर्थन करना चाहते हैं।ध्यान दें कि ट्रम्प ने संघर्ष विराम पर बोलते समय भारत और पाकिस्तान को बराबरी का दर्जा दिया। ट्रम्प ने एक ही समय अस्तित्व में आए दो देशों के संबंध में स्वीकृत डी-हाइफ़नेशन को मिटा दिया। (डी-हाइफ़नेशन विदेश नीति का एक रूप है जहां एक देश संघर्ष की स्थिति में किसी एक देश को दूसरे पर प्राथमिकता दिए बिना परस्पर विरोधी हितों वाले दो या दो से अधिक देशों के साथ राजनयिक संबंध रखता है)। दोनों देश बहुत अलग रास्तों पर चले हैं- भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में एक आर्थिक महाशक्ति है जबकि पाकिस्तान एक असफल लोकतंत्र के रूप में है जो आर्थिक अनिश्चितता का सामना कर रहा है। यह री-हाइफ़नेशन खेदजनक तस्वीर है क्योंकि यह भारत को बौना बनाता है, भारत को चीन से स्पर्धा करने वाले और शीघ्र ही चीन की बराबरी पर आने वाले देश के रूप में देखे जाने के बजाय संकुचित और सीमित रखता है।अंत में, पहलगाम में हुई हत्याएं सरकार के उन दावों को खोखला साबित करती हैं कि अनुच्छेद 370 को प्रभावी ढंग से खत्म करने के बाद घाटी में शांति बहाल होगी। वास्तव में कई लोगों ने तब बताया था कि ऐसा होगा लेकिन यह स्थिति स्पष्ट रूप से सामने नहीं आई है। अब हम पूछ सकते हैं कि आतंकवादी इतनी आसानी से हमला कैसे करते हैं, सुरक्षा बल कहां थे, खुफिया जानकारी का स्तर क्या है और जब बार-बार ऐसी हत्याएं होती हैं तो जिम्मेदार लोगों को दोषी क्यों नहीं ठहराया जाता। पहलगाम में निर्दोष लोगों के हत्यारे आज भी खुलेआम घूमते हैं।

इस अल्पकालीन युद्ध से सीखने वाले कई सबक हैं लेकिन ये सबक केवल उन लोगों के लिए उपलब्ध होंगे जो खुद को चुनौती दे सकते हैं और कठिन प्रश्न पूछ सकते हैं।

संपादकीय

पुल बने भाषा

इसमें दो राय नहीं कि भाषाई विविधता रंग-बिरंगे फूलों की तरह भारत की खूबसूरती की वाहक है। वहीं यह विविधता देश की सांस्कृतिक समृद्धि का आधार भी है। यह विडंबना ही है कि राजनीतिक लाभ के लिये क्षेत्रीय भाषा के गौरव के नाम पर हिंदी विरोध का मोर्चा अकसर खोला जाता है। निस्संदेह समय-समय पर उभरने वाले विवाद क्षेत्रीय गर्व और राष्ट्रीय एकता के बीच संतुलन बनाने की चुनौतियों को ही उजागर करते हैं। कुछ समय पहले ऐसे ही विवाद में मराठी को व्यवहार में न अपनाने के आरोप लगाकर एक अधिकारी को थप्पड़ मारने का विवाद सामने आया था। कालांतर भाजपा शासित राज्य में मराठी की अनिवार्यता कामकाज में लागू की गई थी। अब ताजा विवाद कर्नाटक में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के एक प्रबंधक के कन्नड़ में बात करने से इनकार करने पर उठा है। जिसका कहना था कि वह हिंदी भाषी है और हिंदी में वार्तालाप करेगा। इस प्रकरण में अधिकारी का तबादला व खासा विवाद हुआ। स्वाभाविक रूप से क्षेत्रीय भाषा की राजनीति करने वाले राजनीतिक दल खासे सक्रिय हुए। इस बीच जन सेवा में भाषाई संवेदनशीलता के प्रशिक्षण की मांग भी उठी। वैसे भी केंद्रीय सेवाओं के रूप में काम करने वाले विभागों व बैंक आदि के कर्मचारियों व अधिकारियों के विभिन्न राज्यों में अकसर तबादले होते रहते हैं। यह संभव भी नहीं कि हर व्यक्ति हर राज्य की भाषा बोल सके, लेकिन सीधे तौर पर जन-सेवाओं में कार्यरत कर्मचारियों को राज्य की स्थानीय भाषा का ही उपयोग उपभोक्ताओं से सहज संवाद के लिये करना चाहिए। वहीं दूसरी ओर बेंगलुरू में एक तकनीकी पेशेवर को हिंदी में बोलने के कारण पार्किंग की सुविधा से वंचित कर दिया गया। इस घटना ने गैर हिंदी भाषी इलाकों में भाषायी सहिष्णुता की बहस को नये सिरे से खड़ा किया। निश्चित रूप से दोनों ही घटनाएं भाषाई व सांस्कृतिक एकता के लिये चुनौती पेश करती हैं। जिस पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है।

उल्लेखनीय है कि ये घटनाएं राष्ट्रीय शिक्षा नीति यानी एनईपी 2020 के त्रि-भाषा फार्मूले की पृष्ठभूमि में हुई हैं। दरअसल, राष्ट्रीय शिक्षा नीति में छात्रों को तीन भाषाएं सीखने की सलाह दी गई है। जिसमें कम से कम दो भारत की मूल भाषाएं होनी चाहिए। हालांकि, इस शैक्षिक नीति का मकसद बहुभाषावाद और राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देना है,लेकिन तमिलनाडु में इस नीति का प्रतिरोध सामने आया है। राजनीतिक दल इसे हिंदी थोपने और अपनी भाषाई पहचान के लिये खतरा बता रहे हैं। तमिलनाडु में हिंदी को लेकर विरोध की राजनीति का पुराना इतिहास रहा है। खासकर तब से जब हिंदी को राष्ट्रीय भाषा बनाने की कवायद शुरू हुई थी।

हालांकि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति लचीलेपन के साथ इस बात पर जोर देती रही है कि किसी भी राज्य पर कोई भाषा नहीं थोपी जाएगी। इसके साथ यह भी कि भाषाओं के चयन का मुद्दा राज्य, क्षेत्रों और छात्रों पर छोड़ दिया जाएगा। वहीं कतिपय राजनीतिक दल आरोप लगाते रहे हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भाषा का व्यावहारिक क्रियान्वयन एक विवादस्पद मुद्दा है। बहरहाल, इस मुद्दे पर क्षेत्रीय भाषाओं पर इसके प्रभाव और हिंदी के कथित प्रभुत्व को लेकर बहस चल रही है। बहरहाल, इस तर के विवादों से आगे बढ़ने के लिये आपसी सम्मान औ समझ का माहौल बनाने की जरूरत महसूस की जा रह है। सार्वजनिक संस्थानों को यह सुनिश्चित करना चाहि कि उनकी सेवाएं स्थानीय भाषा में उपलब्ध कराई जाए इसके साथ ही कर्मचारियों व अधिकारियों क सांस्कृतिक और भाषाई संवेदनशीलता में प्रशिक्षित किय जाए।

निस्संदेह, शैक्षिक नीतियों को पूरे लचीलेपन क साथ लागू किया जाना चाहिए। जिसमें बहुभाषी दक्षत को बढ़ावा देते हुए क्षेत्रीय प्राथमिकताओं का सम्मा किया जाना चाहिए। निस्संदेह, भारत की भाषाई बहुलत को एक विभाजनकारी कारक के बजाय एक एकीकृ शक्ति के रूप में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। देश क विविध भाषाओं को सहानुभूति और खुलेपन के सा अपनाकर, हम अपने राष्ट्र के ताने-बाने को मजबूत क सकते हैं। साथ ही यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि भाष एक पुल बने, न कि एक बाधा।

किशोरों में बढ़ रही हिंसक प्रवृत्ति गंभीर चुनौती

भारतीय बच्चों में बढ़ रही हिंसक प्रवृत्ति एवं क्रूर मानसिकता चिन्ताजनक है, नये भारत एवं विकसित भारत के भाल पर यह बदनुमा दाग है। पिछले कुछ समय से स्कूली बच्चों में बढ़ती हिंसा की प्रवृत्ति निश्चित रूप से डरावनी, मर्मांतक एवं खौफनाक है। चिंता का बड़ा कारण इसलिए भी है क्योंकि जिस उम्र में बच्चों के मानसिक और सामाजिक विकास की नींव रखी जाती है, उसी उम्र में कई बच्चों में आक्रामकता एवं क्रूर मानसिकता घर करने लगी है और उनका व्यवहार हिंसक होता जा रहा है। कैथल जनपद के गांव धनौरी में दो किशोरों की निर्मम एवं क्रूर हत्या की हृदयविदारक घटना न केवल उद्वेलित एवं भयभीत करने वाली है बल्कि चिन्ताजनक है। चौदह-पंद्रह साल के दो किशोरों की गला रेतकर हत्या कर देना और वह भी उनके हमउम्र साथियों द्वारा, हर संवेदनशील इंसान को हिला देने वाली डरावनी एवं खैफनाक घटना है, जो किशोरों में पनप रहे हिंसक बर्ताव एवं हिंसक मानसिकता का घिनौना एवं घातक रूप है। जिस उम्र में बच्चों को पढ़ाई-लिखाई और खेलकूद में व्यस्त रहना चाहिए, उसमें उनमें बढ़ती आक्रामकता, हिंसा एवं क्रूरता एक अस्वाभाविक और परेशान करने वाली बात है। जाहिर है दसवीं-ग्यारहवीं के छात्रों की क्रूर हत्या हमारे समाज में बढ़ती संवेदनहीनता को भी दर्शाती है। ऐसी कई अन्य घटनाओं में स्कूल में पढ़ने वाले किसी बच्चे ने अपने सहपाठी पर चाकू या किसी घातक हथियार से हमला कर दिया और उसकी जान ले ली। अमेरिका की तर्ज पर भारत के बच्चों में हिंसक मानसिकता का पनपना हमारी शिजैसाकि घटना से संबंधित तथ्यों में बताया गया कि हत्या में शामिल युवक धनौरी गांव के ही थे और कुछ दिन पहले किशोरों को धमकाने उनके घर आए थे। मारे गए किशोरों पर हत्या आरोपियों ने आरोप लगाया था कि वे उनकी बहनों से छेड़खानी करते थे। निश्चय ही ऐसे छेड़खानी के कथित आरोप को नैतिक दृष्टि से अनुचित ही कहा जाएगा, लेकिन उसका बदला हत्या कदापि नहीं हो सकती। यह दुखद है कि एक मृतक किशोर अरमान पांच बहनों का अकेला भाई था। घटना से उपजी त्रासदी से अरमान के परिवार पर हुए वज्रपात को सहज महसूस किया जा सकता है। उनके लिये जीवनभर न भुलाया जा सकने वाला दुख एवं संत्रास पैदा हुआ है। बड़ा सवाल है कि जिन वजहों से बच्चों के भीतर आक्रामकता एवं हिंसा पैदा हो रही है, उससे निपटने के लिए क्या किया जा रहा है? पाठ्यक्रमों का स्वरूप, पढ़ाई-लिखाई के तौर-तरीके, बच्चों के साथ घर से लेकर स्कूलों में हो रहा व्यवहार, उनकी रोजमर्रा की गतिविधियों का दायरा, संगति, सोशल मीडिया या टीवी से लेकर सिनेमा तक उसकी सोच-समझ को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों से तैयार होने वाली उनकी मनःस्थितियों के बारे में सरकार, समाजकर्मी एवं अभिभावक क्या समाधान खोज रहे हैं। बच्चों के व्यवहार और उनके भीतर घर करती प्रवृत्तियों पर मनोवैज्ञानिक पहलू से विचार किए बिना समस्या को कैसे दूर किया जा सकेगा?

बहरहाल, इस हृदयविदारक एवं त्रासद घटना ने नयी बन रही समाज एवं परिवार व्यवस्था पर अनेक सवाल खड़े किये हैं। सवाल नये बन रहे समाज की नैतिकता एवं चरित्र से भी जुड़े हैं। निश्चित ही किसी परिवार की उम्मीदों का यूं कत्ल होना मर्मांतक एवं खौफनाक ही है। लेकिन सवाल ये है कि चौदह-पंद्रह साल के किशोरों पर यूं किन्हीं लड़कियों को छेड़ने के आरोप क्यों लग रहे हैं? पढ़ने-लिखने की उम्र में ये सोच कहां से आ रही है? क्यों हमारे अभिभावक बच्चों को ऐसे संस्कार नहीं दे पा रहे हैं ताकि वे किसी की बेटी व बहन को यूं परेशान न करें? क्यों लड़कियों से छेड़छाड़ की अश्लील एवं कामूक घटनाएं बढ़ रही है। क्या हमारी शिक्षा व्यवस्था में नैतिक शिक्षा का वह पक्ष उपेक्षित हो चला है, जो उन्हें ऐसा करने से रोकता है? क्या शिक्षक छात्रों को सदाचारी व नैतिक मूल्यों का जीवन जीने की प्रेरणा देने में विफल हो रहे हैं? हत्या की घटना हत्यारों की मानसिकता पर भी सवाल उठाती है कि उन्होंने क्यों सोच लिया कि छेड़खानी का बदला हिंसा एवं क्रूरता से गला काटना हो सकता है? धनौरी की घटना के पूरे मामले की पुलिस अपने तरीके से जांच करेगी, लेकिन किशोर अवस्था में ऐसी घटना को अंजाम देने के पीछे बच्चे की मानसिकता का पता लगाना भी ज्यादा जरूरी है। दरअसल, दशकों तक बॉलीवुड की हिंदी फिल्मों ने समाज एवं विशेषतः किशोर पीढ़ी में जिस अपसंस्कृति का प्रसार किया, आज हमारा समाज उसकी त्रासदी झेल रहा है। इसमें दो राय नहीं कि किशोरवय में राह भटकने का खतरा ज्यादा रहता है। अब तक हिन्दी सिनेमा से समाज के किशोरवय और युवाओं में गलत संदेश गया कि निजी जीवन में छेड़खानी ही प्रेम कहानी में तब्दील हो सकती है। हमारे टीवी धारावाहिकों की संवेदनहीनता ने गुमराह किया है। बॉक्स आफिस की सफलता और टीआरपी के खेल ने मनोरंजक कार्यक्रमों में ऐसी नकारात्मकता एवं हिंसक प्रवृत्ति भर दी कि किशोरों में हिंसक एवं अराजक सोच पैदा हुई। इंटरनेट के विस्तार और सोशल मीडिया के प्रसार से स्वच्छंद यौन व्यवहार का ऐसा अराजक एवं अनियंत्रित रूप सामने आया कि जिसने किशोरों व युवकों को पथभ्रष्ट एवं दिग्भ्रमित करना शुरू कर दिया। आज संकट ये है कि हर किशोर के हाथ में आया मोबाइल उसे समय से पहले वयस्क बना रहा है। जिस पर न परिवार का नियंत्रण है और न ही शिक्षकों का। 'मन जो चाहे वही करो' की मानसिकता वहां पनपती है जहां इंसानी रिश्तों के मूल्य समाप्त हो चुके होते हैं, जहां व्यक्तिवादी व्यवस्था में बच्चे बड़े होते-होते स्वछन्द हो जाते हैं। अर्थप्रधान दुनिया में माता-पिता के पास बच्चों के साथ बिताने के लिए समय ही नहीं बच पा रहा।

आज किशोरों एवं युवाओं को प्रभावित करने वाले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म व नये-नये एप पश्चिमी अपसंस्कृति से संचालित हैं। इन पर अश्लीलता और यौन-विकृतियों वाले कार्यक्रमों का बोलबाला है। ऐसे कार्यक्रमों की बाढ़ हैं जिनमें हमारे पारिवारिक व सामाजिक रिश्तों में स्वच्छंद यौन व्यवहार को हकीकत बनाने का खेल चल रहा है। पारिवारिक एवं सामाजिक उदासीनता एवं संवादहीनता से ऐसे बच्चों के पास सही जीने का शिष्ट एवं अहिंसक सलीका नहीं होता। वक्त की पहचान नहीं होती। ऐसे बच्चों में मान-मर्यादा, शिष्टाचार, संबंधों की आत्मीयता, शांतिपूर्ण सहजीवन आदि का कोई खास ख्याल नहीं रहता। भौतिक सुख-सुविधाएं एवं यौनाचार ही जीवन का अंतिम लक्ष्य बन जाता है। भारतीय बच्चों में इस तरह का एकाकीपन उनमें गहरी हताशा, तीव्र आक्रोश और विषैले प्रतिशोध का भाव भर रहा है। वे मानसिक तौर पर बीमार बन रहे हैं, वे आत्मघाती-हिंसक बन रहे हैं और अपने पास उपलब्ध खतरनाक एवं घातक हथियारों का इस्तेमाल कर हत्याकांड कर बैठते हैं।ऑस्ट्रिया के क्लागेनफर्ट विश्वविद्यालय की ओर से किशोरों पर किए गए अध्ययन में पता चला है कि दुनिया भर में 35.8 प्रतिशत से ज्यादा किशोर मानसिक तनाव, अनिद्रा, अकारण भय, पारिवारिक अथवा सामाजिक हिंसा, चिड़चिड़ापन अथवा अन्य कारणों से जूझ रहे हैं। एकाकीपन बढ़ने से वे ज्यादा आक्रामक और विध्वंसक सोच की तरफ बढ़ने लगे हैं। मोबाइल व कथित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बह रहे नीले जहर से किशोर अराजक यौन व्यवहार एवं हिंसक प्रवृत्तियों की तरफ उन्मुख हुए हैं। किशोरों को समझाने वाला कोई नहीं है कि यह रास्ता आत्मघात का है। आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड व ब्रिटेन जैसे देश किशोरों को मोबाइल से दूर रखने हेतु कानून बना रहे हैं। हमारे देश में भी शीर्ष अदालत ने समय-समय पर ऐसी घटनाओं पर तल्ख टिप्पणियां की हैं। क्या इन दर्दनाक घटनाओं से हमारे अभिभावकों, समाज-निर्माताओं एवं हमारे सत्ताधीशों की आंख खुलेगी? बच्चों से जुड़ी हिंसा की इन वीभत्स एवं त्रासद घटनाओं से जिन्दगी सहम गयी है। हमें मानवीय मूल्यों के लिहाज से भी विकास एवं नयी समाज-व्यवस्था की परख करनी होगी। बच्चों के भीतर हिंसा मनोरंजन की जगह ले रही है। इसी का नतीजा है कि छोटे-छोटे स्कूली बच्चे भी अपने किसी सहपाठी की हत्या तक कर रहे हैं। बच्चों के व्यवहार और उनके भीतर घर करती प्रवृत्तियों पर मनोवैज्ञानिक पहलू से विचार किए बिना समस्या को कैसे दूर किया जा सकेगा?

जिंदगी से जुड़ी फील्ड है एनवायरनमेंटल साइंस

एनवायरनमेंटल साइंस ऊर्जा को बचाने, बायोडायवर्सिटी, क्लाइमेट चेंज, ग्राउंड वॉटर आदि के अध्ययन वाला विषय है. एकेडमिक तौर पर देखें तो एनवायरनमेंटल साइंस का दायरा काफी व्यापक है और इस कोर्स में अध्ययन के दौरान सिर्फ भौतिकी या बायोलॉजिकल साइंस का ही नहीं बल्कि इकोलॉ जी, भौतिकी, रसायन विज्ञान, बायोलॉजी और ज्योलॉजी का भी अध्ययन किया जाता है.

पर्यावरण हमारी जिंदगी में अहम भूमिका निभाता है. चाहे बात खाने के अनाज की हो, रहने के लिए घर की हो, पहनने के लिए कपड़े की हो या फिर पानी, सूर्य की रोशनी, हवा की हो. सभी कुछ इसी पर्यावरण पर निर्भर करता है. इसलिए जब पर्यावरण को नुकसान पहुंचता है तो उसका कहीं न कहीं प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है. औद्योगिक विकास की रफ्तार ने पर्यावरण को लीलने का काम किया है. यही कारण है कि सभी का ध्यान इस ओर गया है. ऐसे में, एनवायरनमेंटल साइंस से जुड़े लोगों की मांग काफी बढ़ गई है. मूल रूप से एनवायरनमेंटल साइंस ऊर्जा को बचाने, बायोडायवर्सिटी, क्लाइमेट चेंज, ग्राउंड वॉटर आदि के अध्ययन वाला विषय है. एकेडमिक तौर पर देखें तो एनवायरनमेंटल साइंस का दायरा काफी व्यापक है और इस कोर्स में अध्ययन के दौरान सिर्फ भौतिकी या बायोलॉजिकल साइंस का ही नहीं बल्कि इकोलॉ जी, भौतिकी, रसायन विज्ञान, बायोलॉजी और ज्योलॉजी का भी अध्ययन किया जाता है.

एनवायरनमेंटल साइंस के अध्ययन की बात पहली बार 1977 में स्टॉकहोम में हुई कांफ्रेंस में सामने आई थी. औद्योगिक विकास की अंधी दौड़ में आज जिस तरह पर्यावरण को नुकसान पहुंच रहा है, वह किसी से अछूता नहीं है. ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन से लेकर ग्लेशियर के पिघलने या फिर पर्यावरण प्रदूषण आदि का मामला सभी कुछ इसी से जुड़ा हुआ है. आज के दौर में सरकार से लेकर स्वयंसेवी संगठन तक सभी पर्यावरण को लेकर जागरूक हो रहे हैं. एनवायरनमेंटल साइंस से संबंधित कोर्स यानी ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट करने वाले छात्र कंस्ट्रक्शन, केमिकल, मैन्युफैक्चरिंग और एनर्जी के फील्ड में करियर बना सकते हैं. इसके अलावा और भी कई फील्ड हैं जहां इससे संबंधित डिग्री हासिल करने वाले छात्र करियर को नई मंजिल तक पहुंचा सकते हैं.

एनवायरनमेंटल साइंटिस्ट

इससे जुड़े लोग वातावरण पर मनुष्यों द्वारा पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करते हैं. वे टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट को लेकर शोध करते हैं और एनवायरनमेंटली फ्रेंडली प्रैक्टिस को लेकर संबद्ध संस्थानों को सुझाव भी देते हैं.

एनवायरनमेंटल इंजीनियर्स

इस फील्ड से जुड़े लोग वास्ट मैनेजमेंट, लीन मैन्युफैक्चर, रिसाइक्लिंग, इमिशन कंट्रोल, इनवायरेनमेंटल सस्टेनेबिलिटी और पब्लिक हेल्थ मामलों का अध्ययन करते हैं.

एनवायरनमेंटल लॉबिस्ट

ये सरकारी अधिकारियों, नेताओं और संबंधित स्वयंसेवी संस्थानों को पर्यावरण मामलों और नीतियों की जानकारी देते हैं.

एनवायरनमेंटल एजुकेटर

इससे जुड़े लोग एनवायरनमेंटल साइंस या फिर इससे संबंधित विषयों यानी इकोलॉजी या हाइड्रोलॉजी छात्रों को पढ़ाते हैं. इसके अलावा, एनवायरनमेंटल बायोलॉजिस्ट, एनवायरनमेंटल मॉडलर्स, एनवायरनमेंटल जर्नलिस्ट या पर्यावरण से संबंधित तकनीकविदों की तरह भी कार्य कर सकते हैं.

वेतन - एनवायरनमेंटल साइंस में बैचलर डिग्री करने वाले छात्रों को आसानी से 15-30 हजार रुपये मासिक की नौकरी मिल जाती है. जिन्होंने इस विषय में पोस्ट ग्रेजुएट किया है, उन्हें कम से कम 35-50 हजार रुपये मासिक तौर पर तो मिलते ही हैं. जो लोग पीएचडी करने के बाद बतौर साइंटिस्ट या कंसल्टेंट कार्य करते हैं, उनका वेतन शुरुआत में 50-75 हजार रुपये के बीच होता है.

संस्थान - अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, यूपी दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, दिल्ली डिपार्टमेंट ऑफ एनवायरनमेंटल बायोलॉजी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली गुरु गोविंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली स्कू ल ऑफ एनवायरनमेंटल साइंसे ज, जेएनयू, नई दिल्ली पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, यूपी चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, यूपी गुरुकल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, यूपी बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, यूपी

हस्तनिर्मित कागज उद्योग फलता-फूलता रोजगार

भारत में हस्तनिर्मित कागज उद्योग का इतिहास बहुत पुराना है। मुगल काल से इसके प्रमाण मिलते हैं। यह उद्योग भारत के सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें सबसे खास बात यह है कि यह उद्योग अपशिष्ट पदार्थ को रिसाइकिलिंग प्रणाली द्वारा उच्चकोटि के कागज में तब्दील कर देता है। इसके अलावा, इसमें कम खर्च में अधिक लोगों को रोजगार दिया जाता है। असम, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश एवं नगालैंड जैसे राज्यों में हस्तनिर्मित कागज के उद्योग खूब फल फूल रहा है। जबकि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों के लगभग 10-15 हजार लोग इस व्यवसाय से जुड़े हुए हैं।

शैक्षिक योग्यता की दरकार

इस रोजगार को प्रारंभ करने से पहले यदि आप प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण होना बहुत जरूरी है। प्रशिक्षण के पश्चात आप विशेष योग्यता से लैस हो जाएंगे, बल्कि रोजगार से संबंधित बारीकियां भी आपको मालूम हो सकेंगी। यदि आपके पास इस व्यवसाय से संबंधित जानकारी पहले से ही मौजूद है तो पांचवीं की डिग्री भी महत्वपूर्ण है यानी आपको सिर्फ साक्षर होना आवश्यक है। उम्र-सीमा 18 वर्ष से कम न हो।

संबंधित पाठ्यक्रम

इसमें मुख्यत- हैंडमेड पेपर में सर्टिफिकेट कोर्स (एक से दो सप्ताह), पेपर कंजरवेशन कोर्स (दो माह), इंटरप्रिन्योरशिप कोर्स (दो माह) तथा हैंडमेड पेपर में एडवांस कोर्स (एक वर्ष) आदि शामिल हैं।

फीस एवं प्रशिक्षण अवधि

यदि आप प्रशिक्षण खादी ग्राम उद्योग कमीशन (केवीआईसी) से प्राप्त करते हैं तो आपको सिर्फ 200 रुपए मामूली फीस में प्रशिक्षण मिल सकता है। जबकि प्रशिक्षण अवधि 2-3 हफ्तों की होती है। इस दौरान प्रशिक्षु को अपशिष्ट पदार्थों को रिसाइकिल कर आकर्षक कागज में परिवर्तित करने की कला सिखा दी जाती है। रिसाइकिलिंग में टेलर कटिंग, होजरी कटिंग तथा छोटे-छोटे टुकड़ों के सहारे उच्चकोटि के उपयोगी पेपर तैयार किए जाते हैं।

खर्च एवं सुविधा

हस्त निर्मित कागज उद्योग का यूनिट लगाने में कम से कम 40-70 हजार रुपए की लागत आती है। प्रारंभ में यह जरूरी है कि यूनिट छोटी ही लगाई जाए। बाद में सफल होने तथा डिमांड अधिक होने पर यूनिट की क्षमता इच्छानुसार बढ़ा सकते हैं। इस रोजगार के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय ने किसी भी व्यक्ति को प्रोजेक्ट के क्रियान्वयन के लिए अधिकतम 25 लाख रुपए तक के ऋण का प्रबंध किया है। इसके साथ ही महिलाओं, अनुसूचित जातियों, जनजातियों और पिछड़े वर्ग के विकलांगों को दिए गए कर्ज में 30 फीसदी की सब्सिडी मिलती है।

प्रशिक्षण दिलाने वाले संस्थान

ऐसे कई संस्थान हैं जो अपने यहां से हस्तनिर्मित कागज से जुड़ा प्रशिक्षण दिलाते हैं-

- खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग (गांधी दर्शन), राजघाट, नई दिल्ली-110002 (संस्थान का पूरे भारत में कई जगह प्रशिक्षण केंद्र मौजूद)
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद मल्टी डिस्प्लीनरी ट्रेनिंग सेंटर, खादी एवं विलेज इंडस्ट्रीज कमीशन, शेखपुरा, पटना-14
- कुमारप्पा नेशनल हैंडमेड पेपर इंस्टीटच्यूट, सांगानेर, राजस्थान-302022

टूरिज्म गाइड, मेहनती युवाओं के लिए बढ़िया करियर ऑपशन

पर्यटन आज सांस्कृतिक पहचान पुख्ता करने के साथ रेवेन्यू अर्जित करने का भी जरिया बन रहा है. ऐसे में स्थानीय सरकारें देश में पर्यटन को बढ़ावा देने की पुरजोर कोशिश कर रही हैं. भारतीय गांवों की सैर विदेशी पर्यटकों के लिए किसी रोमांच से कम नहीं है. यहां के घर, बच्चों के खेल, महिलाओं का ओढना-पहनना, खेत-खलिहान, दैनिक गतिविधियां, अर्थव्यवस्था आदि उन्हें इतने आकर्षित करते हैं कि पर्यटक महीनों यहां डेरा डाले रहते हैं.

टूरिस्ट गाइड का कार्य

किसी भी देश की सामाजिक, सांस्कृतिक परंपराओं से पर्यटकों को अवगत कराने में टूरिस्ट गाइड की भूमिका महत्वपूर्ण होती है. टूरिस्ट गाइड पर्यटकों के साथ रहकर उन्हें जाने-अनजाने और अनछुए पहलुओं से वाकिफ कराते हैं. यही वो कारण है जिसके चलते आज टूरिस्ट गाइड एक आकर्षक कॅरियर विकल्प के तौर पर अपनी जगह बना चुका है. संबंधित देश के टूरिस्ट गाइड राज्य क्षेत्र की भौगोलिक जानकारी के साथ-साथ सांस्कृतिक, ऐतिहासिक पर्यटन संबंधी जानकारी रखने के साथ ट्रेवल एजेंसी और बड़े-बड़े होटलों की जानकारी रखते हैं. देश में टूरिस्ट गाइड के लिए भारतीय पर्यटन और ट्रेवल विभाग से टूरिस्ट गाइड का लाइसेंस लेना होता है. लाइसेंस प्राप्त करने के लिए परीक्षा उत्तीर्ण करनी पड़ती है.

कोर्स और क्वालिफिकेशन - देश के अलग-अलग संस्थान टूरिज्म ट्रैवल एडमिनिस्ट्रेशन एंड मैनेजमेंट में शॉर्ट टर्म डिप्लोमा कोर्स संचालित करते हैं, जिसमें इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रैवल एंड टूरिज्म (आईआईटीएम) सबसे खास है, तो वहीं संबंधित राज्य व केंद्र सरकारों के पर्यटन विभाग भी टूरिस्ट गाइड ट्रेनिंग कोर्स आयोजित करते हैं. जिन्हें पास करने पर आपको सर्टीफाइड गाइड का लाइसेंस मिलता है. टूरिज्म के क्षेत्र में करियर बनाने के इच्छुक युवाओं के लिए जरूरी है कि वे इस क्षेत्र में औपचारिक शिक्षा भी ग्रहण करें. देश में विभिन्न संस्थान एवं विश्वविद्यालय टूरिज्म में डिप्लोमा, बैचलर डिग्री एवं मास्टर्स डिग्री प्रदान करते हैं. डिप्लोमा कोर्स की अवधि अमूमन एक वर्ष होती है, जिसे ग्रेजुएशन के बाद किया जा सकता है. आईसीसीआर इस क्षेत्र में जूनियर फेलोशिप भी प्रदान करता है.

कॅरियर ऑप्शन - स्थानीय पर्यटन उद्योग, राष्ट्रीय पर्यटन उद्योग, होटल इंडस्ट्री, टैवल एजेंसी, एविएशन, कार्गो ऑपरेशन, हॉस्पिटेलिटी आदि में टूरिस्ट गाइड के लिए अवसर बाट जोह रहे हैं. टूरिज्म उद्योग के विस्तार से टूरिस्ट गाइड का स्कोप बढ़ा है. मेहनती, कुशल और ईमानदार युवा चाहें तो भारत की संपन्न विरासत से अपने लिए समृद्ध भविष्य की राह खोज सकते हैं. भारत सरकार भी अब ग्रामीण पर्यटन को बढावा देने के लिए कदम उठा रही है. पर्यटन मंत्रालय के अनुसार पिछले वर्ष देश भर में 66 लाख विदेशी सैलानी आए, जिनसे करीब 17.75 अरब डॉलर की कमाई हुई. मंत्रालय ने प्रत्येक वर्ष इनकी संख्या में 12 फीसदी बढोत्तरी का लक्ष्य रखा है ताकि वर्ष 2016 तक पर्यटन से विदेशी मुद्रा की कमाई दोगुनी की जा सके. स्किल्ड युवाओं के लिए इस फील्ड में संभावनाओं के असीमित द्वार हैं.

क्यों जरूरी है अपनी स्किल्स में इजाफा करना?

आप करियर के उस मुकाम पर खड़े हैं, जहां सोचते हैं कि अगले दस सालों में आप क्या करने जा रहे हैं? क्या कभी इस बात का भी अफसोस होता है कि आपने पढ़ाई के दौरान अलग-अलग विषयों का चुनाव क्यों नहीं किया, ताकि कुछ और पढ़ने या किसी दूसरी दिशा में करियर बनाने के बारे में सोच पाते? यदि इन प्रश्नों का उत्तर हां है तो यह समय है अपने पास मौजूद विकल्पों पर गंभीरता से विचार करने का। खुद की स्किल्स में निवेश करके अपने आप को आगे बढ़ाने का, री-स्किलिंग का।

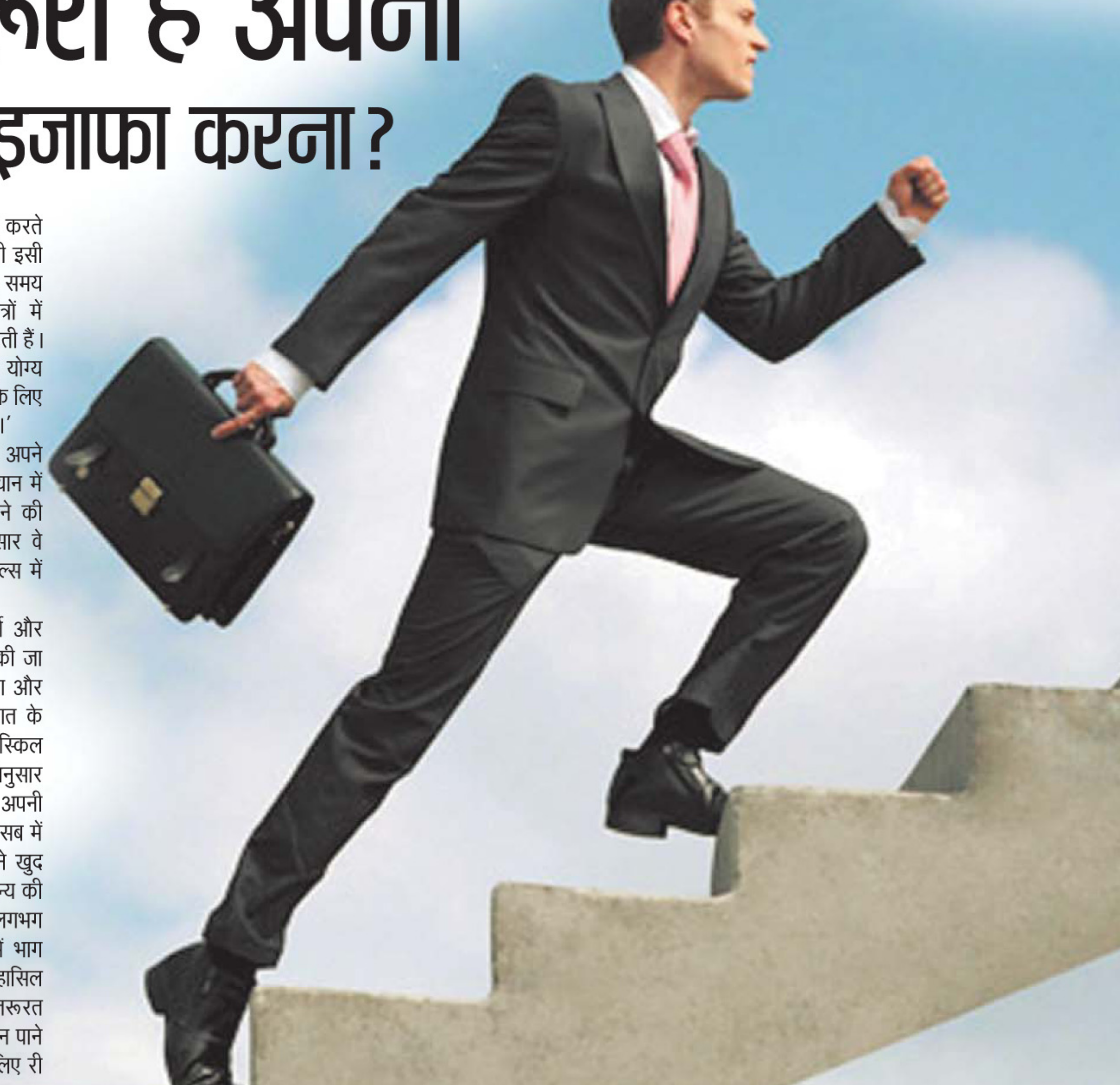

क्या है स्किल्स में इजाफा करना?

शब्दकोष में री-स्किलिंग का अर्थ होगा, वह प्रशिक्षण और अनुभव, जिसके जरिए नई और बेहतर स्किल्स की जानकारी मिलती है। करियर में किसी उम्मीदवार में नई स्किल्स हासिल करने, सीखने और खुद को बदलने की क्षमता और इच्छा का होना बेहद अहम गुण माना जाता है। यह दूरदर्शिता होना कि करियर को आगे ले जाने के लिए किन स्किल्स की जरूरत होगी और उस दिशा में कदम बढ़ाना किसी उम्मीदवार के करियर को आगे ले जाने में मदद करता है। आईआईएम-बेंगलुरु में चाइनीज बिजनेस लैंग्वेज कोर्स पढ़ाने वाले प्रो. एस स्वामीनाथन कहते हैं, 'अपनी स्किल्स में इजाफा करने का अर्थ सक्रिय होकर केवल नई स्किल सीखना भर नहीं है। यह नौकरी से ब्रेक लेकर उच्च शिक्षा की ओर कदम बढ़ाना भी हो सकता है। उदाहरण के लिए कई आईआईएम केंद्रों में मंडारिन एक लोकप्रिय लैंग्वेज कोर्स बन कर उभरा है। वर्तमान में भारत-चीन एक-दूसरे से व्यापारिक रिश्तों को नकार नहीं सकते। विश्व अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान हासिल करने के लिए इस दिशा में कदम बढ़ाना जरूरी भी होगा। ऐसे में चाइनीज बिजनेस कोर्स की मदद से विद्यार्थी दोनों देशों में बन रहे आर्थिक समीकरणों में अपनी सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं।'

कॉलेज के दौरान लिए गए विषय निश्चित तौर पर पसंदीदा जॉब हासिल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, पर ऐसे भी मामले मिलते हैं, जहां लोग संयोगवश दूसरे क्षेत्रों में करियर बना बैठते हैं या फिर अपने करियर के दौरान ऐसे फंस जाते हैं, जहां उनके लिए समझना मुश्किल हो जाता है कि अब वे किस ओर कदम बढ़ाएं। दो से तीन वर्ष नौकरी कर चुकने वाले विशेषज्ञता प्राप्त उम्मीदवार और बड़े अधिकारी भी यह मानते हैं कि बदलावों से गुरेज करना और अपनी स्किल्स को बढ़ाने का प्रयास न करना एक स्तर पर आकर उम्मीदवार की प्रगति को बाधित कर देता है। जिस तेजी से कार्यस्थल और उनकी नीतियां बदल रही हैं, यह पहले से भी जरूरी हो गया है कि उम्मीदवार खुद को उपयोगी बनाने की दिशा में कदम बढ़ाए। थोलोंस ग्लोबल इंस्टीट्यूट में एमडी अंकिता वशिष्ठ के अनुसार, 'जॉब मार्केट में खुद को रोजगार योग्य और उपयोगी बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। वर्कप्लेस पर बढ़ती विविधता और नित बदलती तकनीक ने कर्मचारियों पर नई तकनीक और कार्य प्रणाली को सीखने का दबाव बनाया है। उदाहरण के लिए, यदि कोई नई तकनीक मसलन बिग डाटा और एनालिटिक्स में करियर बनाना चाहता है तो उसके लिए स्टैटिस्टिक्स में क्रैश कोर्स करना फायदेमंद हो सकता है।

एक परंपरागत मार्केटिंग व्यक्ति के लिए डिजिटल मार्केटिंग में अनुभव बढ़ाना लाभप्रद रहेगा। इसी तरह अन्य उम्मीदवार खुद को किसी ऑनलाइन कोर्स या डेवलमेंट प्रोग्राम से भी जोड़ सकते हैं।' ग्लोबल रिक्रूटमेंट फर्म केली सविर्सेज के हालिया अध्ययन के अनुसार विश्व परिदृश्य की तुलना में एशिया-प्रशांत क्षेत्र में बड़े स्तर पर कर्मचारी तेजी से उभरते बाजार में अपनी स्किल्स में इजाफा करने की इच्छा जता रहे हैं। 69% भारतीय कर्मचारी आगे बढ़ने के लिए उच्च शिक्षा और प्रशिक्षण हासिल करने के बारे में गंभीरता से सोच रहे हैं। यह संख्या यूरोप और अमेरिका की तुलना में अधिक है। पहले बैंकों में नौकरी में उन्हीं लोगों को रखा जाता था, जो पहले बैंक में नौकरी करते रहे हैं। इसी तरह एफएमसीजी कंपनियां भी इसी क्षेत्र के अनुभव को वरीयता देती थीं। पर वह समय बीत गया है। आज कंपनियां विविध क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखने वालों को रखना पसंद करती हैं। यानी गतिशील बाजार में खुद को रोजगार योग्य बनाने व उच्च पदों को कुशलता से संभालने के लिए प्रशिक्षण हासिल करने की जरूरत होगी ही।'

रोचक तथ्य - 57 प्रतिशत प्रतिभागियों ने अपने वर्तमान नियोक्ता के पास ही पदोन्नति को ध्यान में रखते हुए अपनी स्किल्स में इजाफा करने की इच्छा जतायी। वहीं 47 प्रतिशत के अनुसार वे दूसरी कंपनी में जाने के लिए अपनी स्किल्स में इजाफा करना पसंद करेंगे।

70 प्रतिशत के अनुसार सबसे महत्वपूर्ण और उपयोगी स्किल नौकरी करते हुए हासिल की जा सकती है। उसके बाद 58 प्रतिशत ने शिक्षा और प्रशिक्षण को जरूरी बताया है। 26 प्रतिशत के अनुसार सेमिनार और वेबिनार से भी नई स्किल सीखने में मदद मिलती है। 42 प्रतिशत के अनुसार वे किसी नए कार्यक्षेत्र में जाने के लिए अपनी स्किल्स में इजाफा करना पसंद करेंगे। इन सब में गणित, इंजीनियरिंग और आईटी कर्मियों ने खुद को आगे बढ़ाने के लिए री-स्किलिंग को अन्य की अपेक्षा अधिक महत्व दिया है। 31 देशों से लगभग 1 लाख 20 हजार कर्मियों ने इस सर्वे में भाग लिया। अमेरिका में उम्मीदवारों ने प्रमोशन हासिल करने के लिए प्रशिक्षण हासिल करने की जरूरत जतायी। वहीं कुछ देशों में कर्मियों ने प्रमोशन पाने और नए नियोक्ता के यहां नौकरी पाने के लिए री स्किलिंग को जरूरी बताया।

आमतौर पर लोग सोचते हैं कि डायबिटीज सिर्फ ब्लड शुगर प्रॉब्लम है लेकिन ये सच नहीं है। डायबिटीज के कारण नर्व और ब्लड वैसल्स डैमेज हो जाती हैं और यदि न्यूरोपैथी विकार विकसित हो जाएं तो आपके पैरों को भी नुकसान पहुंचता हैं ऐसे में जरूरी है कि डायबिटीक मरीज समय रहते पैरों की देखभाल करें। जानिए, डायबिटीज मरीज कैसे पैरों को स्वस्थ रख सकते हैं

डाटबिटीज है तो पैरों का रखें खास ख्याल

आरामदायक फुटवियर

सबसे पहले तो मरीजों को आरामदायक फुटिवयर्स पहनने चाहिए। जूते हो या स्लीपर्स ओवरफीटिंग नहीं होनी चाहिए। कई बार जूते हल्के से टाइट होते हैं तो लोग उनके ढीले होने का इंतजार करते हैं. लेकिन डायबिटीज मरीज ये गलती ना करें।

आप पैरों को नमक या डिटोल के पानी में डालकर कुछ देर पर भिगोकर रखें या फिर आप हल्के गुनगुने पानी में पैरों को 20 मिनट तक डूबोकर रख सकते हैं। इसके बाद हल्के हाथों से पैरों की स्क्रबिंग करें। इससे डेड सेल्स भी खत्म होंगे और त्वचा नरम होगी। स्क्रबिंग के बाद पैरों की ऑयलिंग करें। यदि आप तेल का इस्तेमाल नहीं करना चाहते तो मॉश्चराइजर लगाएं। पैरों की नमी बरकरार रखने के लिए आप दिन में कई बार मॉश्चराइजर का इस्तेमाल कर सकते हैं।

पैरों की देखरेख

रोजाना पैरों को चैक करें। आप चाहे तो पैरों को चैक करने के लिए शीशे का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। आप रोजाना चैक करें कि पैरों में कोई दरार या स्क्रैच या चोट तो नहीं पैरों को दबा-दबा कर देखें कहीं कोई दर्द तो नहीं। इससे आप समय रहते पैरों की होने वाली समस्या से बच सकते हैं. यदि पैरों में कोई प्रॉब्लम है तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें और समय रहते इलाज करवाएं।

डायबिटीज के कारण डायबिटीक न्यूरोपैथी (मधुमेह स्नायुरोग) विकार हो जाता है जिसमें पैर सुन्न हो जाते हैं. ऐसे में पैरों पर कोई दरार पड़ती है या कट लगता है तो मरीज को उसके बारे में समय रहते नहीं पता चलता।

विशेषज्ञों का कहना है कि सबसे पहले तो आपको ये पता होना चाहिए कि डायबिटीज मरीजों को पैरों की देखभाल क्यों करनी चाहिए? उनके मुताबिक, डायबिटीज के कारण जब नर्व डैमेज होती हैं तो पैरों पर उसका बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

एक अन्य विशेषज्ञ के मुताबिक, डायबिटीज होने से शरीर में ब्लड सर्कुलेशन सही से नहीं हो पाता. नतीजन, इलाज के दौरान मरीज को यदि कोई ड्रग या दवाएं दी जाएं तो उनका असर भी कम हो जाता है. ऐसे में जरूरी है कि पैरों की देखभाल समय रहते कर लें। इतना ही नहीं, पैरों से जुड़ी कोई भी समस्या यदि ब्लड वैसल्स के संपर्क में जाए तो इस प्रॉब्लम को नियंत्रित करना और भी ज्यादा मुश्किल हो जाता है। मरीज को यदि कोई इंफेक्शन हो गया या फिर कोई इंजरी हुई है तो उसको आसानी से पता नहीं चल पाता। कई बार पैरों में समस्या इतनी बढ़ जाती है कि पैर काटने तक की नौबत आ सकती है।

एसएसओ का फंडा अपनाएं

अगर डायबिटीज मरीज एसएसओ फंडा अपनाएंगे तो पैर स्वस्थ रहेंगे और सेल्स डैड नहीं होंगे। साथ ही ना तो दरार पड़ेंगी और ना ही इंफेक्शन होने का डर होगा. एसएसओ यानी सोख, स्क्रबिंग और ऑयलिंग।

कई बार चलते हुए पैर में मोच आ जाती है या बैलेंस बिगड़ जाता है तब भी डायबिटीज मरीजों को किसी चोट का अहसास तक नहीं होता. यदि मोच आ भी गई तो कितना दर्द है या कितनी तेज पैर में लगी है इसका भी उन्हें अहसास नहीं हो पाता।

कई बार नए फुटिवयर्स पहनने से पैरों में छाले पड़ जाते हैं या दर्द होने लगता है. ऐसी स्थिति में अपने फुटिवयर्स तुरंत बदल लें। फुटवयर्स खरीदते समय ध्यान रखें कि अंदर का सोल नरम होना चाहिए और नीचे का हिस्सा हाड. 'इससे पैरों की अच्छी तरह से देखभाल होगी।

ब्रेन सेल्स बचानी हैं तो करें चीनी कम

-ज्यादा मिठास मस्तिष्क की कोशिकाओं को नष्ट कर व्यवहार और याद्दाश्त पर बुरा असर डालती है

-50 ग्राम यानी 12 चम्मच से अधिक चीनी का इस्तेमाल मस्तिष्क की कार्यपण्राली को प्रभावित करता है

नई दिल्ली। ज्यादा चीनी खाने से मोटापा बढ़ने की बात तो आमतौर पर सभी जानते हैं, लेकिन हाल ही में हुए एक अध्ययन में पता चला है कि चीनी की ज्यादा मात्रा मस्तिष्क की कोशिकाओं को नष्ट कर याद्दाश्त को भी बुरी तरह प्रभावित कर सकती है। न्यू साउथ वेल्स यूनिवर्सिटी के अनुसंधानकर्ताओं द्वारा हाल ही में किये गये अनुसंधान में यह पता चला है कि चीनी की अत्यधिक मात्रा मस्तिष्क को प्रभावित करती है और तनाव बढ़ाती है। इसमें कहा गया है कि 50 ग्राम अर्थात 12 चम्मच से अधिक चीनी मस्तिष्क की कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाती है और इसकी कार्यपण्राली को

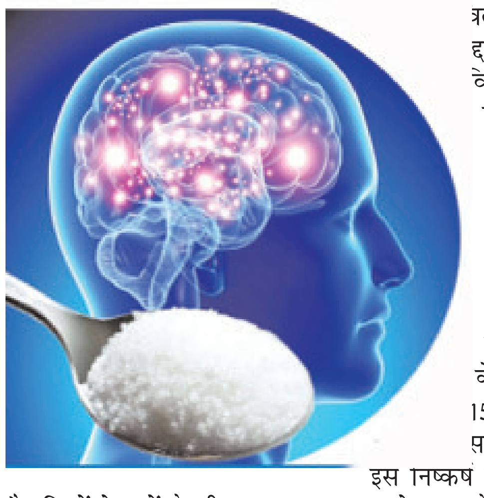

त्रत करती है जिससे आगे चल कर द्दश्त में भी कमी आने का खतरा है। विविद्यालय के अनुसंधानकर्ता जयंती मनियम और मार्गेट मोरिस ने कहा, ''हम सब जानते हैं कि नींबू पानी और कोला जैसे मीठे पेय पदार्थ न सिर्फ कमर और दांत के लिए नुकसानदेह होता है लेकिन नवीनतम अनुसंधान में यह पता चला है कि चीनी दिमाग के उस हिस्से पर असर डालती है जो व्यवहार और याददाश्त के लिए जिम्मेदार है।'अनुसंधानकर्ता 15 दिनों से अधिक समय तक चूहों के समूहों पर किये गये परीक्षण के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं। अपने शोध के लिए वैज्ञानिकों ने चूहों के तीन समूह बनाए। पहले समूह के चूहों को नौ दिनों के लिए अलग थलग रखा गया। दूसरे समूह के चूहों को चीनी खिलाई गयी जबकि तीसरे समूह के चूहों को स्वतां छोड़ दिया गया। वैज्ञानिकों ने 15 दिनों के बाद पाया कि स्वतां छोडे गए चूहों का समूह बाकी अन्य दो समूहों के मुकाबले अधिक स्वस्थ था। इसके बाद अलग रखे गए चूहे और चीनी खानेवाले चूहों के दिमाग की बारीकी से जांच की गयी तो वैज्ञानिकों ने पाया कि दोनों समूहों के चूहों के मस्तिष्क को काफी नुकसान पहुंचा है। अनुसंधानकर्ताओं ने कहा कि अत्याधिक चीनी के सेवन से न्यूरोन्स के विकास के लिए जिम्मेदार न्यूरोड वन जीन प्रभावित होते हैं, जो आगे चल कर अवसाद, तनाव और मूड स्विंग जैसी बीमारियों का कारण बन सकते हैं।' अनुसंधानकर्ताओं ने युवाओं को अपनी खानपान की आदतों में बदलाव करने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की सलाह दी है।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सबेरे निपटा लें। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। शुभांक-3-6-8

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना। मित्रों से सावधानी रखें तो ज्यादा उत्तम है। शुभांक-4-5-6

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। शुभांक-2-4-5

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): रुपए पैसों की सुविधा नहीं मिल पाएगी। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। मेहमानों का आगमन होगा। शुभांक-3-6-9

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम को प्राथमिकता से करें। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे है। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते है। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। शुभांक-2-4-6

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे है। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते हैं। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-7-8-9

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। निर्मूल शंकाओं के कारण मनस्ताप भी पैदा हो सकते है। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। बुद्धितत्व की सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। शुभांक-6-8-9

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। बढ़ते घाटे से कुछ राहत मिलने लगेगी। दवा-दारू में ज्यादा खर्च होगा। हाथ में आने वाला धन भी किसी अवरोध का शिकार हो जाएगा। व्यापार में स्थिति उत्तम रहेगी। धार्मिक स्थलों की यात्रा का योग है। शुभांक-5-6-9

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): चापलूस मित्रों से सावधानी रखें तो ज्यादा उत्तम है। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। शैक्षणिक क्षेत्र में उदासीनता रहेगी। सब्र का फल मीठा होता है अतः धैर्य रखें व अच्छे समय इन्तजार करें। शुभांक-5-7-8

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): थोड़े प्रयास से कार्य सिद्ध होंगे। घर-परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होने से वातावरण आनन्द देने वाला बना रहेगा। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। सुबह-सुबह की महत्त्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन-भर उत्साह बना रहेगा। किये गए कार्यों का प्रतिफल मिलेगा। शुभांक-4-6-7

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। दिन-भर का माहौल आडंबरपूर्ण और व्ययकारी होगा। वरिष्ठ लोगों से कहासुनी वातावरण में तनाव पैदा करेंगे। संयमित भाषा का इस्तेमाल करें। आवेग में आकर किये गए कार्यों का म्लान, अवसाद रहेगा। जरा-सी लापरवाही आपको परेशानी में डाल सकती हैं। शुभांक-3-5-7

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच अप्रत्याशित लाभ होंगे। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। शुभांक-2-4-6

लॉफिंग ज़ौन

पहला-'बन्धु... उस दिन अपना सामना जीते-जागते शेर से हो गया और मेरे पास कोई हथियार भी न था।

दूसरा-'ओह! फिर तुमने क्या किया?'

पहला-'मैं कर ही क्या सकता था? पहले तो मैंने उसकी आंख की पुतलियों को देखा मगर वह मुझे देखकर गुर्राता रहा, फिर मैंने गर्दन मरोड डालने की घमकी दी, मगर फिर मुझे पता लगा कि अगर मैंने उसकी गर्दन पकड भी ली तो मेरा खतरा टलेगा नहीं, और बढ़ जायेगा। लेकिन वह मुझे घूरता रहा...घूरता रहा...।' फिर तुमने उससे छुटकारा किस प्रकार पाया? 'मैंने उसकी तरफ से मुंह फेर लिया और दूसरे पिंजरों की तरफ बढ़ गया।'

कमला खाना बना रही थी। मांगीलाल अखबार पढ रहा था। वह जोर-जोर से खबर पढने लगा-प्रधानमंत्री ने कहा है कि मिलावट करने वालों के प्रति कडी कार्यवाही की जाएगी।

यह सुनते ही कमला बोली, मैने तो आलू-मटर-गोभी की सब्जी बनाई है। किसी से कहना मत कि मैने मिलावट की है।

काकुरो पहेली 4066

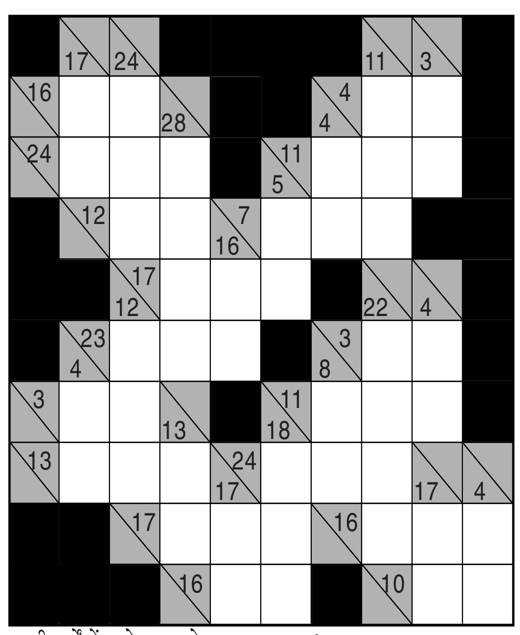

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः

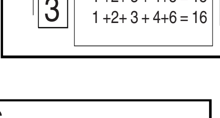

6+8+9=23
7+8+9=24
1+2+3+4+5=15
1+2+3+4+6=16

काकुरो 4065 का हल

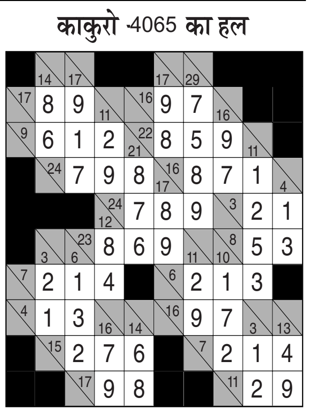

फिल्म वर्ग पहेली- 4066

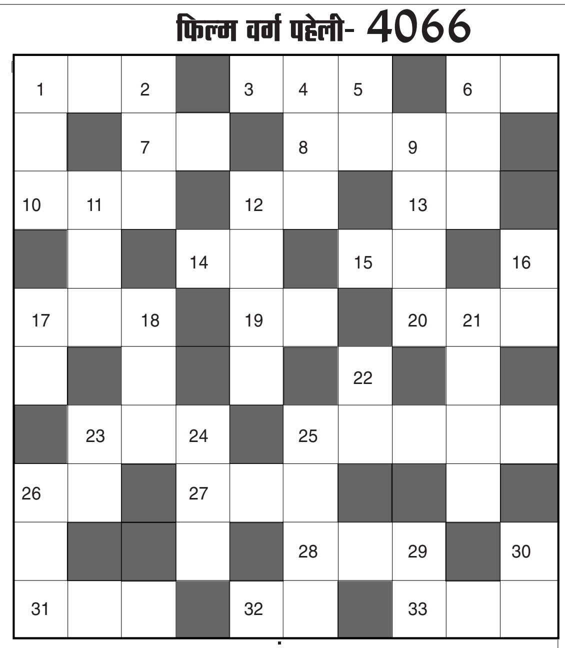

ऊपर से नीचे:-

१. 'रंग भरे मौसम से' गीत वाली फिल्म-३
२. अमिताभ, संजीव, ऋषि, हेमा, शर्मिला की फिल्म-३
४. 'मैं तेरी मुहब्बत में' गीत वाली फिल्म-३
५. बिजॉय आनंद, कृतिका पाने, सोनू वालिया की फिल्म-२
६. 'दिल्ली की सर्दी' गीत वाली फिल्म-३
९. राजबब्बर, अनिता की फिल्म-४
११. 'किसी के दिल में' गीत वाली फिल्म-३
१२. नवीन निश्चल, सायरा की 'इधर गया था' गीत वाली फिल्म-४
१६. 'तेरे बिना तेरे' गीत वाली फरदीन, करीना की फिल्म-२
१७. संजय, उर्मिला की 'ओ भंवरे देखो हम' गीत वाली फिल्म-२
१८. 'खाई है रे हमने कसम संग रहने की' गीत वाली फिल्म-३
२१. जैकी, नीलम की 'चुराया तूने दिल' गीत वाली फिल्म-४
२२. 'अपनी चाहतों पे काबू' गीत वाली जॉन, उदिता की फिल्म-२
२३. इरफान खान, की 'मैंने दिल से कहा' गीत वाली फिल्म-२
२४. 'हम तीनों की वो यारी' गीत वाली फिल्म-३
२५. राजेंद्रकुमार, राखी की फिल्म-२,२
२६. 'पहली बार जो' गीत वाली फरदीन, उर्मिला की फिल्म-३
२९. 'सुन जरा सोनिये' गीत वाली फिल्म-२
३०. रणधीरकपूर, बबीता की फिल्म-२

बायें से दायें:-

१. जैकी श्रॉफ, सलमान, रंभा, अश्विनी भावे की फिल्म-३
३. 'छम छम बरसा' गीत वाली फिल्म-३
६. 'जलता है जिया मेरा भीगी भीगी' गीत वाली फिल्म-२
७. राकेश रोशन, सिम्मी की फिल्म-२
८. अमिताभ, शर्मिला, हेमा, परवीन की फिल्म-४
१०. 'मरना तेरी गली में जीना तेरी' गीत वाली फिल्म-३
१२. फरदीन, करीना की 'रंग दीन्ही रंग' गीत वाली फिल्म-२
१३. 'कहना है तुम' गीत वाली आमिर, मनीषा की फिल्म-२
१४. 'सिर्फ संडे को करती हूँ मैं तो प्यार' गीत वाली फिल्म-२
१५. 'चाँदनी रात है' गीत वाली सलमान, नगमा की फिल्म-२
१७. 'जिंदगी ये जिंदगी दो घड़ी की जिंदगी' गीत वाली फिल्म-३
१९. नागार्जुन, उर्मिला की फिल्म-२
२०. जैकी श्रॉफ, जूही, एकता की एक सस्पेंस फिल्म-३
२३. मिलिंद, विक्रम सलूज की फिल्म-३
२५. विनोद मेहरा, अनिल कपूर, स्मिता, रति की फिल्म-२,१,२
२६. 'याइला रे लड़की मस्त' गीत वाली फिल्म-२
२७. धर्मेन्द्र, शर्मिला की 'बहारों की बारात आ' गीत वाली फिल्म-३
२८. 'तुझे देखके दिल' गीत वाली फिल्म-३
३१. सनी, जॉन, सुनील शेट्टी की फिल्म-३
३२. 'जिस का मुझे था' गीत वाली अमिताभ, जीनत की फिल्म-२
३३. अक्षय, सैफ, रवीना टंडन, सोनाली बेंद्रे की फिल्म-३

फिल्म वर्ग पहेली- 4065

चा	ल	बा	ज		चा	ला	क		जा
ह		रि		आ	ह		र्ज		ल
त	ला	श		र	त	न		प्या	सा
	वा		श	जू		ज	ख्म		ज
श		तु	म		जो	र		ना	
म	स्ती		क	ह	र		अ	स्ति	त्व
अ		जीं	स		दा	वा		क	
व	क्त		म	द	र		दा		अं
ता		हे		र्द		फि	दा		जा
र	ह	मा	न		रे	जा		धू	म

सूडोकु -4066

		2				1		
				2	5	7	3	
	9	4		6	7			2
	5		4		3			9
	8			9			7	
1			6		8		2	
6			7	4		9	5	
	4	5	8	3				
		8				6		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु 4065 हल

9	1	6	2	3	7	4	5	8
8	2	3	4	5	9	1	7	6
4	5	7	1	6	8	3	9	2
5	6	8	7	1	2	9	3	4
1	7	4	9	8	3	2	6	5
2	3	9	5	4	6	8	1	7
7	4	1	8	9	5	6	2	3
3	8	5	6	2	1	7	4	9
6	9	2	3	7	4	5	8	1

शब्द पहेली - 4066

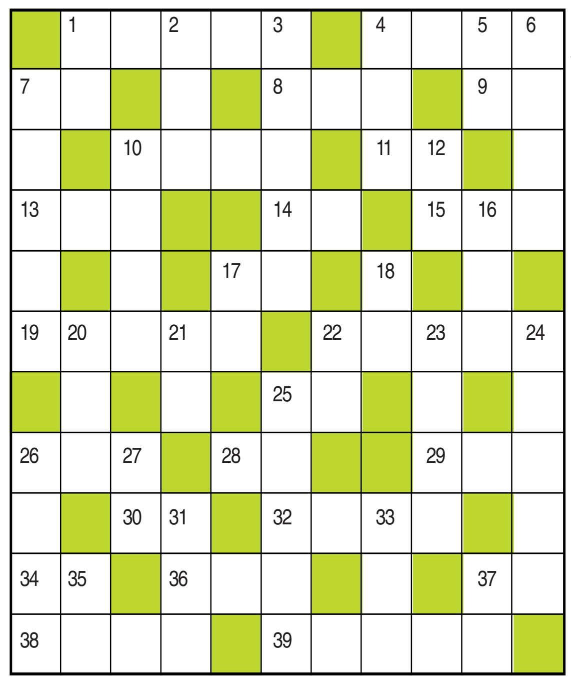

बाएँ से दाएँ

1.महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित महाकाव्य-5
4.आज्ञापत्र, पतंगा-4
7.शरीर, बदन-2
8.होशियार, हुनरमंद-3
9.नस, नाड़ी-2
10.तीर रखने का पात्र-4
11.गधा, गर्दभ-2
13.जो बंदी हो-3
14.पत्नी, भार्या-2
15.दृष्टि, निगाह-3
17.खैरात, दक्षिणा-2
19.अपने ही घर में कैद होना-5
22.भाग्यवाला-5
25.जी, इच्छा-2
26.तन, काया-3
28.दुनिया, संसार-2
29.वेतन-3
30.भीगा हुआ-2
32.सागौन, एक प्रकार की मूल्यवान लकड़ी-4
34.परिणाम,हल,फ्रूट-2
36.सचेग-3
37.राजकपूर,नरगिस की फिल्म-2
38.चाणक्य के समय मगध की राजधानी-4
39.निरस्त करना-2,3

ऊपर से नीचे

1.आमिर,मनीषा कोइराला की फिल्म-2
2.रवि, सूर्य-3
3.तमाशा देखनेवाले-5
4.परीक्षण,जांच-3
5.सप्ताह का दिन-2
6.जो नापसंद हो (उर्दू-4)
7.गोविंदा व खुशबू की फिल्म-2,3
10.भाग्य,किस्मत-4
12.क्रिकेट में बनते हैं-2
16.नसीरुद्दीन शाह की एक फिल्म -3
17.खुजली-2
18.रस्सी पर अपराधी को लटकाना-2
20.आवश्यक-3
21.कैदी, बंधक-2
22.इसाई साध्वी-2
23.बालकपन-4
24.असावधान-5
25.महासमुद्र-5
26.सज्जनता, भद्रता-4
27.अभिषेक की फिल्म-2
31.मुद्दा (उर्दू-3)
33.वाचन करनेवाला-3
35.उद्देश्य-2
37.आगमन,आने का भाव-2

शब्द पहेली 4065 का हल

उ	थ	ल	पु	थ	ल		मा	न	व	ता
त	न		ल		ल	म्बा	ई		श	र
रा		आ	क	र्ष	क		न	स		को
धि	क्का	र	ना			अ		च	प	ल
का		क्ष		भा	गी	दा	र		र	
र	म	ण	यो	ग्य		व	ज	न	दा	र
	ह		ग	फ	ल	त		म		ह
द	ल	ना		ल			य	की	न	न
श		का	व्य		त	न	म	न		स
ह	रा		स	ला	मी		रा		रा	ह
रा	ह	ज	न		ज	हा	ज	चा	ल	न

'जगन्नाथ रथ यात्रा' के लिए रथों का निर्माण कार्य प्रगति पर

एजेंसी

पुरी। भगवान जगन्नाथ को समर्पित रथ यात्रा के लिए रथ निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। रथ यात्रा सालाना तौर पर ओडिशा के पुरी में शुरू होती है। इस यात्रा के लिए प्रयोग किए जाने वाले रथ को कुशल कारीगर बनाते हैं। श्री नगर स्थित अस्थायी कार्यशाला में आगामी रथ यात्रा के लिए तीन रथों का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। मुख्य रथ निर्माता की देखरेख में 36 पहियों का निर्माण कार्य पूरा करने के बाद 14 नाहका चौपटा, जो रथ का एक हिस्सा होता है, उस पर काम शुरू हो चुका है। तीनों रथों पर एक समान गति से काम चल रहा है। रथ निर्माण का कार्य समय पूरा हो सके इसके लिए मुख्य रथ निर्माता और सहायक मिलकर काम कर रहे हैं। रथ के अलग अलग भाग को सावधानीपूर्वक तैयार किया जा रहा है। प्रत्येक रथ के अंतिम दो पहियों का निर्माण कार्य चल रहा है। सिंगारा, जो पहिए का एक हिस्सा है, उसका काम पूरा हो चुका है। पाई (धुरा) बांधने का काम चल रहा है। पाई संयोग (धुरा कनेक्शन) का काम होने वाला है। 12 भुई चौटा (रथ के आधार का एक हिस्सा) का चौपटा (ढांचा) का काम पूरा हो चुका है, और बिंधा (रथ के निर्माण का एक हिस्सा) के लिए चिन्हांकन किया गया है। 14 नहाका (रथ के ढांचे का एक हिस्सा) पर भी काम शुरू हो गया है।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के सफल 11 वर्ष पूर्ण होने पर मध्य प्रदेश में होंगे कार्यक्रम

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा कि आगामी माह तीन ऐसी महत्वपूर्ण तिथियां होंगी, जिनका मध्य प्रदेश और देश के लिए विशेष महत्व है। जून में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार के सफल 11 साल पूरे हो रहे हैं। यह विशेष उपलब्धि है। मध्य प्रदेश में इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ यादव नई दिल्ली में मीडिया से बातचीत करते हुए जून माह में मध्य प्रदेश में होने वाले महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के संबंध में जानकारी दे रहे थे। उन्होंने कहा कि आगामी पांच जून को विश्व पर्यावरण दिवस है। इस नाते यह दिन जल गंगा संवर्धन अभियान के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है। यह पर्यावरण दिवस भी है और राज्य सरकार पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए अधिकाधिक प्रयास कर रही है। जल गंगा संवर्धन अभियान का औपचारिक शुभारम्भ गुड़ी पड़वा से हो चुका है। प्रदेश में 30 मार्च से प्रारंभ यह अभियान निरंतर 30 जून तक चलेगा। जनप्रतिनिधि और आम नागरिक अभियान में व्यापक भागीदारी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पर्यावरण दिवस के पश्चात 9 जून को महत्वपूर्ण तिथि है, जब यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार के सफल 11 साल पूरे होने का भी दिन है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी न केवल लगातार तीन कार्यकाल के लिए सरकार बनाने के लिए बधाई के पात्र हैं, बल्कि उन्होंने जो ऐतिहासिक फैसले लिए हैं, वे इस बात का प्रमाण हैं कि उनके लिए राष्ट्र हित सर्वोपरि है।

मार्च 2026 छत्तीसगढ़ और बस्तर के झीरम नरसंहार के पीड़ित परिवारों के लिए न्याय का वर्ष साबित होगी

जगदलपुर। छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के दरभा जनपद पंचायत क्षेत्र के झीरम घाटी में 12 वर्ष पहले 25 मई 2013 को नक्सलियों ने देश के सबसे बड़े राजनैतिक नरसंहार को अंजाम दिया था। अब नक्सलियों के खात्मे का दौर जारी है। केंद्र सरकार ने इन नक्सलियों के खात्मे की समय सीमा मार्च 2026 तय कर चुकी है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने राज्य के अपने गत 18 अप्रैल 2025 के दौरे के दौरान केंद्र सरकार के संकल्प को व्यक्त करते हुए कहाथा कि नक्सलवाद को 31 मार्च 2026 तक समाप्त कर दिया जाएगा, जिससे नक्सलियों को खत्म करने के दावे की पुष्टि होती है।

नेपाल कस्टम विभाग के तरफ से टेक्निकल बाधा उत्पन्न होने से कस्टम कार्य शुरू नहीं हो पाया :वित्त राज्य मंत्री

प.चम्पारण(बगहा)। केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी और महाराजगंज सदर के विधायक जय मंगल कनौजिया अपने एकदिवसीय दौरे पर वाल्मीकिनगर स्थित सिंचाई विभाग के अतिथि भवन पहुंचे। इस अवसर पर वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने अतिथि भवन के सभागार में कस्टम विभाग के असिस्टेंट कमिश्नर विनोद कुमार, बेतिया कस्टम अधीक्षक संजय शरण, वाल्मीकि नगर कस्टम अधीक्षक अशोक कुमार से बात-चीत कर वाल्मीकि नगर के कस्टम को सुचारू रूप से शुरू करने में आ रहे गतिरोध की जानकारी और अब तक लंबित भंसार सुविधा शुरू नहीं होने के सन्दर्भ में जानकारी ली। पत्रकारों से बातचीत करते हुए केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने बताया कि नेपाल कस्टम विभाग के तरफ से टेक्निकल बाधा उत्पन्न होने के कारण कस्टम कार्य शुरू नहीं हो पाया है। काठमांडू में दोनों देश के वरिय अधिकारियों कि इस बिंदु पर बैठक हुई है।जल्द ही नेपाल में लैब की व्यवस्था हो जाएगी। जिससे कस्टम सुचारू रूप से चालू हो जाएगा।

गांवों को विकसित किए बिना पूर्ण नहीं हो सकता विकसित भारत का सपना: शिवराज

एजेंसी

भोपाल। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का प्रयास है कि हमारा भारत जल्द से जल्द एक वैभवशाली, गौरवशाली, शक्तिशाली और समृद्ध भारत के रूप में परिवर्तित हो। इसके लिए प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सरकार निरंतर कार्य कर रही है। जब देश का प्रत्येक गांव विकसित होगा तो हमारा भारत भी विकसित होगा। सरकार शहरों को विकसित करने के साथ ही गांवों को भी विकसित कर रही है, क्योंकि गांवों को विकसित किए बिना विकसित भारत का सपना पूर्ण नही हो सकता। केंद्रीय कृषि मंत्री चौहान मध्य प्रदेश के सीहोर जिले में आयोजित विकसित भारत संकल्प पदयात्रा के कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी का लक्ष्य है कि हमारा देश

विकसित भारत का रूप ले। एक ऐसा भारत जहां बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा, उन्नत कृषि, रोजगार, स्वास्थ्य सहित सभी संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। उन्होंने कहा कि ये आज का भारत है जो कहता कि हम किसी छेड़ते नही और अगर कोई हमे छेड़े तो हम उसे छोड़ते नही। केन्द्रीय मंत्री चौहान विकसित भारत संकल्प पदयात्रा में शामिल होकर लाड़कुई, भादाकुई, छिंदगांवमौजी में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल हुए। वे पदयात्रा में विकसित भारत का संदेश देते हुए पैदल चले, जिसमें उनके साथ अनेक जनप्रतिनिधि, किसान, महिलाएं और बड़ी संख्या में नागरिक भारत माता की जय का उद्घोष करते हुए उत्साह के साथ शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने पीएम आवास सहित विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों, किसानों, लखपति दीदियों एवं अनेक हितग्राहियों से चर्चा और उन्हें विकसित भारत बनाने का संकल्प दिलाया। इस पदयात्रा में केंद्रीय कृषि मंत्री चौहान पत्नी साधना सिंह, पुत्र कार्तिकेय एवं पुत्रवधु अमानत चौहान के साथ शामिल हुए। केंद्रीय मंत्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के विकसित भारत के सपने का आशय एक ऐसे भारत से है जहां प्रत्येक व्यक्ति के पास अच्छा रोजगार हो, अच्छी आमदनी हो, महिलाएं सामाजिक आर्थिक और शैक्षणिक रूप से सशक्त हों। एक विकसित भारत के निर्माण के लिए सरकार के साथ-साथ जनता का सहयोग बहुत आवश्यक है। इस देश की जनता के सहयोग के बिना विकसित भारत के सपने को साकार नहीं किया जा सकता। अगर देश का प्रत्येक व्यक्ति अपने क्षेत्र को विकसित बनाने में योगदान दे तो आसानी से हम अपने देश को विकसित बना सकते हैं।

अमृतसर में अकाली दल पार्षद की गोली मारकर हत्या

एजेंसी

चंडीगढ़। पंजाब के अमृतसर में पुरानी रंजिश के चलते नकाबपोशों ने शिरोमणि अकाली दल (शिअद) के एक नगर पार्षद की गोली मारकर हत्या कर दी। यह पूरी घटना सीसीटीवी में कैद हो गई है, जिसके आधार पर पुलिस ने तीन हमलावरों की पहचान किए जाने का दावा किया है। इस घटना के बाद शिरोमणि अकाली दल कानून व्यवस्था के मुद्दे पर आक्रामक हो गया है, वहीं पंजाब के मुख्यमंत्री भगवत मान ने पुलिस महानिदेशक को हमलावरों को तुरंत गिरफ्तार करने के आदेश जारी किए हैं। जानकारी के अनुसार, रविवार बाद दोपहर जंडियाला नगर परिषद के वार्ड नंबर 2 से पार्षद हरजिंदर सिंह अपने कुछ साथियों के साथ स्थानीय गुरुद्वारा साहिब के बाहर खड़े थे। तभी कुछ लोग मोटरसाइकिलों पर सवार होकर आए और अंधाधुंध फायरिंग कर दी। हरजिंदर सिंह को गोली लगने के बाद आसपास मौजूद लोगों ने अस्पताल पहुंचाया, जहां कुछ समय बाद उनकी मृत्यु हो गई। डॉक्टरों का दावा है कि हरजिंदर सिंह को तीन गोलियां लगी थी।घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंचे अकाली नेता विक्रमजीत सिंह मजीठिया ने पंजाब में कानून व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए कहा कि हरजिंदर सिंह को पिछले कुछ समय से लगातार जान से मारने की धमकियां मिल रही थी। इस संबंध में पुलिस के पास शिकायत भी दर्ज करवाई गई थी लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। घटना के बाद हरकत में आई पुलिस ने सीसीटीवी रिकॉर्डिंग तथा मृतक के परिजनों के बयान के आधार पर कार्रवाई करते हुए तीन हमलावरों की तस्वीरें भी जारी की हैं।

2047 में हम सभी के प्रयासों से विकसित भारत बनेगा : ओम बिरला

एजेंसी

रांची। रांची राजस्थान फाउंडेशन चैप्टर के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला का स्वर्णभूमि के सभागार में नागरिक अभिनंदन और स्वागत किया गया। मौके पर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने भारत माता की जय के साथ उन्होंने कहा कि झारखंड प्रदेश ऐसा प्रदेश है जहां पर प्रचुर मात्रा में खनिज संपदा है। व्यापार यहां का तेजी से आगे बढ़ रहा है। आर्थिक और सामाजिक जीवन में बड़ा परिवर्तन यहां देखने को मिल रहा है। हमें गर्व है हमारे देश की सेना ने दुनिया को अपना शौर्य दिखाया। हम हमेशा शांति का संदेश दुनिया को देते आये है लेकिन कोई देश अगर हमारे इस संरक्षण का गलत फायदा उठाता है तो भारत आतंकवादियों के आतंक का सफाया करेगा। उन्होंने कहा कि आतंकवाद के गंभीर परिणाम होंगे। अब नए भारत के सपनों को पूरा करने का समय सरकार कर रही है। झारखंड आगे बढ़ेगा तब देश आगे बढ़ेगा। इसके लिए हमेशा प्रयास करना होगा। आज पूरी दुनिया में भारत का विश्वास बढ़ा है। हम तकनीकी क्षेत्र में आगे बढ़े हैं। विकसित भारत और विकसित भारत के संकल्प की ओर हम आगे बढ़ रहे हैं। 2047 में हम सभी के प्रयासों से विकसित भारत बनेगा। भारत के हर क्षेत्र में तेजी से बदलाव आ रहा है। दुनिया के लिए भारत निवेश में सबसे बड़ा देश माना जाता है। हर क्षेत्र में हम दुनिया से आगे हैं। दुनिया की सबसे बड़ी अगर

कोई कंपनी है तो उसमें इंडिया का ही सीओ है। देश मे विकास का काम हो रहा है। यातायात, वायु जैसे सभी क्षेत्रों में झारखंड को बुनियादी सुविधा भी उपलब्ध हुई है ।आज पब्लिक सेक्टर ,बैंकिंग सेक्टर में भारत स्ट्रांग है। योग और आयुर्वेद जो हमारी उपज है पूरी दुनिया उसका इस्तेमाल कर रही है।भारत की सेना ने आतंकवादियों के स्थल पर जाकर उन्हें मिट्टी में मिलाने का कार्य किया। भारत ने आतंकवाद के खिलाफ एक नीति बनाई है जो भी आतंकी हमला करेगा भारत उसे कभी नहीं छोड़ेगा। आतंकवाद की कोई भी घटना अगर हमारे देश में होगी हम आतंकियों के देश में घुसकर पूरी तत्परता के साथ जवाब देकर उसे नष्ट करेंगे। वहीं, रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने कहा कि भारत का लोकतंत्र दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। देश पूरा उत्साहित है ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय सेना का पराक्रम जो 23 मिनट का था, दुनिया ने देखा हम मजबूती के साथ लड़े हैं। हम दुनिया की तीसरी सबसे शक्तिशाली ताकत है।

प्रधानमंत्री ने एक देश एक चुनाव का भी नारा लगाया। उन्होंने कहा कि करोड़ों लाखों रुपये खर्च होते हैं, समय और व्यापार में नुकसान होता है। एक साथ चुनाव कराकर लाखों करोड़ों का बचत और आने वाले पीढ़ी को भी इसका लाभ दे सकते हैं।

भारत को 'चिकन नेक कॉरिडोर' की धमकी देने वालों को असम सीएम की दो टूक

एजेंसी

गुवाहाटी। असम के मुख्यमंत्री डॉ हिमंत बिस्व सरमा ने भारत को बार-बार 'चिकन नेक कॉरिडोर' की धमकी देने वालों को कड़ा जवाब देते हुए कहा कि उन्हें कुछ भौगोलिक तथ्यों को भी समझना चाहिए, जो अक्सर नजरअंदाज कर दिए जाते हैं। डॉ सरमा ने कहा कि बांग्लादेश के पास खुद के दो चिकन नेक कॉरिडोर हैं, जो भारत के सिलिगुड़ी कॉरिडोर से कहीं अधिक संवेदनशील और कमजोर हैं।

उन्होंने बताया कि पहला कॉरिडोर उत्तर बांग्लादेश कॉरिडोर है, जो दक्षिण दिनाजपुर से दक्षिण पश्चिम गारो हिल्स तक फैला हुआ है। यह करीब 80 किलोमीटर लंबा है और अगर इसमें कोई अवरोध उत्पन्न होता है, तो रंगपुर डिवीजन पूरी तरह से बाकी बांग्लादेश से कट सकता है। दूसरा है चिटगांव कॉरिडोर, जो दक्षिण त्रिपुरा से बंगाल की खाड़ी तक जाता है। यह सिर्फ 28 किलोमीटर लंबा है और यह बांग्लादेश की आर्थिक राजधानी और राजनीतिक राजधानी को जोड़ने वाला एकमात्र मार्ग है

मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि वह केवल कुछ भौगोलिक तथ्यों को याद दिला रहे हैं, जिन्हें लोग अक्सर भूल जाते हैं। उन्होंने कहा कि जैसे भारत के पास सिलिगुड़ी कॉरिडोर है, वैसे ही हमारे पड़ोसी देश के पास भी दो

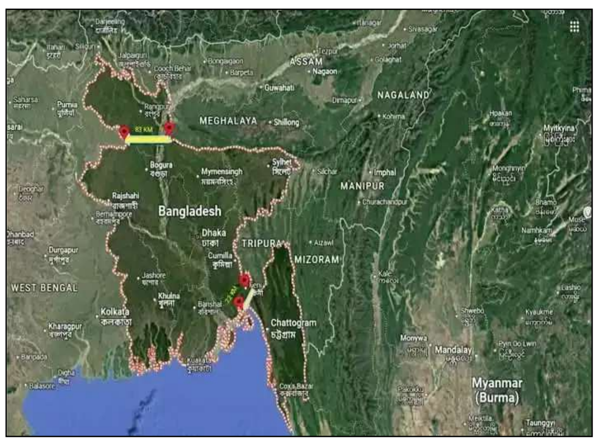

संकरे और संवेदनशील गलियारे हैं।

डॉ सरमा के इस बयान को पड़ोसी देशों को दिए गए स्पष्ट संकेत के तौर पर देखा जा रहा है कि भूगोल और रणनीति में एकतरफा नजरिया नुकसानदेह हो सकता है।

'हमें ये सब अच्छा नहीं लगता है...', बड़े भाई तेज प्रताप को पार्टी से निकाले जाने पर तेजस्वी यादव

एजेंसी

पटना। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के सुप्रीमो लालू यादव के तेज प्रताप को पार्टी से निकाले जाने पर तेजस्वी यादव की पहली प्रतिक्रिया सामने आई है। बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने कहा कि हमें ये सब अच्छा नहीं लगता है, न हम इसे बर्दाश्त करते हैं। मेरे बड़े भाई की बात है, तो राजनीतिक और निजी जीवन अलग होता है।

निजी जीवन के निर्णय लेने का उनका अधिकार है। बिहार विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष और राजद नेता तेजस्वी यादव ने मीडिया से बात करते हुए कहा, हमें ये सब अच्छा नहीं लगता है, न हम इसे बर्दाश्त करते हैं। हम बिहार की जनता के लिए काम कर रहे हैं, जनता के सुख-दुख में हम भाग ले रहे हैं, जनता के मुद्दे को उठा रहे है। हम नेता विरोधी दल हैं। जहां तक मेरे बड़े भाई की बात है, राजनीतिक और निजी जीवन अलग होता है। निजी जीवन के निर्णय लेने का उनका अधिकार है। राष्ट्रीय अध्यक्ष दल के नेता हैं, उन्होंने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपनी भावनाएं स्पष्ट कर दी है। हम ऐसी चीजों को पसंद नहीं करते हैं। उधर, लालू यादव की बेटी रोहिणी आचार्य ने भी तेज प्रताप को पार्टी से निष्कासित करने पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, जो परिवेश, परंपरा, परिवार और परवरिश की मर्यादा का ख्याल रखते हैं, उन पर कभी सवाल नहीं उठते हैं, जो अपना विवेक त्याग कर मर्यादित आचरण व परिवार की प्रतिष्ठा की सीमा को बारंबार लांघने की गलती, धृष्टता करते हैं, वो खुद को आलोचना का पात्र खुद ही बनाते हैं। हमारे लिए पापा देवतुल्य हैं, परिवार हमारा मंदिर एवं गौरव और पापा के अथक प्रयासों-संघर्षों से खड़ी की गई पार्टी व सामाजिक न्याय की अवधारणा हमारी पूजा, इन तीनों की प्रतिष्ठा पर किसी की वजह से कोई आंच आए, ये हमें कदापि स्वीकार्य नहीं।

तुर्की का नहीं, हिमाचल का सेब खाएं भारत के लोग : गिरिराज सिंह

एजेंसी

पालमपुर। केंद्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने पालमपुर में पंचरुखी के ब्याडा में बॉब आर्गेनिक्स खाद उत्पादन इकाई का उद्घाटन किया। मंत्री ने आईएचबीटी के छात्रों से भी वार्तालाप किया और इस प्लांट के बारे में जानकारी हासिल की इसके उपरांत वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने आंद्रेटा में मिट्टी के बर्तन बनाने वाले संस्थान का भी दौरा किया यहां पर मंत्री ने खुद मिट्टी का बर्तन भी बनाया और यहां के स्थानीय लोगों से इस काम को आगे बढ़ाने की अपील की है। सीएसआईआर-हिमालयी जैवसंसाधन प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएचबीटी) पालमपुर में स्थित है। मीडिया से बात

करते हुए केंद्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि हमारा मंत्रालय राज्यों के साथ जुड़ा हुआ मंत्रालय है और जिस पॉटरी को मैं देखने आया हूं यह भी हैंडीक्राफ्ट का ही एक पार्ट है और पौराणिक कला है। गिरिराज सिंह ने कहा कि जब यहां मुंबई की छात्रा इस काम को सीखने आ सकती है तो यहां के स्थानीय लोग क्यों नहीं आ सकते। ये केवल कला नहीं है बल्कि यह रोजगार का बड़ा साधन है। हैंडीक्राफ्ट बहुत बड़ा सेक्टर है। आईएचबीटी ग्रामीण हिमाचल की आमदनी को बढ़ाने में अहम रोल निभा सकता है। गिरिराज सिंह ने कहा कि हिमाचल सांस्कृतिक टूरिज्म, आध्यात्मिक टूरिज्म और प्राकृतिक टूरिज्म का केंद्र हैं। अगर इसके साथ फ्लोरीकल्चर को जोड़ा जाए तो और भी टूरिज्म के आयाम बढ़ेंगे। आईएचबीटी कांगड़ा जिले को फ्लोरीकल्चर से जोड़ सकता है। फ्लोरीकल्चर में अपार संभावनाएं हैं। भारत-पाकिस्तान के बीच हालिया सीमा संघर्ष और चीन, तुर्की जैसे देशों के पाक को सहयोग करने पर भी गिरिराज सिंह ने तीखी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि भारत का सौभाग्य है कि भारत बहुत बड़ा देश है और भारत में डोमेस्टिक चीजों की मांग ज्यादा है। जिस तरह से तुर्की ने भारत के दुश्मन देश का साथ दिया है तो भारत के लोग तुर्की का सेब न लें, बल्कि हिमाचल का सेब खाएं।

मणिपुर के दो दिवसीय दौरे पर पहुंचे बीएसएफ महानिदेशक दलजीत सिंह चौधरी ने लिया अभियान का जायजा

एजेंसी

इंफाल,। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के महानिदेशक (डीजी) दलजीत सिंह चौधरी ने मणिपुर का दो दिवसीय दौरा कर सुरक्षा हालात की समीक्षा की और राज्य में तैनात जवानों से मुलाकात कर उनका मनोबल बढ़ाया। डीजी 24 मई को इम्फाल एयरपोर्ट पहुंचे, जहां मणिपुर पुलिस महानिदेशक राजीव सिंह, एडीजी (ईसी) महेश कुमार अग्रवाल, आईजी फ्रंटियर संजय कुमार मिश्रा और आईजी एसटीसी चुराचांदपुर इंद्र देव सिंह समेत वरिष्ठ अधिकारियों ने उनका स्वागत किया इम्फाल पहुंचने के तुरंत बाद चौधरी ने सेक्टर मुख्यालय काउंटर-इंसर्जेंसी (अभियान) का दौरा किया, जहां उन्हें राज्य की कानून-व्यवस्था की मौजूदा स्थिति पर विस्तृत जानकारी दी गई। सेक्टर अधिकारियों के साथ उन्होंने मौजूदा

सुरक्षा चुनौतियों और संचालन संबंधी रणनीतियों पर विस्तार से चर्चा की। शाम करीब 6:20 बजे डीजी ने कैपिटल कॉम्प्लेक्स स्थित 10वीं बटालियन की सीआई पोस्ट पर जाकर जवानों की कार्यक्षमता का निरीक्षण किया और उनके साथ संवाद किया। उन्होंने जवानों के समर्पण की सराहना की और कहा कि उनका योगदान क्षेत्र में शांति बनाए रखने में अहम है। इस दौरान उन्होंने मणिपुर सरकार के सुरक्षा सलाहकार कुलदीप सिंह और डीजीपी राजीव सिंह से भी मुलाकात की।25 मई को उन्होंने एसएचक्यू सीएल (अभियान), कोईरेंगई में सैनिक सम्मेलन को संबोधित किया। इस सम्मेलन का सीधा प्रसारण राज्य के विभिन्न जिलों में तैनात बीएसएफ बटालियनों तक किया गया। उन्होंने जवानों के समर्पण की सराहना करते हुए उन्हें निडरता से देश सेवा करने के लिए प्रेरित किया।डीजी ने बिश्नुपुर और चुराचांदपुर जिलों के सीमावर्ती इलाकों में तैनात बीएसएफ कंपनियों का दौरा कर ग्राउंड ज़ीरो पर तैनात जवानों से सीधे संवाद किया। इसके बाद उन्होंने लोकतक स्थित 10वीं बटालियन के टैक्टिकल हेडक्वार्टर में रुककर ऑपरेशनल तैयारियों की समीक्षा की और जवानों को शांति और कानून व्यवस्था बनाए रखने में सतत प्रयास जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

मिस वर्ल्ड संगठन के खिलाफ मिस इंग्लैंड के आरोपों की राज्य सरकार ने दिए जांच के आदेश

एजेंसी

हैदराबाद। तेलंगाना सरकार ने मिस इंग्लैंड मिल्ला मैगी के मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता के आयोजकों पर लगाए गए गंभीर आरोपों की जांच के आदेश दिए हैं। इस जांच के लिए वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी शिखा गोयल, आईपीएस रेमा राजेश्वरी और साइबराबाद डीसीपी साईश्री का एक पैनल गठित किया गया है। मिस वर्ल्ड संगठन से नाराज मिस इंग्लैंड मिल्ला मैगी ने प्रतियोगिता छोड़ने के बाद गंभीर आरोप लगाए हैं।

दरअसल, मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता को लेकर मिस इंग्लैंड मिल्ला मैगी ने मिस वर्ल्ड ऑर्गनाइजेशन पर गंभीर आरोप लगाए थे। मुख्यमंत्री रेवंथ रेड्डी ने इन आरोपों को गंभीरता से लिया। क्योंकि यह राष्ट्रीय सम्मान और प्रतिष्ठा का मामला है। मुख्यमंत्री रेड्डी ने इन आरोपों की जांच के आदेश दिए है। मुख्यमंत्री ने इसके लिए एक जांच

कमेटी गठित कर दी है। इस कमेटी में वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी शिखा गोयल, आईपीएस रेमा राजेश्वरी और साइबराबाद डीसीपी साईश्री को नामित किया गया है। यह कमेटी मिस वर्ल्ड प्रतिभागियों से प्रतियोगिता के संचालन और कठिनाइयों की जानकारी करेगी। प्रतियोगिता के अब तक की वीडियो रिकॉर्डिंग भी जांच की जाएगी। यह कमेटी मिस इंग्लैंड मिल्ला मैगी के आरोपों की भी जांच कर विस्तृत रिपोर्ट देंगे। मुख्यमंत्री ने प्रतियोगियों के साथ-साथ मिस वर्ल्ड की सीईओ जूलिया मोर्ले और पर्यटन विभाग के प्रमुख सचिव जयेश रंजन से भी प्रतियोगिता को लेकर विस्तृत जानकारी ली है। राज्य सरकार ने मिस वर्ल्ड संगठन के आयोजित रात्रिभोज में शामिल लोगों और उस दिन उनके साथ बैठे लोगों के नामों की रिपोर्ट सरकार को भेजने को कहा है।

मिल्ला मैगी के आरोप

मिस इंग्लैंड मिल्ला मैगी ने मिस वर्ल्ड ऑर्गनाइजेशन पर सनसनीखेज आरोप लगाते हुए कहा, %जब मैं हैदराबाद में थी, तो मुझ पर अमीर पुरुष प्रायोजकों की मेजबानी करने का बहुत दबाव था। इंग्लैंड की मैगी ने प्रतियोगिता से हटने के कारणों को स्पष्ट करते हुए अफसोस जताया कि मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता के तहत प्रतिभागियों को सुबह से रात तक मेकअप में रहना पड़ता था। वह सुबह के टिफिन के समय भी अपना मेकअप नहीं हटा पाती थी। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ मौकों पर उन्हें नाइटगाउन पहनना पड़ता है और कुछ शाम के कार्यक्रमों में पुरुष प्रायोजकों के साथ बैठना पड़ता है। उन्होंने आरोप लगाया कि उन पर अमीर प्रायोजकों का मनोरंजन करने का दबाव डाला जा रहा था।

पहलगाम को लेकर कांग्रेस का भाजपा पर हमला, दीपेन्द्र हुड्डा और सचिन पायलट ने उठाए सवाल

एजेंसी

चंडीगढ़। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा चंडीगढ़ में आयोजित 'जय हिन्द' सभा में पहलगाम हमले और उसके बाद के घटनाक्रम पर भाजपा सरकार को आड़े हाथों लिया गया। कांग्रेस के महासचिव सचिन पायलट और सांसद दीपेन्द्र हुड्डा ने केंद्र सरकार और भाजपा नेताओं के बयानों पर तीखे सवाल उठाए। सांसद दीपेन्द्र हुड्डा ने भाजपा के राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा के बयानों की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि उन्होंने ÷पहलगाम में आतंकियों ने जिनके सुहाग उजाड़ दिये उनके सम्मान को अपने शब्दों से उजाड़ने का काम किया है।÷ उन्होंने महिला आयोग से सवाल किया कि इन बयानों का अब तक संज्ञान क्यों नहीं लिया गया। हुड्डा ने जोर देकर कहा कि जिन बहन-बेटियों का सिंदूर उजड़ा है, वे हमारी बहन-बेटियां हैं और पूरा देश उनके साथ एकजुट है। उन्होंने भाजपा पर दल देश से पहले की विचारधारा अपनाने का आरोप लगाते हुए कहा कि हरियाणा की वीरांगना हिमांशी नरवाल और कर्नल सोफिया कुरैशी को ट्रोल करना, तथा भाजपा के उपमुख्यमंत्री का सेना को बीजेपी नेता के चरणों में नतमस्तक कहना सरासर गलत है। उन्होंने कहा कि भाजपा नेताओं के बयान एकजुटता को तोड़ने और दुश्मन का मनोबल बढ़ाने का काम कर रहे हैं। सचिन पायलट ने आतंकवाद के मुद्दे पर भारत की एकजुटता का आह्वान करते हुए सरकार से तुरंत संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग की, ताकि संसद से आतंकवाद को जड़ से खत्म करने का एक मजबूत संदेश जाए।

इंफाल में प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच झड़प, यूपीएससी परीक्षा केंद्र के पास दागे गए आंसू गैस के गोले

एजेंसी

इंफाल। मणिपुर की राजधानी में उस समय हालात तनावपूर्ण हो गए जब जॉनस्टोन हायर सेकेंडरी स्कूल के पास, जहां यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा चल रही थी, प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच झड़प हो गई। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए आंसू गैस और अन्य उपायों का इस्तेमाल किया गया।कोऑर्डिनेशन कमिटी ऑन मणिपुर इंटीग्रिटी (कोकोमी) के नेतृत्व में यह विरोध उस कथित आदेश के खिलाफ था, जिसमें शिरुई महोत्सव के लिए उखरूल जा रही एमएसटी बसों से मणिपुर शब्द हटाने की बात कही गई थी।

प्रदर्शनकारियों ने इसे राज्य की पहचान पर हमला माना और राज्यपाल अजय कुमार भल्ला से माफी की मांग की। प्रदर्शनकारियों की रैली ख्वैराम्बंद इमा मार्केट से शुरू होकर राजभवन की ओर बढ़ रही थी, लेकिन कांगला वेस्टर्न गेट पर राज्य और केंद्रीय बलों ने उन्हें रोक दिया। स्थिति धीरे-धीरे हिंसक हो गई और दोपहर होते-होते झड़पें शुरू हो गई। सुरक्षा बलों ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस का सहारा लिया।प्रदर्शनकारियों ने इमा मार्केट के पास फिर से एकत्र होकर विरोध जारी रखा, जिससे दिन में एक बार फिर आंसू गैस का इस्तेमाल करना पड़ा। हालांकि, अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि यूपीएससी परीक्षा के दौरान आंसू गैस का प्रयोग नहीं किया गया। यह कार्रवाई परीक्षा शुरू होने से पहले और खत्म होने के समय ही की गई, जिससे परीक्षार्थियों को कोई असुविधा न हो।

कोकोमी ने मणिपुर की पहचान से छेड़छाड़ का आरोप लगाते हुए मुख्य सचिव, पुलिस महानिदेशक और सुरक्षा सलाहकार के इस्तीफे की मांग की है। संगठन ने राज्यव्यापी आंदोलन तेज करने की घोषणा भी की है। घटना में किसी के गंभीर रूप से घायल होने की सूचना नहीं है, लेकिन यह चिंता का विषय रहा कि झड़पें यूपीएससी परीक्षा केंद्र के बेहद करीब हुईं। फिर भी अधिकारियों ने पुष्टि की है कि परीक्षा निर्विघ्न रूप से आयोजित हुई।

हिमालय का प्रवेशद्वार
ऋषिकेश

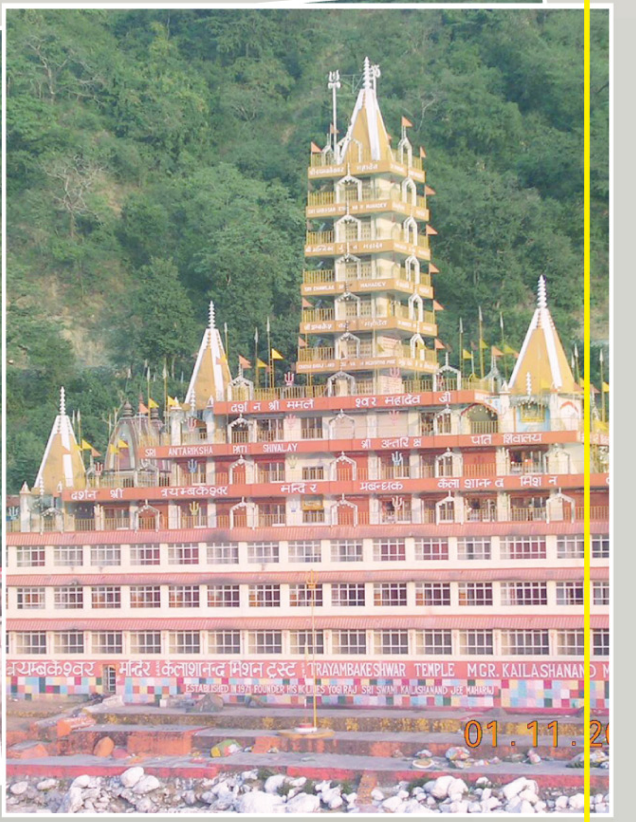

{ ऋषिकेश से संबंधित अनेक धार्मिक कथाएं प्रचलित हैं। कहा जाता है कि समुद्र मंथन के दौरान निकला विष शिव ने इसी स्थान पर पिया था। विष पीने के बाद उनका गला नीला पड़ गया और उन्हें नीलकंठ के नाम से जाना गया। एक अन्य अनुश्रुति के अनुसार भगवान राम ने वनवास के दौरान यहां के जंगलों में अपना समय व्यतीत किया था। रस्सी से बना लक्ष्मण झूला इसका प्रमाण माना जाता है। }

हिमालय का प्रवेश द्वार, ऋषिकेश जहां पहुंचकर गंगा पर्वतमालाओं को पीछे छोड़ समतल धरातल की तरफ आगे बढ़ जाती है। हरिद्वार से मात्र 24 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ऋषिकेश विश्व प्रसिद्ध एक योग केंद्र है। ऋषिकेश का शांत वातावरण कई विख्यात आश्रमों का घर है। उत्तराखण्ड में समुद्र तल से 1360 फीट की ऊंचाई पर स्थित ऋषिकेश भारत के सबसे पवित्र तीर्थस्थलों में एक है। हिमालय की निचली पहाड़ियों और प्राकृतिक सुन्दरता से घिरे इस धार्मिक स्थान से बहती गंगा नदी इसे अतुल्य बनाती है। ऋषिकेश को केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री का प्रवेशद्वार माना जाता है। कहा जाता है कि इस स्थान पर ध्यान लगाने से मोक्ष प्राप्त होता है। हर साल यहां के आश्रमों के बड़ी संख्या में तीर्थयात्री ध्यान लगाने और मन की शान्ति के लिए आते हैं। विदेशी पर्यटक भी यहां आध्यात्मिक सुख की चाह में नियमित रूप से आते रहते हैं।

प्रचलित कथाएं

ऋषिकेश से संबंधित अनेक धार्मिक कथाएं प्रचलित हैं। कहा जाता है कि समुद्र मंथन के दौरान निकला विष शिव ने इसी स्थान पर पिया था। विष पीने के बाद उनका गला नीला पड़ गया और उन्हें नीलकंठ के नाम से जाना गया। एक अन्य अनुश्रुति के अनुसार भगवान राम ने वनवास के दौरान यहां के जंगलों में अपना समय व्यतीत किया था। रस्सी से बना लक्ष्मण झूला इसका प्रमाण माना जाता है। 1939 ई. में लक्ष्मण झूले का पुनर्निर्माण किया गया। यह भी कहा जाता है कि ऋषि राभ्या ने यहां ईश्वर के दर्शन के लिए कठोर तपस्या की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान ऋषिकेश के अवतार में प्रकट हुए। तब से इस स्थान को ऋषिकेश नाम से जाना जाता है।

लक्ष्मण झूला

गंगा नदी के एक किनार को दूसरे किनारे से जोड़ता यह झूला शहर की खास पहचान है। इसे 1939 में बनवाया गया था। कहा जाता है कि गंगा नदी को पार करने के लिए लक्ष्मण ने इस स्थान पर जूट का झूला बनवाया था। झूले के बीच में पहुंचने पर वह हिलता हुआ प्रतीत होता है। 450 फीट लंबे इस झूले के समीप ही लक्ष्मण और रघुनाथ मंदिर हैं। झूले पर खड़े होकर आसपास के खूबसूरत नजारों का आनंद लिया जा सकता है। लक्ष्मण झूला के समान राम झूला भी नजदीक ही स्थित है। यह झूला शिवानंद और स्वर्ग आश्रम के बीच बना है। इसलिए इसे शिवानंद झूला के नाम से भी जाना जाता है।

त्रिवेणी घाट

ऋषिकेश में स्नान करने का यह प्रमुख घाट है जहां प्रातः काल में अनेक श्रद्धालु पवित्र गंगा नदी में डुबकी लगाते हैं। कहा जाता है कि इस स्थान पर हिन्दु धर्म की तीन प्रमुख नदियों गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम होता है। इसी स्थान से गंगा नदी दायीं ओर मुड़ जाती है। शाम को होने वाली यहां की आरती का नजारा बेहद आकर्षक होता है।

राम झूला पुल

स्वामी विशुद्धानन्द द्वारा स्थापित यह आश्रम ऋषिकेश का सबसे प्राचीन आश्रम है। स्वामी जी को काली कमली वाले नाम से भी जाना जाता था। इस स्थान पर बहुत से सुन्दर मंदिर बने हुए हैं। यहां खाने पीने के अनेक रेस्तरां हैं जहां सिर्फ शाकाहारी भोजन ही परोसा जाता है। आश्रम की आसपास हस्तशिल्प के सामान की बहुत सी दुकानें हैं।

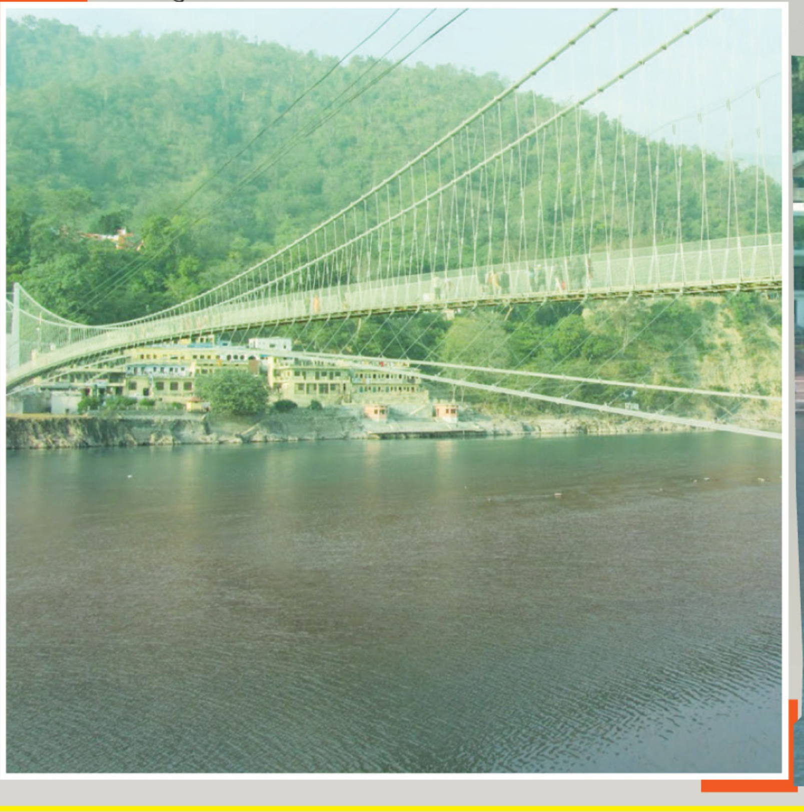

नीलकंठ महादेव मंदिर-

लगभग 5500 फीट की ऊंचाई पर स्वर्ग आश्रम की पहाड़ी की चोटी पर नीलकंठ महादेव मंदिर स्थित है। कहा जाता है कि भगवान शिव ने इसी स्थान पर समुद्र मंथन से निकला विष ग्रहण किया गया था। विषपान के बाद विष के प्रभाव के से उनका गला नीला पड़ गया था और उन्हें नीलकंठ नाम से जाना गया था। मंदिर परिसर में पानी का एक झरना है जहां भक्तगण मंदिर के दर्शन करने से पहले स्नान करते हैं।

भरत मंदिर-

यह ऋषिकेश का सबसे प्राचीन मंदिर है जिसे 12 शताब्दी में आदि गुरू शंकराचार्य ने बनवाया था। भगवान राम के छोटे भाई भरत को समर्पित यह मंदिर त्रिवेणी घाट के निकट ओल्ड टाउन में स्थित है। मंदिर का मूल रूप 1398 में तैमूर आक्रमण के दौरान क्षतिग्रस्त कर दिया गया था। हालांकि मंदिर की बहुत सी महत्वपूर्ण चीजों को उस हमले के बाद आज तक संरक्षित रखा गया है। मंदिर के अंदरूनी गर्भगृह में भगवान विष्णु की प्रतिमा एकल शालीग्राम पत्थर पर उकेरी गई है। आदि गुरू शंकराचार्य द्वारा रखा गया श्रीयंत्र भी यहां देखा जा सकता है।

कैलाश निकेतन मंदिर-

लक्ष्मण झूले को पार करते ही कैलाश निकेतन मंदिर है। 12 खंड़ों में बना यह विशाल मंदिर ऋषिकेश के अन्य मंदिरों से भिन्न है। इस मंदिर में सभी देवी देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं।

वशिष्ठ गुफा-

ऋषिकेश से 22 किमी. की दूरी पर 3000 साल पुरानी वशिष्ठ गुफा बद्रीनाथ-केदारनाथ मार्ग पर स्थित है। इस स्थान पर बहुत से साधु विश्राम और ध्यान लगाए देखे जा सकते हैं। कहा जाता है यह स्थान भगवान राम और बहुत से राजाओं के पुरोहित वशिष्ठ का निवास स्थल था। वशिष्ठ गुफा में साधुओं को ध्यानमग्न मुद्रा में देखा जा सकता है। गुफा के भीतर एक शिवलिंग भी स्थापित है।

गीता भवन-

राम झूला पार करते ही गीता भवन है जिसे 1950 ई. में श्रीजयदयाल गोयन्काजी ने बनवाया गया था। यह अपनी दर्शनीय दीवारों के लिए प्रसिद्ध है। यहां रामायण और महाभारत के चित्रों से सजी दीवारें इस स्थान को आकर्षण बनाती हैं। यहां एक आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी और गीताप्रेस गोरखपुर की एक शाखा भी है। प्रवचन और कीर्तन मंदिर की नियमित क्रियाएं हैं। शाम को यहां भक्ति संगीत की आनंद लिया जा सकता है। तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए यहां सैकड़ों कमरे हैं।

कैसे जाएं

वायुमार्ग–

ऋषिकेश से 18 किमी. की दूरी पर देहरादून के निकट जौली ग्रान्ट एयरपोर्ट नजदीकी एयरपोर्ट है। इंडियन एयरलाइन्स की फ्लाइटें इस एयरपोर्ट को दिल्ली से जोड़ती है।

रेलमार्ग–

ऋषिकेश का नजदीकी रलवे स्टेशन ऋषिकेश है जो शहर से 5 किमी. दूर है। ऋषिकेश देश के प्रमुख रलवे स्टेशनों से जुड़ा हुआ है।

सड़क मार्ग

दिल्ली के कश्मीरी गेट से ऋषिकेश के लिए डीलक्स और निजी बसों की व्यवस्था है। राज्य परिवहन निगम की बसें नियमित रूप से दिल्ली और उत्तराखंड के अनेक शहरों से ऋषिकेश के लिए चलती हैं।

खरीददारी

ऋषिकेश में हस्तशिल्प का सामान अनेक छोटी दुकानों से खरीदा जा सकता है। यहां अनेक दुकानें हैं जहां से साड़ियों, बेड कवर, हैन्डलूम फेबरिक, कॉटन फेबरिक आदि की खरीददारी की जा सकती है। ऋषिकेश में सरकारी मान्यता प्राप्त हैन्डलूम शॉप, खादी भंडार, गढ़वाल वूल और क्राफ्ट की बहुत सी दुकानें हैं जहां से उच्चकोटि का सामान खरीदा जा सकता है।

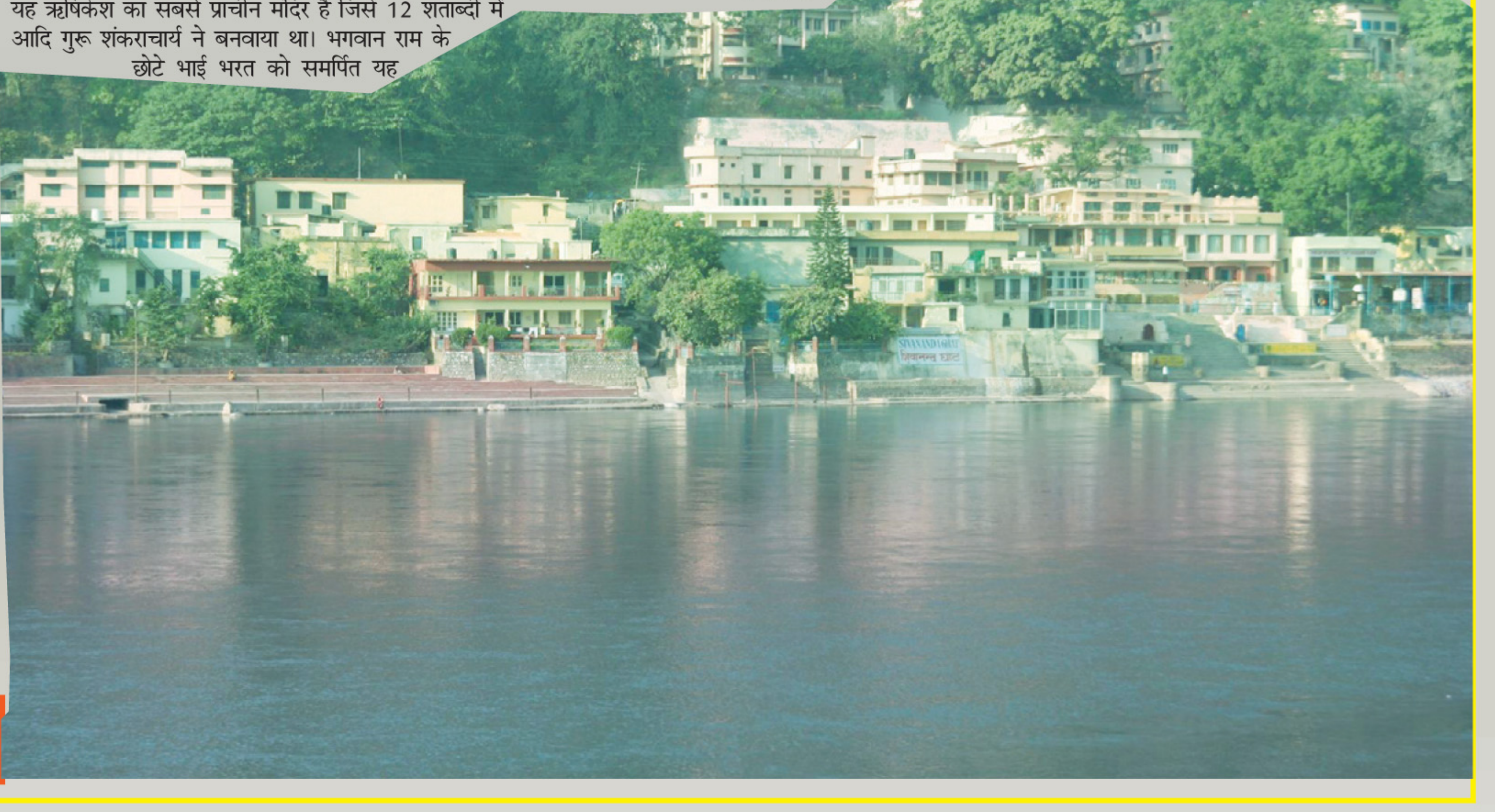

लाहौर कलंदर्स ने चार साल में तीसरी बार जीता पीसीएल का खिताब

एजेंसी

लाहौर। जिम्बाब्वे के हरफनमौला सिकंदर रजा ने टॉस से महज 10 मिनट पहले इंग्लैंड से यहां पहुंचकर लाहौर कलंदर्स को चार साल में पाकिस्तान सुपर लीग का तीसरा खिताब दिलाने में अहम भूमिका निभाई। खिताब जीतने पर कलंदर्स को पुरस्कार के रूप में 500,000 डॉलर भी मिले जो करीब 4.24 करोड़ रुपए बनते हैं। वहीं उपविजेता टीम ग्लेडिएटर्स को 200,000 डॉलर मिले, जो लगभग 1.69 करोड़ रुपए बनते हैं। अगर इस राशि को अगर आईपीएल की इमानी राशि से जोड़कर देखा जाए तो यह काफी कम हैं क्योंकि आईपीएल का खिताब जीतने वाली टीम को 20 करोड़ रुपए मिलेंगे। वहीं क्कस्रु की खिताबी राशि से कहीं अधिक राशि पीसीएल नीलामी में खिलाड़ियों पर खर्च की जाती है। इसमें ऋषभ पंत एक उदाहरण हैं जो इस बार 27 करोड़ में बिके थे। लाहौर ने रोमांचक फाइनल में बड़े स्कोर का सफलता से पीछा करते हुए क्वेटा ग्लैडिएटर्स को एक गेंद शेष रहते छह विकेट से हराया। रजा ने नॉटिंघम में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट मैच खेला था जिसे जिम्बाब्वे शनिवार को पारी से हार गया था। उन्होंने रविवार को सात गेंदों पर नाबाद 22 रन बनाए जबकि कुसल परेरा ने 31 गेंदों में नाबाद 62 रनों की पारी खेली जिससे लाहौर ने 19.5 ओवर में चार विकेट पर 204 रन बनाकर जीत दर्ज की। क्वेटा ने पहले बल्लेबाजी करने का फैसला करने के बाद 9 विकेट पर 201 रन बनाए थे।

कीसी कार्टी का 'डबल' शतक, आयरलैंड के गेंदबाजों की उड़ी नींद

डबलिन ।केंसल एवेन्यू में विंडीज प्लेयर कीसी कार्टी ने आयरलैंड के खिलाफ तीसरे वनडे में अपने बल्ले से गद्दर मचा दिया। सीरीज के दूसरे मैच में शतक लगाने वाली कार्टी ने तीसरे वनडे में भी शतक लगाया। इस तरह लगातार दो पारियों में उनके डबल शतक हो गए हैं। उन्होंने अपने इस शतक की बदौलत विंडीज को 50 ओवरों में 7 विकेट के नुकसान पर 385 रन तक पहुंचा दिया। कार्टी के पास दोहरा शतक लगाने का भी मौका था लेकिन 48वें ओवर में उन्हें मैकार्थी ने आऊट कर दिया। वह विंडीज की ओर से वनडे की एक पारी में छठे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले प्लेयर बन गए हैं। विंडीज की शुरूआत खराब रही थी। ब्रैंडन किंग 1 तो इविन लुईस 14 रन बनाकर आऊट हो गए। लेकिन इसके बाद कीसी कार्टी और कप्तान शाई होप ने पारी को संभाला और 168 तक पहुंचा दिया। शाई होप 75 गेंदों पर 9 चौके और 2 छक्कों की मदद से 75 रन बनाए। कीसी ने इसके बाद आमिर जंगू और जस्टिन ग्रीव्स के साथ मिलकर स्कोर आगे बढ़ाया। ग्रीव्स ने 23 गेंदों पर 5 चौके और तीन छक्कों की मदद से 50 रन बनाए। कीसी कार्टी ने 142 गेंदों पर 15 चौके और 8 छक्कों की मदद से 170 रन बनाए। इसके बाद रोस्टन चेज और मोंटी ने स्कोर 385 तक पहुंचा दिया। आयरलैंड की ओर से बैरी मैकार्थी ने 3 तो लियाम मैकार्थी ने 2 विकेट लीं।

टीम हारी, लेकिन सुनील नरेन ने किया अपना काम, बनाया बड़ा रिकॉर्ड

नई दिल्ली। टी20 क्रिकेट में कोलकाता नाइट राइडर्स के स्टार स्पिनर सुनील नरेन ने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। नरेन ने किसी एक टी20 टीम के लिए सबसे ज्यादा विकेट लेने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। उन्होंने कोलकाता के लिए 209 विकेट हासिल किए, जो इस फॉर्मेट में किसी एक फ्रेंचाइजी के लिए सबसे ज्यादा है। यह उपलब्धि आईपीएल 2025 के दौरान हासिल हुई, जहां नरेन ने अपनी फिरकी से बल्लेबाजों को लगातार परेशान किया। वेस्टइंडीज के इस दिग्गज ऑफ-स्पिनर ने नॉटिंघमशायर के समित पटेल को पीछे छोड़ा, जिनके नाम 208 विकेट हैं। तीसरे स्थान पर हैम्पशायर के क्रिस वुड हैं, जिन्होंने 199 विकेट लिए, जबकि श्रीलंका के तेज गेंदबाज लसिथ मलिंगा 195 विकेट के साथ चौथे स्थान पर हैं, जो उन्होंने मुंबई इंडियंस के लिए हासिल किए। सुनील नरेन ने कोलकाता के लिए 2012 में डेब्यू किया था और तब से वे टीम के सबसे भरोसेमंद गेंदबाज रहे हैं। उनकी कसी हुई गेंदबाजी, विविधताओं भरी स्पिन और पावरप्ले व डेथ ओवर्स में प्रभावी गेंदबाजी ने उन्हें कोलकाता का अभिन्न हिस्सा बनाया। नरेन ने न केवल विकेट चटकाए, बल्कि अपनी किफायती गेंदबाजी से कई बार विरोधी टीमों के रन रेट पर अंकुश लगाया। इसके अलावा, उनकी विस्फोटक बल्लेबाजी और फील्डिंग ने भी कोलकाता को कई मौकों पर जीत दिलाई।

नहीं जीत पाये श्रीकांत मलेशिया मास्टर्स का खिताब

बुकित जलील। भारत के स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी किदांबी श्रीकांत को मलेशिया मास्टर्स 2025 बैडमिंटन टूर्नामेंट के फाइनल में हार का सामना करना पड़ा। आज यहां खेले गये पुरुष एकल वर्ग के फाइनल मुकाबले में बैडमिंटन रैंकिंग में 65वें स्थान पर काबिज किदांबी श्रीकांत को विश्व के चौथे नंबर के खिलाड़ी चीन के ली शिफेंग ने 36 मिनट तक चले मैच में सीधे सेटों में 21-11, 21-9 से हराया। किदांबी श्रीकांत की ली शिफेंग के खिलाफ पांच मैचों में चौथी हार है। मैच की शुरुआत भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी ने पहला अंक हासिल करके की लेकिन इसके बाद शिफेंग ने श्रीकांत पर दबाव बनाना शुरू किया और 6-3 की अहम बढ़त बना ली। मिड गेम ब्रेक तक विश्व के चौथे नंबर के खिलाड़ी शिफेंग ने 11-6 की बढ़त बना ली थी।

ब्राजील पहुंचे कार्लो एंसेलोटी, संभालेंगे ब्राजील की राष्ट्रीय फुटबॉल टीम के मुख्य कोच की भूमिका

एजेंसी

रियो डी जनेरियो। इटली के दिग्गज कार्लो एंसेलोटी ब्राजील पहुंचे, जहां वह अब ब्राजील की राष्ट्रीय फुटबॉल टीम के नए मुख्य कोच की भूमिका संभालेंगे। 65 वर्षीय एंसेलोटी ब्राजील के लिए काम करने वाले पिछले एक सदी में पहले पूर्णकालिक विदेशी कोच हैं। वह परिवार और अपनी कोचिंग टीम के साथ स्थानीय समयानुसार रात 9 बजे के करीब निजी जेट से रियो इंटरनेशनल एयरपोर्ट पहुंचे।ब्राजील पहुंचते समय एंसेलोटी ने ब्राजील की राष्ट्रीय टीम की कैप पहन रखी थी, जो उनके नए सफर की शुरुआत का संकेत था। हालांकि एयरपोर्ट पर उनका कोई आधिकारिक स्वागत नहीं किया गया। केवल एक प्रशंसक, जो ब्राजील की जर्सी पहने हुए था, उन्हें बाहर निकलते हुए देख सका।

एंसेलोटी आज एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के जरिए ब्राजील टीम के मुख्य कोच के तौर पर अपनी नई भूमिका की औपचारिक शुरुआत करेंगे। इसके साथ ही वह अगले महीने इक्वाडोर और पराग्वे के खिलाफ होने वाले दक्षिण अमेरिकी वर्ल्ड कप क्वालीफायर मुकाबलों के लिए टीम का ऐलान भी करेंगे। उनके आगमन से कुछ घंटे पहले ही सामिर ज़ाउद को ब्राजील फुटबॉल परिसंघ (सीबीएफ) का नया अध्यक्ष चुना गया। यह चुनाव एक लंबी कानूनी प्रक्रिया के बाद संपन्न हुआ, जिसमें एडनाल्डो रोड्रिग्स को पद से हटाया गया था। उल्लेखनीय है कि रोड्रिग्स ही वो व्यक्ति थे जिन्होंने एंसेलोटी को रियल मैड्रिड से नियुक्त किया था। अब एंसेलोटी की नजरें सीबीएफ नेतृत्व से मुलाकात और मीडिया के सामने अपनी योजनाओं को साझा करने पर होंगी। उनका करार 2026 फीफा वर्ल्ड कप तक रहेगा।

इंग्लैंड के खिलाफ महत्वपूर्ण टेस्ट सीरीज से पहले गौतम गंभीर ने मां कामाख्या से लिया आशीर्वाद

एजेंसी

गुवाहाटी। भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच एवं पूर्व भारतीय क्रिकेटर गौतम गंभीर ने सुबह गुवाहाटी में मां कामाख्या से आशीर्वाद लिया। पूर्व भारतीय क्रिकेटर कड़ी सुरक्षा के बीच कामाख्या मंदिर पहुंचे। उल्लेखनीय है कि गौतम गंभीर एक दिवसीय दौरे के तहत आज गुवाहाटी पहुंचे। गौतम गंभीर ने कड़ी सुरक्षा के बीच मां कामाख्या का आशीर्वाद लिया। गौतम गंभीर लोकप्रिय गोपीनाथ बोरदोलोई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से सीधे कामाख्या मंदिर पहुंचे। भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच ने पूजा-अर्चना करने के बाद मां कामाख्या धाम से गुवाहाटी के होटल रेडिसन ब्लू के लिए रवाना हुए। मिली जानकारी के अनुसार गौतम गंभीर आज दोपहर 1 बजे दिल्ली के लिए उड़ान भरेंगे। बताया गया है कि उनका अन्य कोई कार्यक्रम गुवाहाटी में नहीं है। सिर्फ मां कामाख्या का आशीर्वाद लेने के लिए ही वे यहां पहुंचे थे।

भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने चार देशों के टूर्नामेंट में उरुग्वे को 3-2 से हराया

एजेंसी

नई दिल्ली। अर्जेंटीना के रोसारियो में खेले जा रहे चार देशों के फ्रेंडली हॉकी टूर्नामेंट में भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने अपने दूसरे मुकाबले में उरुग्वे को 3-2 से हराकर शानदार जीत दर्ज की। भारत के लिए सोनम (21वें मिनट) और कनिका सिवाच (46वें मिनट, 50वें मिनट) ने अहम गोल किए, जबकि उरुग्वे की ओर से मिलाग्रोस सिगल (3वें मिनट) और अगस्टिना मारी (24वें मिनट) ने गोल दागे।

मैच की शुरुआत में ही उरुग्वे ने आक्रामक खेल दिखाया और तीसरे मिनट में मिलाग्रोस सिगल ने पेनल्टी कॉर्नर को गोल में बदलकर अपनी टीम को शुरुआती बढ़त दिला दी। दूसरे क्वार्टर में भारत ने वापसी की और 21वें मिनट में सोनम ने पेनल्टी कॉर्नर के जरिए बराबरी का गोल किया। हालांकि, महज तीन मिनट बाद उरुग्वे ने एक बार फिर बढ़त हासिल कर ली जब अगस्टिना मारी ने भी पेनल्टी कॉर्नर से गोल दागा तीसरे क्वार्टर तक स्कोर 2-1 रहा, लेकिन अंतिम चरण में कनिका सिवाच ने जोरदार प्रदर्शन करते हुए

भारत की वापसी कराई। उन्होंने पहले 46वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर से गोल किया, और फिर 50वें मिनट में एक शानदार फील्ड गोल के जरिए भारत को निर्णायक बढ़त दिला दी।

अब भारत का अगला मुकाबला 28 मई (भारतीय समयानुसार) को मेजबान अर्जेंटीना से होगा।

प्रीमियर लीग 2024-25 : लिवरपूल ने खिताबी सीजन का समापन क्रिस्टल पैलेस के खिलाफ 1-1 ड्रॉ से किया

एजेंसी

लिवरपूल। लिवरपूल ने प्रीमियर लीग 2024-25 के अपने खिताबी अभियान का समापन रविवार रात क्रिस्टल पैलेस के खिलाफ 1-1 की बराबरी के साथ किया। मैच में मोहम्मद सालाह ने 84वें मिनट में शानदार गोल कर टीम को हार से बचाया। इससे पहले इश्माइला सार ने नौवें मिनट में गोल कर पैलेस को शुरुआती बढ़त दिलाई थी।

पहले ही जीत चुकी थी लीग, जश्न में डूबा रहा एंफील्ड

लिवरपूल पहले ही चार मुकाबले शेष रहते खिताब अपने नाम कर चुका था। ऐसे में एंफील्ड स्टेडियम का माहौल पूरी तरह से जश्न में डूबा हुआ था। दिलचस्प बात यह रही कि पैलेस के फैन्स, जो पिछले हफ्ते एफए कप जीत का जश्न मना चुके थे, उन्होंने भी चैंपियंस के नारों से माहौल गर्माया। मैच में ट्रेंट अलेक्जेंडर-अर्नोल्ड को उनके आखिरी मैच में दूसरे हाफ में उतारा गया। यह उनका लिवरपूल के लिए 354वां और अंतिम मुकाबला था। रिपोर्ट्स के मुताबिक वे रियल मैड्रिड जाने वाले हैं। उन्होंने डार्विन नुनेज को शानदार पास दिया लेकिन गोलकीपर डीन हेंडरसन ने बढ़िया बचाव किया। इसके बाद डियोगो जोटा का शॉट भी पोस्ट से टकराकर

बाहर चला गया। वहीं, रयान ग्रावेनबर्ख को सीधे रेड कार्ड दिखाया गया जिससे वह अगले सीजन के पहले मैच से बाहर रहेंगे।

सालाह ने रिकॉर्ड की बराबरी कर जीते दो बड़े अवॉर्ड

मैच के 84वें मिनट में सालाह ने कराटे-किक स्टाइल में गोल कर मुकाबला बराबर कर दिया। यह उनका इस सीजन का 29वां गोल रहा। इसी के साथ वे एंडी कोल और एलन शियरर के 47 गोल इन्वॉल्वमेंट (गोल + असिस्ट) के रिकॉर्ड की बराबरी पर पहुंचे।

मैच के बाद सालाह को गोल्डन बूट और 'प्लेमेकर ऑफ द सीजन' अवॉर्ड

लिवरपूल के दिग्गज गोलस्कोरर इयान रश ने प्रदान किए। वहीं कप्तान वर्जिल वान डाइक ने ट्रॉफी उठाकर सीजन का शानदार समापन किया।

अब अगले सीजन में नया युग शुरू करेगा लिवरपूल

इस मुकाबले के साथ लिवरपूल का यह चैम्पियन सीजन समाप्त हुआ, जहां क्लब ने न सिर्फ ट्रॉफी जीती बल्कि एक युग का भी अंत देखा, जिसमें ट्रेंट और मैनेजर जुर्गन क्लॉप की विदाई शामिल रही। अब देखना होगा कि आने वाले सीजन में लिवरपूल अपनी इस फॉर्म को कैसे बरकरार रखता है।

आईपीएल 2025: क्लासेन के ऐतिहासिक शतक से हैदराबाद ने कोलकाता को 110 रनों से रौंदा

एजेंसी

नई दिल्ली। अरुण जेटली स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) को 110 रनों के भारी अंतर से हराकर आईपीएल 2025 से विजयी विदाई ली। भले ही यह मैच प्लेऑफ की दौड़ में किसी बदलाव का कारण नहीं बना लेकिन दोनों टीमों के लिए यह आत्मसम्मान की लड़ाई थी, जिसमें हैदराबाद ने दमदार अंदाज में जीत दर्ज की।

हैदराबाद के बल्लेबाजों ने इस मुकाबले में तूफानी प्रदर्शन किया। टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 4 विकेट के नुकसान पर 278 रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया। शुरुआत अभिषेक शर्मा (32 रन, 12 गेंद) और ट्रेविस हेड (76 रन, 39 गेंद) ने की, जिन्होंने मात्र 6 ओवरों में 92 रनों की विस्फोटक साझेदारी कर टीम को तेज रफ्तार दी। इसके बाद दक्षिण अफ्रीका के विस्फोटक विकेटकीपर बल्लेबाज हेनरिक क्लासेन ने मैदान में तूफान ला दिया। उन्होंने महज 37 गेंदों में शतक

जड़ते हुए आईपीएल इतिहास का संयुक्त तीसरा सबसे तेज शतक अपने नाम किया। क्लासेन की पारी में चौकों-छक्कों की बरसात रही और उन्होंने अपनी टीम को एक विशाल स्कोर तक पहुंचा दिया। कोलकाता के लिए गेंदबाजी में सिर्फ सुनील नारायण (2 विकेट) और वैभव अरोड़ा (1 विकेट) ही कुछ हद तक असरदार रहे, जबकि अन्य गेंदबाजों पर हैदराबाद के बल्लेबाजों ने कहर बरपाया। 278 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी केकेआर की टीम शुरुआत से ही लड़खड़ा गई। सलामी बल्लेबाज सुनील नारायण ने 31 रन बनाए, लेकिन उन्हें कोई साथ नहीं मिला। रहाणे (15), डी कॉक (9), और रघुवंशी (15) जल्दी-जल्दी पवेलियन लौट गए। रिंकू सिंह (9) और आंद्रे रसेल (0) को हर्ष दुबे ने दो गेंदों में चलता कर दिया, जिससे कोलकाता की उम्मीदें पूरी तरह टूट गई। निचले क्रम के बल्लेबाज मनीष पांडे (37) और हर्षित राणा (34) ने कुछ संघर्ष दिखाया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। हैदराबाद की ओर से जयदेव उनादकट, ईशान मलिंगा और हर्ष दुबे ने तीन-तीन विकेट चटकाकर कोलकाता की पारी को 168 रन पर समेट दिया।इस शानदार जीत के साथ हैदराबाद ने सीजन का समापन आत्मविश्वास के साथ किया।

प्लेऑफ से पहले आरसीबी में जोश हेजलवुड की हुई वापसी

एजेंसी

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 अब अपने अंतिम पड़ाव पर है। सिर्फ कुछ लीग मुकाबले बाकी हैं, उसके बाद प्लेऑफ मुकाबले होंगे और फिर 3 जून को फाइनल खेला जाएगा। इस बीच रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के खेमे में खुशी की लहर दौड़ गई है। टीम के प्रमुख तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड टीम से जुड़ गए हैं। आरसीबी को अपना आखिरी लीग मैच लखनऊ सुपरजायंट्स के खिलाफ मंगलवार अर्थात 27 मई को खेलना है। इसके बाद प्लेऑफ मुकाबले शुरु हो जाएंगे। ऐसे में आरसीबी के लिए यह बड़ी खुशखबरी है कि उनकी टीम का प्रमुख तेज तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड वापस आ गए हैं। फ्रेंचाइजी ने ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी के आगमन की पुष्टि करते हुए सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट किया, वो आ गया। स्वागत है जोश रेजिनाल्ड हेजलवुड! दरअसल, जोश हेजलवुड ने आईपीएल 2025 में अपना आखिरी मैच 27 अप्रैल को दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ खेला था। इसके बाद तीन मई को वह कंधे की चोट के चलते चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ मुकाबले में नहीं खेल पाए थे। फिर भारत-पाकिस्तान तनाव के चलते 9 मई को आईपीएल एक हफ्ते के लिए सस्पेंड हो गया था। तब हेजलवुड अपने घर लौट गए थे। बाद में 17 मई को फिर से सीजन की शुरुआत हुई।

फ्रेंच ओपन में राफेल नडाल को दी गई भावभीनी विदाई

एजेंसी

पेरिस। 14 बार के फ्रेंच ओपन चैंपियन और पूर्व स्पेनिश टेनिस स्टार राफेल नडाल को रोलां गैरोस कॉम्प्लेक्स के कोर्ट फिलिप शात्रिए पर आयोजित एक विशेष समारोह में भावभीनी विदाई दी गई। 38 वर्षीय नडाल ने पिछले साल नवंबर में टेनिस से संन्यास लिया था और इस अवसर पर हजारों दर्शकों ने खड़े होकर उन्हें सम्मान दिया।

20 साल के सफर पर नडाल हुए भावुक: समारोह के दौरान नडाल ने जब अपने करियर की झलकियों का वीडियो देखा तो वे बेहद भावुक हो गए। उन्होंने कहा,मुझे नहीं पता कहां से शुरू करूंज मैं पिछले 20 सालों से इस कोर्ट पर खेलता आया हूं। मैंने यहां दर्द भी सहा है, जीत का स्वाद भी चखा है, और हार भी देखी है। इस कोर्ट पर मेरे जीवन की सबसे गहरी भावनाएं जुड़ी हैं। दर्शकों ने अलग-अलग रंग की टी-शर्ट पहनकर '14 RG, Rafa' का अद्भुत नजारा पेश किया, जो नडाल को उनके 14 फ्रेंच ओपन खिताबों

के लिए सम्मान देने का तरीका था। पूरा स्टेडियम तालियों और जयकारों से गूंज उठा।

परिवार और दिग्गज खिलाड़ियों की मौजूदगी में हुआ सम्मान: समारोह में नडाल के परिवार के सभी सदस्य मौजूद थे– उनके चाचा और पूर्व कोच टोनी नडाल, पिता सेबास्टियन नडाल, मां एना मारिया परेरा, पत्नी मारिया फ्रांसिस्का पेरेलो, बहन मारिया इसाबेल और बेटे राफा जूनियर ने इस ऐतिहासिक पल को साझा किया। इसके अलावा मौजूदा फ्रेंच ओपन महिला चैंपियन पोलैंड की इगा स्विएतेक, पुरुष चैंपियन स्पेन के कार्लोस अल्कराज और उनके कोच जुआन कार्लोस फेरेरो भी समारोह में शामिल हुए। ये दोनों खिलाड़ी सोमवार से अपने खिताब की रक्षा शुरू करेंगे।

'बिग फोर' ने एक बार फिर मंच साझा किया: नडाल के सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी रहे रोजर फेडरर, नोवाक जोकोविच और एंडी मरे भी इस समारोह में विशेष रूप से शामिल हुए। चारों दिग्गजों को एक साथ देखकर दर्शकों की आंखें नम हो गईं। नडाल ने कहा, इतने सालों की लड़ाई के बाद आज यह सब देखना बहुत भावुक कर देने वाला है। वक्त सब कुछ बदल देता है। फेडरर और जोकोविच दोनों ने नडाल को गले लगाया। खास बात यह रही कि तीन साल पहले नडाल ने फेडरर के विदाई मैच में उनके साथ जोड़ी बनाकर खेला था, जिसकी एक तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हुई थी जिसमें दोनों दिग्गज हाथ पकड़े भावुक नजर आए थे। नडाल, जोकोविच, फेडरर और मरे–इन 'बिग फोर' ने पिछले दो दशकों में टेनिस को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। नडाल 22 बार, फेडरर 20 बार, जोकोविच 24 बार और मरे 3 बार ग्रैंड स्लैम जीत चुके हैं। रोलां गैरोस की यह विदाई सिर्फ एक खिलाड़ी के लिए नहीं, बल्कि एक स्वर्णिम युग को अलविदा कहने जैसा रहा।

सेंटर आफ एक्सीलेंस टूर्नामेंट के लिए हिमाचल की दो क्रिकेटर का चयन

एजेंसी

धर्मशाला। बीसीसीआई के सेंटर आफ एक्सीलेंस द्वारा अंडर-19 गर्ल्स इंटर सेंटर आफ एक्सीलेंस टूर्नामेंट का आयोजन किया जा रहा है। 30 मई से 9 जून तक अहमदाबाद में आयोजित होने वाले टूर्नामेंट में एचपीसीए की दो महिला खिलाड़ियों का चयन हुआ है, जिसमें जिला शिमला की अनाहिता सिंह टीम सी और जिला कांगड़ा की धन्यलक्ष्मी टीम ए में शामिल होंगी। चयनित खिलाड़ियों को 29 मई को टूर्नामेंट स्थल पर रिपोर्ट करना होगा। एचपीसीए सचिव अवनीश परमार ने प्रदेश की दो महिला खिलाड़ियों के चयन पर उन्हें एचपीसीए की ओर से बधाई देते हुए टूर्नामेंट में बेहतर प्रदर्शन की शुभकामनाएं दी हैं।

रेड बॉल फॉर्मेट में देश के नेतृत्व का अवसर मिलना बड़ा सम्मान : शुभमन गिल

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय टेस्ट टीम के नए कप्तान शुभमन गिल ने कहा है कि रेड बॉल फॉर्मेट में देश का नेतृत्व करने का अवसर मिलना एक बड़ा सम्मान और बड़ी जिम्मेदारी है। मैं इस रोमांचक अवसर का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूं।

भारतीय क्रिकेट टीम को अगले महीने इंग्लैंड दौरे पर जाना हैं, जहां टीम को पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेलनी है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने बीते दिन इस दौरे के लिए 18 सदस्यीय भारतीय टीम का एलान भी कर दिया। वरिष्ठ खिलाड़ी रोहित शर्मा के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास के बाद शुभमन गिल को टेस्ट टीम का नया कप्तान बनाया गया है, वहीं ऋषभ पंत को उप कप्तान की जिम्मेदारी दी गई है। कप्तान बनाए जाने के बाद पहली बार बीसीसीआई डॉट टीवी (क्चष्टष्ठ.ह्ल1) पर रविवार को शेयर वीडियो में शुभमन गिल ने कहा कि एक युवा बच्चे के रूप में, जब कोई क्रिकेट खेलना शुरू करता है तो वह भारत के लिए खेलना चाहता है। न केवल भारत के लिए खेलना, बल्कि बहुत लंबे समय तक भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट खेलना। गिल ने कहा कि यह अवसर पाना मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है और यह एक बड़ी जिम्मेदारी भी है। मैं इस रोमांचक अवसर का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूं। इंग्लैंड के खिलाफ आगामी सीरीज रोमांचक होने वाली है गिल ने कहा कि एक कप्तान के तौर पर आपको पता होना चाहिए कि कब आगे आना है और कब अपने खिलाड़ियों को जगह देनी है, क्योंकि हर किसी की जिंदगी अलग होती है। हर किसी का व्यक्तित्व अलग होता है। इसलिए एक अच्छे लीडर को हमेशा यह पता होना चाहिए कि उसके खिलाड़ी किस तरह से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन या सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। गिल खुद को भाग्यशाली मानते हैं कि उन्हें पूर्व कप्तानों रोहित शर्मा और विराट कोहली के नेतृत्व में कुछ अहम बातें सीखने को मिलीं। दोनों दिग्गज सितारों ने क्रमशः 7 मई और 12 मई को खेल के सबसे लंबे प्रारूप से संन्यास की घोषणा कर दी थी। गिल ने कहा कि जब मैं बच्चा था, तो मैं हमेशा भारतीय क्रिकेट के महान खिलाड़ियों और दिग्गजों से प्रेरित रहता था और मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि मुझे उनमें से कई के साथ खेलने का मौका मिला। चाहे विराट भाई हों या रोहित भाई, दोनों की शैली बहुत अलग थी, लेकिन दोनों को एक ही लक्ष्य की ओर काम करते देखना बहुत प्रेरणादायक था।

लैंडो नॉरिस ने जीता मोनाको ग्रां प्री, पियास्त्री से वर्ल्ड चैंपियनशिप की रेस में केवल 3 अंक पीछे

एजेंसी

मोनाको। मैकलेरन के ड्राइवर लैंडो नॉरिस ने पोल पोजिशन से शुरुआत करते हुए अपने करियर की यादगार जीत दर्ज की। उन्होंने मोनाको ग्रां प्री में पहला स्थान हासिल कर न केवल इस प्रतिष्ठित रेस में अपना सपना पूरा किया, बल्कि अपने ही टीम साथी ऑस्कर पियास्त्री की फॉर्मूला वन वर्ल्ड चैंपियनशिप लीड को महज 3 अंकों तक सीमित कर दिया। रेस में फेरारी के चार्ल्स लेक्लर दूसरे स्थान पर रहे, जबकि पियास्त्री तीसरे और रेड बुल के मैक्स वेरस्टैपेन चौथे स्थान पर रहे। खास बात यह रही कि टॉप चार ड्राइवरों ने उसी क्रम में रेस पूरी की, जिस क्रम में उन्होंने शुरुआत की थी।

'बचपन का सपना पूरा हुआ' - नॉरिस

नॉरिस ने जीत के बाद कहा, 'यह वही है जिसका मैंने बचपन में सपना देखा था। आज मैंने उसे सच कर दिखाया।' मोनाको में यह उनकी पहली जीत रही और मैकलेरन के लिए 2008 के बाद पहली बार किसी ड्राइवर ने इस ट्रैक पर जीत दर्ज की है। रेस के दौरान दो अनिवार्य पिट स्टॉप्स का नया प्रयोग किया गया, लेकिन यह रणनीति ओवरटेक के लिहाज से कोई बड़ा बदलाव नहीं ला सकी। अधिकतर ड्राइवर सिर्फ मौके का इंतजार करते रहे। वेरस्टैपेन ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा, 'बहुत रोमांचक रेस थी। हर लैप पर मैं सीट के किनारे बैठा था। शायद अगले साल चार पिट स्टॉप हों। मैं आज भी चार स्टॉप करके Py पर ही आता।' नॉरिस ने आखिरी सेक्शन में खुद को नियंत्रण में रखा, जहां लेक्लर उनके पीछे दबाव बना रहे थे और वेरस्टैपेन

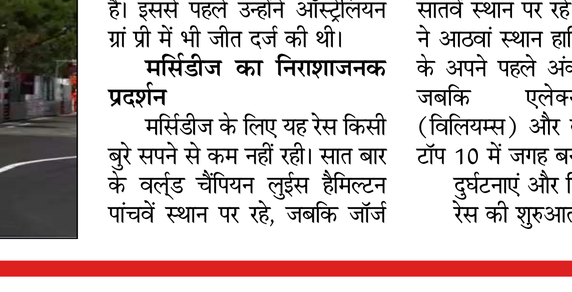

आगे की रणनीति को लेकर प्रयोग कर रहे थे। नॉरिस ने रेस में चार कारों को छोड़कर सभी को लैप कर दिया। यह सीजन की नॉरिस की दूसरी जीत है। इससे पहले उन्होंने ऑस्ट्रेलियन ग्रां प्री में भी जीत दर्ज की थी।

मर्सिडीज का निराशाजनक प्रदर्शन

मर्सिडीज के लिए यह रेस किसी बुरे सपने से कम नहीं रही। सात बार के वर्ल्ड चैंपियन लुईस हैमिल्टन पांचवें स्थान पर रहे, जबकि जॉर्ज रसेल को ड्राइव थ्रू पेनल्टी मिली और वह 11वें स्थान पर रहे।

रेसिंग बुल्स के इसाक हदजर छठे और हास के एस्टेबन ओकॉन सातवें स्थान पर रहे। लियाम लॉसन ने आठवां स्थान हासिल कर सीजन के अपने पहले अंक अर्जित किए, जबकि एलेक्स एल्बोन (विलियम्स) और कार्लोस सैंज ने टॉप 10 में जगह बनाई।

दुर्घटनाएं और रिटायरमेंट

रेस की शुरुआत में ही वर्चुअल सेफ्टी कार तैनात करनी पड़ी जब साओबर के गैब्रियल बोर्तोलेटो दीवार से टकरा गए। अल्पाइन के पियरे गैस्ली पहले रिटायर हुए, जब वह युकी त्सुनोदा की कार से टकरा गए। बाद में एस्टन मार्टिन के फर्नांडो अलोंसो भी अपनी धुंआ उड़ाती कार को लेकर बाहर हो गए। अब यूरोपियन ट्रिपल हेडर की अगली रेस अगले सप्ताह बार्सिलोना में आयोजित होगी, जहां टीमें नई रणनीति और उम्मीदों के साथ उतरेंगी।

27 करोड़ बार देखा गया

प्रियंका चोपड़ा

का ये गाना, एक्ट्रेस ने खुद दी है

बॉलीवुड से लेकर हॉलीवुड तक में अपनी एक्टिंग का लोहा मनवा चुकीं मशहूर अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा के पास एक्टिंग के अलावा सिंगिंग का टैलेंट भी है. प्रियंका चोपड़ा कुछ एक गाने भी गा चुकी हैं. उनके द्वारा गाया एक गाना तो यूट्यूब पर 27 करोड़ बार देखा गया है. इस गाने में उनका साथ मशहूर इंटरनेशनल सिंगर पिटबुल ने दिया था. आइए आपको बताते हैं कि प्रियंका का ये गाना कौन सा है और ये कब रिलीज किया गया था.

2013 में आया था प्रियंका का 'एक्जॉटिक'

प्रियंका चोपड़ा द्वारा गाया गया 'एक्जॉटिक' दूसरा गाना था. इसमें हिंदी लिरिक्स को एक्ट्रेस ने ही आवाज दी थी. ये गाना साल 2013 में यूट्यूब पर 'प्रियंका चोपड़ा वेवो' नाम के

यूट्यूब चैनल से रिलीज किया गया था. इसके जरिए प्रियंका इंटरनेशनल पहचान बनाने में कामयाब हुई थीं. आते ही ये सॉन्ग यूट्यूब पर छा गया था.

27 करोड़ से ज्यादा बार देखा गया

प्रियंका ने इसे साल 2013 में मुंबई में लॉन्च किया था. इसमें उनका बिकिनी अवतार फैंस को काफी पसंद आया था. वहीं एक्ट्रेस ने पिटबुल के साथ अपने ग्लैमर अंदाज से भी तमाम फैंस का ध्यान खींच लिया था. पिटबुल और प्रियंका ने एक्जॉटिक को मियामी की खूबसूरत लोकेशन पर शूट किया था. जिसमें प्रियंका देसी तड़का लगाते हुए भी दिखी थीं. इसमें पिटबुल का नाम जुड़ने से इसे इंटरनेशल लेवल पर भी गजब की लोकप्रियता मिली थी. अब तक इस सॉन्ग को यूट्यूब पर 270 मिलियन (27 करोड़) व्यूज मिल चुके हैं.

1000 करोड़ी फिल्म में नजर आएंगी प्रियंका

प्रियंका ने साल 2018 में अमेरिका के मशहूर सिंगर निक जोनस से शादी कर ली थी. इसके बाद वो पति के साथ अमेरिका में ही शिफ्ट हो गईं. शादी करने और भारत छोड़ने के बाद प्रियंका इंडियन फिल्म इंडस्ट्री में काम करती हुई नजर नहीं आईं. हालांकि अब वो साउथ के मशहूर डायरेक्टर एसएस राजामौली और साउथ सुपरस्टार महेश बाबू की फिल्म 'स्स्स्स29' में नजर आने वाली हैं. कुछ दिनों पहले ही एक्ट्रेस इस पिक्चर की शूटिंग के लिए इंडिया आई थीं और फिर वापस लौट गई थीं. ये साउथ सिनेमा ही नहीं बल्कि भारत की सबसे महंगी फिल्म साबित होगी. इसका बजट 1000 करोड़ रूपये बताया जा रहा है.

रणबीर-दीपिका की फिल्म से जब कटा कटरीना का पत्ता, आखिरी वक्त में किया गया बाहर

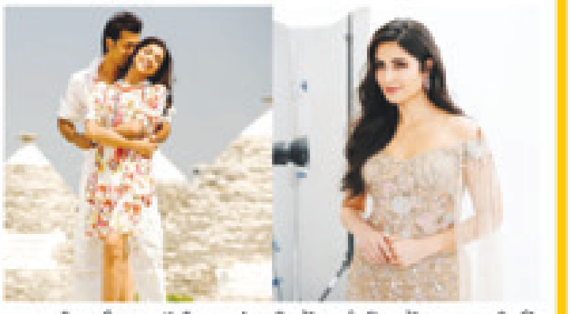

कटरीना कैफ बॉलीवुड इंडस्ट्री में कई फिल्में कर चुकी हैं. शुरुआत के फिल्मों से ही एक्ट्रेस ने अपनी छाप लोगों पर छोड़ दी थी. आज उनका नाम टॉप एक्ट्रेसेस में शामिल हैं, हालांकि एक्ट्रेस ने हाल ही में खुलासा किया है कि रणबीर कपूर और दीपिका की एक फिल्म में से उनका पूरा किरदार ही हटा दिया गया था. कटरीना ने बताया कि वो फिल्म में चौथी लड़की का किरदार निभाने वाली थीं, लेकिन बाद में उन्हें बताया गया कि वो फिल्म का हिस्सा नहीं हैं.

कटरीना ने इंडस्ट्री में एक आउटसाइडर के तौर पर अपनी शुरुआत की थी. एक्ट्रेस ने हाल ही में एक इंटरव्यू में बताया कि रणबीर कपूर-दीपिका पादुकोण की फिल्म बचना ए हसीनों में उनका भी रोल था. एक्ट्रेस ने बताया कि जिस तरह रणबीर के अपोजिट 3 लड़कियां दिखाई गई हैं, वहीं उसमें से चौथी लड़की का किरदार मेरा था. इस बैनर के तले मुझे पहली फिल्म मिलने वाली थी, जिसके लिए मैं काफी एक्साइटेड थी.

2008 में आई थी फिल्म

हालांकि , बाद में मुझे बताया गया कि फिल्म में उनके किरदार की वजह से स्क्रिप्ट बड़ी हो रही है, जिसकी वजह से वो रोल काटा जा रहा है. साथ ही एक्ट्रेस ने बताया कि ये फिल्म 2008 में आई थी, उस वक्त फिल्म सिंह इज किंग रिलीज हुई थी, जो कि काफी बड़ी हिट साबित हुई थी. हालांकि, बचना ए हसीनों के वक्त दीपिका और रणबीर से ज्यादा फिल्मों में कटरीना नजर आ चुकी थी. वो पार्टनर, मैंने प्यार क्यों किया जैसी फिल्मों में शामिल थीं.

लोगों ने किया था डिमोटिवेट

एक्ट्रेस ने बातचीत के दौरान ये भी बताया था कि कुछ लोगों ने उन्हें कहा था कि वो बॉलीवुड में सक्सेस नहीं हो पाएंगी. लेकिन, अभी की बात करें, तो वो फिल्मी दुनिया का बड़ा नाम बन चुकी हैं. आखिरी बार एक्ट्रेस फिल्म मैरी क्रिसमस में नजर आई थीं, जो कि साल 2024 में रिलीज हुई थी. वहीं शुरुआत की बात करें, तो उन्होंने साल 2003 में फिल्म बूम से अपना डेब्यू किया था, फिर धीरे-धीरे करते वो टॉप एक्ट्रेस की कैटेगरी में आ गई.

सारा मुद्दा सुलझ जाएगा... अक्षय कुमार की कंपनी ने परेश रावल पर ठोका करोड़ों का हर्जाना, तो बाबू राव ने दे दिया ऐसा जवाब

प्रियदर्शन की अपकमिंग फिल्म हेरा फेरी को लेकर कुछ न कुछ खबर आ ही रही है. फिल्म से बाबू राव यानी परेश रावल के निकलने के बाद से फिल्म के मेकर्स के साथ ही साथ फैंस में भी काफी निराशा है. हालांकि, फिल्म से एक्जिट करने के बाद अक्षय कुमार ने एक्टर पर लीगल एक्शन लिया था और फिल्म के नुकसान के लिए हर्जाने की मांग की थी. हालांकि, इसी मामले में हाल ही में परेश रावल ने अपने सोशल मीडिया पर अपडेट शेयर किया है.साल 2000 में हेरा फेरी का पहला पार्ट आया था, जिसके बाद फिल्म की तिकड़ी राजू, बाबू राव और श्याम काफी ज्यादा फेमस हो गए थे. अब इनमें से परेश रावल ने अपने किरदार को छोड़ दिया है. इस खबर को सुनने के बाद से कई लोगों का ये कहना है कि फिल्म ही न बनाई जाए. हालांकि, फिल्म से अपना नाम वापस लेने के बाद से अक्षय कुमार ने हुए नुकसान के लिए परेश रावल से 25 करोड़ के हर्जाने की मांग की थी. जिसके बाद से अब एक्टर के वकील ने टीम को इस मामले का जवाब भेजा है.

सारे मुद्दे सही हो जाएंगे

परेश रावल ने इस बात की जानकारी देते हुए अपने एक्स अकाउंट पर लिखा है, मेरे वकील अमीत नाइक ने मेरे टर्मिनेशन और एग्जिट को लेकर जवाब भेजा है. एक बार जब वो मेरा जवाब पढ़ लेंगे तो सारे मुद्दे सही हो जाएंगे. बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट की माने, तो हाल ही में परेश रावल ने फिल्म की साइनिंग अमाउंट वापस कर दी है. हाल ही में इस मामले में सुनील शेट्टी का भी रिएक्शन सामने आया है, जिसमें उन्होंने बताया है कि इस बारे में जानने के बाद उन्हें झटका लगा है.

डायरेक्टर ने बताया कुछ और

हेरा फेरी 3 को अक्षय कुमार के प्रोडक्शन हाउस के बैनर तले बनाया जा रहा है. फिल्म के छोड़ने को लेकर परेश रावल ने बताया था कि इसमें क्रिएटिव डिफरेंस की बात नहीं है और न ही डायरेक्टर के साथ कुछ है एक्टर ने कहा कि डायरेक्टर ने उन्हें फिल्म न छोड़ने के लिए काफी समझाया भी था. हालांकि, जब इस मामले में फिल्म के डायरेक्टर प्रियदर्शन से बात किया गया, तो उन्होंने बताया कि उन्हें इस बारे में कुछ भी पता नहीं था.

कॉपी कैट है...

मल्लिका शेरावत

के 8 साल पुराने लुक से आलिया का Cannes लुक हुआ मैच, तो लोगों ने सुनाई खरी-खोटी

फ्रांस में हो रहे कान फिल्म फेस्टिवल में आलिया भट्ट ने डेब्यू किया है. रेड कार्पेट पर एक्ट्रेस का दो लुक सामने आया है, जिसे लोग काफी पसंद कर रहे हैं. हालांकि, एक्ट्रेस का पहला लुक सोशल मीडिया पर काफी ज्यादा सर्कुलेट

हो रहा है, जिसमें उन्होंने फ्लोरल गाउन पहना हुआ है. दरअसल, आलिया का ये कान लुक लोगों को साल 8 साल पुराने कान फिल्म फेस्टिवल की याद दिला रहा है.कान फिल्म फेस्टिवल में आलिया ने ऑफ शोल्डर गाउन पहना हुआ था, जिसमें फूलों की कढ़ाई की गई थी. हालांकि, उनकी दूसरी ड्रेस ने लोगों का ध्यान ज्यादा खींचा है. वहीं उनके फ्लोरल गाउन की बात की जाए, तो लोग उसको मल्लिका शेरावत के कान फिल्म फेस्टिवल लुक से कर रहे हैं.

दरअसल, साल 2017 में मल्लिका ने रेड कार्पेट पर इसी तरह के गाउन में जलवा बिखेरा था. एक्ट्रेस के उस वॉक को अभी तक लोग याद रखे हुए हैं.

2017 के लुक से कंपेयर

मल्लिका ने 8 साल पहले इसी तरह का ऑफ शोल्डर गाउन कैरी किया था, जिसके साथ उन्होंने अपने लुक को काफी सिंपल रखा था. कान फिल्म फेस्टिवल 2017 का वॉक मल्लिका का सबसे फेमस वॉक रहा है. उनके गाउन पर लोगों की निगाहें टिक गई थीं, साथ ही साथ गाउन पर उभरे हुए फूल ड्रेस की शोभा में चार चांद लगा रहे थे. मल्लिका के उस लुक को लोग अब आलिया के लुक से कंपेयर कर रहे हैं, जो कि लगभग एक जैसा ही है.

कॉपी को लेकर किया ट्रोल

सोशल मीडिया पर दोनों ही एक्ट्रेस की तस्वीर साथ में वायरल हो रही है. इस दौरान लोगों ने कमेंट सेक्शन में दोनों के लुक को कंपेयर करना शुरू कर दिया है.

जिसमें ज्यादातर लोगों ने मल्लिका के लुक को ज्यादा बेहतर बताया है, वहीं कई लोग आलिया को ड्रेस कॉपी करने के लिए ट्रोल कर रहे हैं. एक यूजर ने कमेंट करते हुए आलिया को कॉपी कैट तक कह दिया है. वहीं दूसरे यूजर ने लिखा है कि मल्लिका ने इस लुक को ज्यादा बेहतर तरीके से कैरी किया हुआ है.